हिंदी

व्याकरण एवं रचना

8

With the blessings of :
Our Parents

हिंदी
व्याकरण एवं रचना
8

Copyright@Publishers

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced or transmitted in any form or by any means without prior permission in written. Any person who does any unauthorised act in relation to this publication may be liable to criminal prosecution and civil claims for damages.

Limits of liability and Disclaimer of Warranty:

The Author, Editor, Designer and the Publisher of this book have tried their best to ensure that all the texts are correct in all respect. However, the author and the publisher does not take any responsibility of any mistake, if happened. The correction of mistakes, if found will duly be done in the next edition.

MADE IN INDIA

Support Recycle

Save a Tree
Save the Earth

One Ton of this Paper Saves 17 trees

Max Retail Price: On Back Cover

Edited by:
Editone International Pvt. Ltd.

Based on:

- National Education Policy 2020
- NCF 2022
- Activity Based Format
- Innovative Approach
- Learning with fun
- Eco Friendly Paper

आमुख

भाषा को समझने हेतु व्याकरण एक मजबूत कड़ी है। बिना व्याकरण को समझे हम भाषा को सरल एवं स्पष्ट रूप से नहीं समझ सकते। इसी को ध्यान में रखते हुए 'हिंदी व्याकरण एवं रचना' (कक्षा 1 से 8) तैयार की गई है।

इस शृंखला में नई शिक्षा नीति 2020 के प्रमुख मापदंडों का बड़ी सटीकता से पालन किया गया है। नवीन पाठ्यक्रम पर आधारित इस पुस्तक में व्याकरण की प्रमुख इकाइयों को बड़े ही सरल, सहज एवं रचनात्मक तरीके से प्रस्तुत किया गया है। इस शृंखला में व्याकरण को चित्रों के माध्यम से बड़े ही सहज भाव से तैयार किया गया है ताकि बच्चों को व्याकरण की जटिलता का तनिक भी आभास न हो।

पाठ के प्रस्तुतीकरण में शामिल 'पढ़िए और समझिए' के द्वारा बच्चों को चित्रों के माध्यम से संपूर्ण अध्याय को सरल एवं सहज रूप से समझाने का प्रयास किया गया है ताकि बच्चों का पाठ से जुड़ाव आसानी से हो सके। पाठ में शामिल 'अध्यापन संकेत' हमारा एक छोटा-सा प्रयत्न है जिसके माध्यम से शिक्षक/शिक्षिका बच्चों के सर्वांगीण विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सकें।

पाठ में शामिल 'आइए, पुनरावृति करें' के माध्यम से सीखे गए बिंदुओं को दोहराया गया है। अभ्यास कार्य के अंतर्गत शामिल 'मौखिक' और 'लेखन कार्य' के द्वारा बच्चों के श्रवण कौशल, बौद्धिक क्षमता और लेखन-शैली पर विशेष ध्यान दिया गया है। साथ ही, 'सोचें-विचारें' के द्वारा बच्चों की रचनात्मक, कार्यात्मक एवं तार्किक क्षमता को निखारने की कोशिश की गई है। 'खेल-खेल में' बच्चों की प्रतिभा को उभारने का संकल्प लिया गया है। साथ ही उनकी मानसिक योग्यता को बल प्रदान करने का प्रयत्न किया गया है। 'प्रेरणादायक मूल्य' को संपूर्ण शृंखला में शामिल करने का मूल उद्देश्य बच्चों में नैतिक गुणों को प्रभावी स्वरूप प्रदान करना है।

हमें पूर्ण विश्वास है कि यह शृंखला बच्चों में भाषा को रचनात्मक स्वरूप प्रदान करेगी और उनके बौद्धिक व व्यवहार रूपी अधिगम क्षमता को बढ़ाएगी। आपके सुझावों की सदैव प्रतीक्षा रहेगी। शुभकामनाओं सहित.....

–प्रकाशक

पाठ्यपुस्तक का परिचय

'पढ़िए और समझिए' के माध्यम से पाठ में अंतर्निहित बातों को सरल तरीके से चित्रों के माध्यम से समझाने का प्रयास किया गया है।

'आइए, पुनरावृति करें' के द्वारा पाठ में सम्मिलित प्रमुख बातों, विचारों तथा तथ्यों को पुनः दोहराया गया है ताकि विद्यार्थी पाठ में सीखे गए बातों को कंठस्थ कर सकें।

'अध्यापन संकेत' एक सम्मिलित प्रयास है जिससे शिक्षक, लेखक के द्वारा दी गई प्रमुख सूचनाओं को आधार बनाकर कक्षा में पठन-पाठन को विद्यार्थियों के लिए बेहतर बना सकें ताकि स्तरानुकूल पढ़ाई का एक मंच तैयार हो सके।

'अभ्यास कार्य' के अंतर्गत शामिल प्रश्नों के महत्वपूर्ण समुच्चय के द्वारा विद्यार्थियों में महत्वपूर्ण कौशलों के साथ-साथ उनकी रचनात्मकता को भी प्रभावी रूप देने का प्रयास किया गया है।

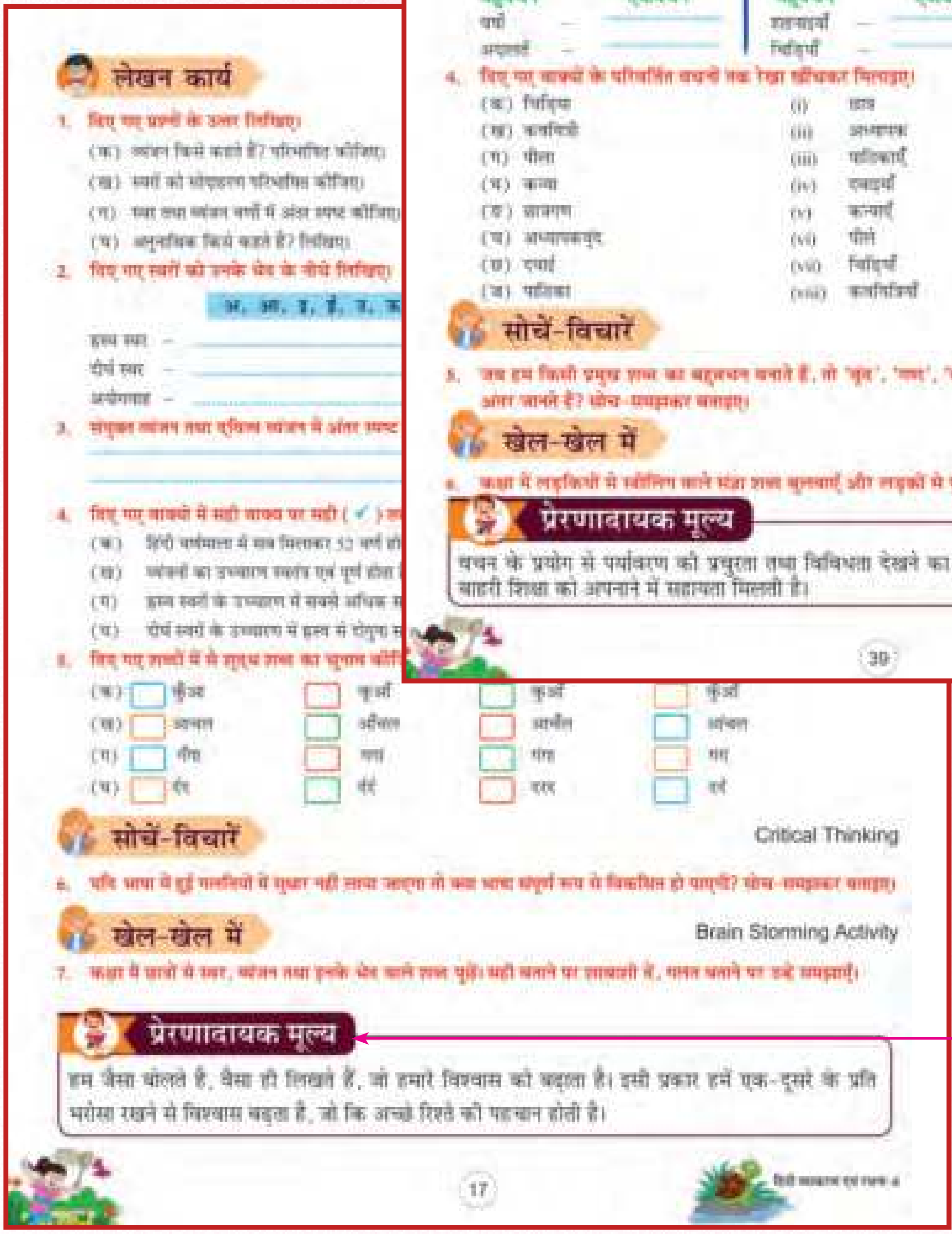

'प्रेरणादायक मूल्य' के द्वारा बच्चों में नैतिक गुणों के प्रसार का प्रयास किया गया है ताकि बच्चे उन मूल्यों को अपनाकर बेहतर भविष्य का निर्माण कर सकें।

अनुक्रमणिका

क्रम. सं.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	भाषा, बोली, लिपि और व्याकरण (Language, Dialect, Script and Grammar)	7
2.	वर्ण-विचार (Phonology)	12
3.	शब्द-विचार (Morphology)	18
4.	संज्ञा (Noun)	25
5.	लिंग (Gender)	30
6.	वचन (Number)	36
7.	सर्वनाम (Pronoun)	40
8.	विशेषण (Adjective)	46
9.	क्रिया (Verb)	55
10.	क्रियाविशेषण (Adverb)	61
11.	काल (Tense)	67
12.	संधि (Joining)	72
13.	समास (Compound)	81
14.	कारक (Case)	87
15.	उपसर्ग (Prefix)	92
16.	प्रत्यय (Suffix)	98
17.	शब्द-भंडार (Word Vocabulary)	104
18.	मुहावरे तथा लोकोक्तियाँ (Idioms and Proverbs)	113
19.	वाच्य (Voice)	120
20.	पद-परिचय (Parsing)	125
21.	पदबंध तथा वाक्य-विचार (Phrases and Sentence)	129
22.	विराम-चिह्न (Punctuation Marks)	136
23.	अलंकार (Figure of Speech)	141
24.	सार-लेखन (Precis Writing)	146
	स्वमूल्यांकन पत्र-1	149
	स्वमूल्यांकन पत्र-2	151

अध्याय 1

भाषा, बोली, लिपि और व्याकरण
(Language, Dialect, Script and Grammar)

पढ़िए और समझिए

बच्चो! भाषा के माध्यम से हम अपनी बातों को दूसरों तक पहुँचाते हैं तथा दूसरों की बातों को स्वयं समझते हैं लेकिन जब भाषा नहीं थी तब व्यक्ति पक्षियों तथा जानवरों की तरह आवाज़ें निकालकर अपनी बातें दूसरों तक पहुँचाते थे।

वर्तमान समय में भी ऐसी आवाज़ों और संकेतों का प्रयोग किया जाता है; जैसे– अंपायर या रेफरी खेल में, शिक्षिका द्वारा बच्चों को चुप रहने का संकेत करना, सेना में किसी अभियान के समय साथी सैनिकों से बातचीत करना आदि।

शिक्षिका का बच्चों को चुप रहने का संकेत

रेफरी द्वारा आउट होने का संकेत

धीरे-धीरे भारतीय समाज में लोग कागज़ के विकास के पूर्व अच्छी-अच्छी बातों को, कहानियों को, सूक्तियों को ताम्रपत्र पर, भोजपत्र पर, ताड़पत्र पर पांडुलिपियों के रूप में लिखकर सुरक्षित रखने लगे।

जब कागज़ का विकास हुआ, तो लोग कई प्रकार के पेड़-पौधों की टहनियों से, मोर पंख से कलम बनाकर स्याही से कागज़ पर लिखकर अपनी या दूसरों की बातों को स्थायित्व प्रदान करने लगे।

भोजपत्र पर पांडुलिपि

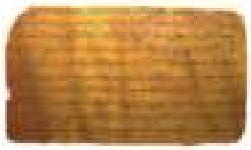

ताम्रपत्र पर पांडुलिपि

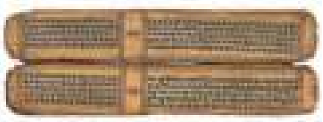

ताड़पत्र पर पांडुलिपि

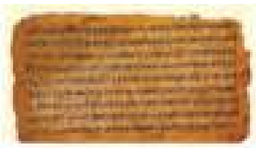

कागज पर हाथ से लिखी गई पांडुलिपि

वर्तमान में कंप्यूटरों के माध्यम से हार्डडिस्क, वेब पेज, मोबाइल फोन की मेमोरी आदि में लिपियों को संभालकर रखा जाता है।

इस प्रकार हम भाषा के बारे में कहेंगे कि –

भाषा वह माध्यम है, जिसके द्वारा हम अपने मन के भावों और विचारों को दूसरों के सामने प्रकट कर सकते हैं और दूसरों के मन के भावों और विचारों को स्वयं समझ सकते हैं।

भाषा के अंग : भाषा के मूलत: दो अंग बताए गए हैं। उन अंगों के भी कुछ भाग होते हैं, जिनका विस्तारपूर्वक वर्णन नीचे किया गया है–

भाषा

- **मौखिक**
  - **सुनना**
  - **बोलना**
- **लिखित**
  - **पढ़ना**
  - **लिखना**

बोलना, लिखना → बोलकर तथा लिखकर दूसरों को बताते हैं।

सुनना, पढ़ना → सुनकर तथा पढ़कर स्वयं समझते हैं।

- **मौखिक भाषा–** ऐसी भाषा जिसे हम स्वयं सुनकर समझते हैं तथा दूसरों को बोलकर अपनी बात बताते हैं; जैसे– शिक्षक द्वारा पढ़ाना, नेताजी द्वारा भाषण देना, पंडित जी द्वारा कथा कहना आदि।
- **लिखित भाषा–** ऐसी भाषा जिसे हम लेखन के माध्यम से पढ़कर तथा लिखकर समझते हैं; जैसे- अखबार, पुस्तक, साइन बोर्ड से पढ़कर स्वयं समझना तथा लेख, श्यामपट्ट, कॉपी आदि पर लिखकर दूसरों को समझाना।

हिंदी भाषा: एक दृष्टि

हिंदी भाषा का विकास संस्कृत भाषा के अपभ्रंश शब्दों से, पालि या प्राकृत भाषा के अपभ्रंश शब्दों से मिलकर हुआ है। इसे संवैधानिक स्वरूप आजादी के बाद 14 सितंबर, 1949 को देकर इसे राजभाषा घोषित किया गया।

अब तक बाईस भाषाओं को संवैधानिक मान्यता मिल चुकी है। जो भारतीय संविधान में अनुच्छेद 343 से 351 तक में संकलित हैं–

असमिया, बांग्ला, कश्मीरी, गुजराती, कन्नड़, मलयालम, मणिपुरी, कोंकणी, मराठी, नेपाली, उड़िया, संस्कृत, उर्दू, नेपाली,तमिल, तेलुगू, सिंधी, बोडो, डोगरी, हिंदी, मैथिली, संथाली।

इस समय हिंदी भाषा खाड़ी देश, सूरीनाम और वेस्टइंडीज़ में बोली जाती है। इसके अलावा यह पाकिस्तान, नेपाल, कंबोडिया, आस्ट्रेलिया, अमेरिका, पूर्वी एशिया के कई देशों में भी बोली जाती है। इतना ही नहीं, आस्ट्रेलिया, अमेरिका, जर्मनी, यूरोप के अनेक देशों के साथ-साथ खाड़ी देशों में हिंदी भाषा का पठन-पाठन भी किया जाता है। प्रत्येक 14 सितंबर को भारत में हिंदी दिवस मनाया जाता है। प्रत्येक 10 जनवरी को अंतर्राष्ट्रीय हिंदी दिवस मनाया जाता है। पूर्व प्रधानमंत्री श्री डॉ. मनमोहन सिंह द्वारा वर्ष 2006 में अंतर्राष्ट्रीय हिंदी दिवस की घोषणा एवं शुरुआत की गई।

वैसे प्रथम हिंदी दिवस का आयोजन 10 जनवरी, 1975 को नागपुर में किया गया था।

उपभाषा तथा बोली

उपभाषा– एक सीमित क्षेत्र में बोली जाने वाली भाषा को उपभाषा कहा जाता है। उपभाषा में कुछ क्षेत्रीय रचनाएँ जैसे– लघुकथा, कहानी, कविता आदि लिखी जाती हैं। उदाहरण स्वरूप– ब्रजभाषा में–सूर साहित्य; अवधी भाषा में रामायण, बजरंग बाण आदि तथा बिहार में 'अंगिका' भी उपभाषा है। इन सभी उपभाषाओं की मुख्य भाषा हिंदी है।

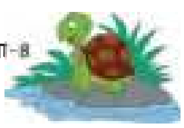

बोली– भाषा का ऐसा स्वरूप जो छोटे क्षेत्र में बोलने के लिए प्रयोग में लाई जाती है, उसे बोली कहते हैं। इसमें किसी भी साहित्य की रचना नहीं की जाती है। सामान्य लोग इसे केवल बोलते और समझते हैं। इसे जनसामान्य की भाषा भी कहा जाता है।

हिंदी और इसकी बोलियाँ एवं उपभाषा

पश्चिमी हिंदी – ब्रजभाषा (उपबोली), बुंदेली (आल्हा-ऊदल का वर्णन), कन्नौजी, बाँगरू (हरियाणवी बोली), खड़ी बोली आदि।

पहाड़ी हिंदी – गढ़वाली, कुमाऊँनी, कुल्लुई (मंडियाली)

पूर्वी हिंदी – छत्तीसगढ़ी, बघेली, अवधी (उपबोली)

बिहारी हिंदी – मगही, भोजपुरी, अंगिका

लिपि

भाषा की मौखिक ध्वनियों को जिन चिह्नों के माध्यम से लिखते हैं, उसे लिपि कहते हैं।

विश्व की सभी भाषाओं की लिपियाँ हैं, कुछ समान हैं, तो कुछ बिल्कुल अलग होती हैं।

भाषाएँ	लिपियाँ
हिंदी / संस्कृत	देवनागरी
गुजराती	देवनागरी
मराठी	देवनागरी
उर्दू	नस्तलीख़, फ़ारसी
डच	रोमन लिपि
जापानी	कानजी (चीनी मानचित्र), जापानी
पंजाबी	गुरुमुखी
मलयालम	मलयालम
अंग्रेज़ी	रोमन
चीनी	चीनी (भावचित्र)
स्पेनिश	स्पेनिश, लैटिन

व्याकरण

हिंदी भाषा को शुद्ध रूप से लिखने तथा बोलने संबंधी नियमों का बोध कराने वाले शास्त्र को व्याकरण शास्त्र कहते हैं।

अध्यापन संकेत शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को भाषा तथा उसके भेद सहित, लिपि संबंधी जानकारी प्रदान करें एवं व्याकरण शास्त्र के महत्व को भी विस्तारपूर्वक समझाएँ।

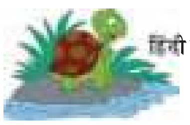

शुद्ध और अशुद्ध वाक्य प्रयोग के बारे में हम इस प्रकार समझ सकते हैं–

हम खाता हूँ।	(अशुद्ध)
मैं खाता हूँ।	(शुद्ध)
जाता मैं घर हूँ।	(अशुद्ध)
मैं घर जाता हूँ।	(शुद्ध)
राजभाषा हिंदी भारत की है।	(अशुद्ध)
भारत की राजभाषा हिंदी है।	(शुद्ध)

हिंदी साहित्य

(क) गद्य– इस विधा में लेख, कहानी, नाटक, आलेख, निबंध, आत्मकथा, यात्रा वर्णन, कथा आदि शामिल हैं।

(ख) पद्य– इस विधा में दोहा, चौपाई, कविता, सवैया, छंद आदि शामिल हैं।

आइए, पुनरावृति करें

- हिंदी भाषा का प्रारंभिक स्वरूप सांकेतिक था।
- भाषा में दो प्रमुख तत्व शामिल हैं– मौखिक तथा लिखित।
- **मौखिक** रूप में– सुनना–बोलना तथा **लिखित** रूप में– पढ़ना–लिखना शामिल है।
- हिंदी हमारी राजभाषा है।
- प्रत्येक 14 सितंबर को देश में हिंदी दिवस मनाया जाता है।
- प्रत्येक 10 जनवरी को अंतर्राष्ट्रीय हिंदी दिवस मनाया जाता है।
- भाषा को लिखने का ढंग लिपि कहलाता है।
- व्याकरण से भाषा शुद्ध रूप में बोली और लिखी जाती है।

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य

Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) उपभाषा किसे कहते हैं?

(ख) लिपि से आप क्या समझते हैं?

(ग) बिहार में बोली जाने वाली कुछ भाषाओं के नाम बताइए।

लेखन कार्य

Writing Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) भाषा की सोदाहरण व्याख्या कीजिए।

(ख) हिंदी दिवस को किस दिन और क्यों मनाया जाता है?

(ग) अंतर्राष्ट्रीय हिंदी दिवस की शुरुआत कब और किस प्रकार की गई?

(घ) भाषा और बोली में क्या अंतर है?

2. दी गई भाषाओं को उनकी लिपि के साथ लिखिए।

जापानी	–	....	बंगाली	–	....
डच	–	....	मलयालम	–	....
चीनी	–	....	गुज़राती	–	....
अंग्रेज़ी	–	....	पंजाबी	–	....

3. वाक्यों को पढ़कर उनके आगे सही (✓) या गलत (×) के निशान लगाइए।

(क)	सिनेमा देखते समय हम किस भाषा का प्रयोग करते हैं?	☐ मौखिक	☐ लिखित	☐ कोई नहीं
(ख)	क्रिकेट के दौरान अंपायर कौन–सी भाषा का प्रयोग करता है?	☐ लिखित	☐ मौखिक	☐ सांकेतिक
(ग)	चित्र के बारे में लिखना भाषा का कौन–सा रूप है?	☐ पढ़ना	☐ लिखना	☐ बोलकर
(घ)	हम दूसरों को अपनी बात कैसे बताते हैं?	☐ बोलकर	☐ लिखकर	☐ सुनकर
(ङ)	सरिता पूजा के समय मंत्रोच्चारण करती है।	☐ लिखित	☐ मौखिक	☐ कोई नहीं

4. निम्नलिखित प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनिए।

(क) भाषा को लिखने के तरीके को क्या कहा जाता है?

☐ मौखिक ☐ लिखित ☐ लिपि ☐ श्रवण

(ख) व्याकरण का कार्य है?

☐ भाषा को बताना ☐ भाषा को ठीक करना ☐ गलती में सुधार करना ☐ कुछ नहीं

(ग) स्पैनिश भाषा की लिपि कौन–सी है?

☐ डच ☐ लैटिन ☐ रोमन ☐ मंदारिन

(घ) भाषा के कितने रूप होते हैं?

☐ दो ☐ चार ☐ तीन ☐ पाँच

सोचें–विचारें

Critical Thinking

5. व्याकरण शास्त्र तथा साहित्य शास्त्र एक–दूसरे से किस प्रकार परस्पर भिन्नता रखते हैं? सोच–समझकर बताइए।

खेल–खेल में

Brain Storming Activity

6. भारतीय संविधान में मान्यता प्राप्त भाषाओं की सूची तैयार करके उनकी लिपियों का उल्लेख कीजिए। तथा पता कीजिए कि भारत के कितने राज्यों में हिंदी भाषा बोली जाती है।

भाषा	लिपि	भाषा	लिपि
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....

प्रेरणादायक मूल्य

जिस प्रकार हिंदी के उच्चारण में तथा लेखन में एकरूपता होती है, ठीक वैसे ही हमारे मन, कर्म तथा विचारों में एकरूपता होनी चाहिए।

वर्ण–विचार (Phonology)

पढ़िए और समझिए

बच्चो! प्रत्येक उच्चरित ध्वनि के लिए एक विशेष प्रकार के चिह्न की आवश्यकता होती है। ये लिखित चिह्न ही वर्ण कहलाते हैं। इन्हीं उच्चरित ध्वनियों (वर्णों) को लिपिबद्ध किया जाता है; जैसे– यदि हम 'विद्यालय' बोलें तो इसमें जो ध्वनियाँ या वर्ण सम्मिलित हैं, वे हैं–

प्रकाश = प्+र+अ+क्+आ+श्+अ = **7** वर्णों के मिलने से 'विद्यालय' शब्द बना है। अतः हम 'वर्ण' के बारे में यह भी कह सकते हैं कि–

'वर्ण' वह मूल ध्वनि है, जिसके टुकड़े नहीं किए जा सकते हैं।

वर्णमाला

वर्णों के क्रमबद्ध समूह को वर्णमाला कहते हैं। हिंदी की वर्णमाला इस प्रकार है–

स्वर

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ
ऋ	ए	ऐ	ओ	औ	

अं, अः ← अयोगवाह

व्यंजन

क	ख	ग	घ	ङ	
च	छ	ज	झ	ञ	
ट	ठ	ड	ढ	ण	ड़, ढ़ ← अतिरिक्त व्यंजन
त	थ	द	ध	न	
प	फ	ब	भ	म	
य	र	ल	व		← अंतःस्थ व्यंजन
श	ष	स	ह		← ऊष्म व्यंजन
क्ष	त्र	ज्ञ	श्र		← संयुक्त व्यंजन

हिंदी वर्णमाला में कुल 52 वर्ण होते हैं।

आइए, इनका विस्तारपूर्वक अध्ययन करते हैं–

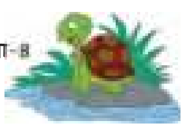

स्वर

जिन वर्णों के उच्चारण में किसी अन्य वर्ण की सहायता नहीं ली जाती है अर्थात् वे स्वतंत्र वर्ण होते हैं, उन्हें स्वर कहते हैं।

स्वरों की संख्या ग्यारह होती है– अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ।

स्वर के भेद-

स्वर के तीन भेद होते हैं– (क) ह्रस्व स्वर (ख) दीर्घ स्वर (ग) प्लुत स्वर

(क) ह्रस्व स्वर– ऐसे स्वर जिन्हें उच्चारित करते समय सबसे कम समय लगता है, उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं। इनकी संख्या चार है– अ, इ, उ, ऋ।

(ख) दीर्घ स्वर– ऐसे स्वर जिन्हें उच्चारण करते समय ह्रस्व स्वर से अधिक समय लगता है, उसे दीर्घ स्वर कहते हैं। दीर्घ स्वरों की संख्या सात होती है– आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ तथा औ।

(ग) प्लुत स्वर– क्योंकि ग्यारह स्वरों में से चार ह्रस्व तथा सात दीर्घ स्वर हैं। प्लुत स्वर केवल उच्चारण में लगने वाले समय को लेकर वर्गीकृत किए गए हैं। प्लुत स्वरों के उच्चारण में दोनों स्वरों से अधिक समय लगता है। इसे किसी को दूर से बुलाने के लिए या मंत्रोच्चारण के समय उच्चरित किया जाता है; जैसे– आओ३, ओ३म्, हे मोहन३ आदि। यहाँ जिस वर्ण पर तीन गुना समय लगता है, उसके सामने हिंदी की गिनती '३' लिख देते हैं।

व्यंजन

ऐसे वर्ण जिन्हें स्वर की सहायता से उच्चारित किया जाता है, व्यंजन कहलाते हैं; जैसे– 'काम' शब्द का उच्चारण करें तो इसमें क्+(आ)+म्+(अ) अर्थात् स्वर मिले हैं। 'क' का उच्चारण करते समय क्+(अ) स्वर मिला है।

व्यंजन के भेद-

व्यंजन के तीन भेद हैं– स्पर्श व्यंजन, अंतःस्थ व्यंजन तथा ऊष्म व्यंजन। आइए, इनका विस्तारपूर्वक अध्ययन करते हैं-

(क) स्पर्श व्यंजन : जिन व्यंजनों के उच्चारण में जिह्वा मुख के अलग-अलग स्थानों को स्पर्श करती है, स्पर्श व्यंजन कहलाते हैं। इसमें पहले पाँच वर्ग के व्यंजन आते हैं, जो इस प्रकार हैं–

(क-वर्ग)	क	ख	ग	घ	ङ
(च-वर्ग)	च	छ	ज	झ	ञ
(ट-वर्ग)	ट	ठ	ड	ढ	ण
(त-वर्ग)	त	थ	द	ध	न
(प-वर्ग)	प	फ	ब	भ	म

(ख) अंतःस्थ व्यंजन : ऐसे व्यंजन जिनके उच्चारण में जिह्वा मुख के किसी भाग को पूरी तरह से स्पर्श नहीं करती है, उन्हें अंतःस्थ व्यंजन कहते हैं। इनकी संख्या चार है– य, र, ल, व।

(ग) ऊष्म व्यंजन : ऐसे व्यंजन जिनके उच्चारण में मुँह से रगड़ खाने के पश्चात् वायु में गरमी-सी (ऊष्मा) उत्पन्न होती है, ऊष्म व्यंजन कहलाते हैं। इनकी संख्या भी चार है– श, ष, स, ह।

संयुक्त व्यंजन– ऐसे व्यंजन जिनका निर्माण एक से अधिक व्यंजनों के संयोग से होता है, उन्हें संयुक्त व्यंजन कहते हैं। इनकी संख्या भी चार होती है। ये हैं– क्ष = (क्+ष), त्र = (त्+र), ज्ञ = (ज्+ञ), श्र = (श्+र)।

अयोगवाह– अं तथा अः को 'अ' के साथ क्रमशः अनुस्वार (ं) तथा विसर्ग (ः) जोड़कर लिखा जाता है, इन्हें आयोगवाह वर्ण कहा जाता है। इसकी शुरुआत तो स्वर (अ) से होती है, किंतु बाद में अनुस्वार (अ+ङ्) तथा विसर्ग (अ+ह) यानी व्यंजन जोड़ा जाता है। इसीलिए अयोगवाह न तो स्वर की श्रेणी में आते हैं और न ही व्यंजन की श्रेणी में।

अयोगवाह के भेद -

(क) अनुस्वार (ं) : स्वरों तथा व्यंजनों की शिरोरेखा के ऊपर अनुस्वार बिंदु के रूप में लगाते हैं; जैसे– अंग, अंत, नींद, क्यों आदि।

(ख) विसर्ग (ः)– विसर्ग का चिह्न (ः) किसी भी वर्ण के दाहिने ओर दो बिंदु के रूप में लगाया जाता है तथा इसे 'अह' के रूप में उच्चारित किया जाता है; जैसे– अतः, प्रातः, नमः आदि।

अनुनासिक का प्रयोग– स्वर सानुनासिक होते हैं, इन्हें स्वर तथा व्यंजन दोनों के ऊपर चंद्रबिंदु के रूप में लगाया जाता है; जैसे–आँत, दाँत, आँख आदि। जब यह व्यंजन वर्णों पर स्वर की मात्राओं के साथ लगाया जाता है, तो यह बिंदु रूप (ं) में प्रयोग किया जाता है।

हल् चिह्न का प्रयोग– व्यंजन वर्णों के नीचे हल् चिह्न (्) का प्रयोग किया जाता है। यह तब किया जाता है, जब किसी वर्ण को अ-रहित दिखाना होता है; जैसे– भाषाविद्, शास्त्रविद्, आत्मसात् आदि। हल् चिह्न जब किसी वर्ण के अंत में लगता है, तो इसे हलंत चिह्न कहते हैं; जैसे– अर्थात्।

आगत ध्वनियाँ

ऐसी ध्वनियाँ जिन्हें विदेशी शब्दों से हिंदी भाषा में शब्दशः लिया गया है, उन्हें आगत ध्वनियाँ कहते हैं। वर्तमान में नवीन मानक वर्तनी के अनुसार तीन ध्वनियाँ आगत ध्वनियाँ हैं, जो इस प्रकार हैं–

(क) ऑ ध्वनि (ॅ, ॉ)– इस चिह्न का प्रयोग अंग्रेज़ी ध्वनियों के शुद्ध उच्चारण हेतु प्रयोग में लाया जाता है; जैसे– डॉक्टर, टॉफी, कॉफी, स्टॉप आदि।

(ख) नुक़्ते का प्रयोग (ज़) वर्ण के साथ– ऐसे शब्द जिन्हें उर्दू, फारसी, तथा अरबी भाषा से लिया जाता है, उनके सही उच्चारण के लेखन में 'ज' वर्ण के नीचे बिंदी (ज़) का प्रयोग जाता है। इसके लगाने से अर्थ में अंतर भी स्पष्ट होता है; जैसे–

सजा (सजावट) सज़ा (दंड) जरा (बुढ़ापा) ज़रा (थोड़ा-सा)

राज (शासन) राज़ (रहस्य)

(ग) नुक़्ते का प्रयोग-(फ़) वर्ण के साथ– जैसे–

ज़िंदा, राज़, फ़ीस, ग़री, ज़ब्त, ज़ोर आदि।

फन (साँप का फन), फ़न (हुनर, प्रतिभा)

वर्णों का उच्चारण स्थान

स्थान	वर्ण	नाम
कंठ	अ, आ, क, ख, ग, घ, ह	कंठ्य
तालु	इ, ई, च, छ, झ, ञ, य, श	तालव्य
दंत	त, थ, द, ध, न, ल, स, ज़	दंत्य
मूर्धा	ऋ, ट, ठ, ड, ढ, ण, र, ष	मूर्धन्य
ओष्ठ	उ, ऊ, प, फ, ब, भ, म	ओष्ठ्य

स्थान	वर्ण	नाम
दंतोष्ठ	व, फ़	दंतौष्ठ्य
नासिका	अं, ङ, ञ, ण, न, म	नासिक्य
कंठओष्ठ	ओ, औ	कंठौष्ठ्य
कंठतालु	ए, ऐ	कंठतालव्य

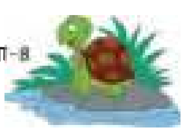

'र' वर्ण के विविध रूप

'र' वर्ण के तीन रूप होते हैं, इससे शब्दों के अर्थ और उच्चारण में भिन्नता आती है।

1. **रेफ (र्‍)–** यदि कोई 'र' वर्ण स्वररहित (र्) है और उसके बाद कोई व्यंजन स्वर सहित आता है तो 'र्' वर्ण अगले व्यंजन के ऊपर लग जाता है; जैसे–

   क् + अ + र् + म् + अ (स्वर सहित व्यंजन) = कर्म।

   स्वर रहित

   श् + अ + र् + म् + अ = शर्म

   ध् + अ् + र् + म् + अ = धर्म

2. **पदेन (्)–** जब स्वर रहित व्यंजन के बाद स्वर सहित (र) आता है, तो 'र' वर्ण अपने पूर्व के व्यंजन के पैरों में पड़ जाता है; जैसे–

   ग् + र् + आ + म् + अ = ग्राम।   प + र् + अ+ भ् + आ + त् + अ = प्रभात

3. **पदेन (ट–ड वर्ण)–** ट, ठ, ड वर्ण जब अ रहित हों और उसके बाद 'र' वर्ण अ सहित हो, तो 'र' वर्ण ट, ठ, ड वर्ण के नीचे 'र' वर्ण (‸) रूप में लग जाता है; जैसे–

   ट् + र् + अ + क = ट्रक   ड् + र् + आ + म + आ = ड्रामा।

उच्चारण के आधार पर व्यंजनों का वर्गीकरण

1. **स्पर्शी व्यंजन–** ऐसे वर्ण जिन्हें उच्चारण करते समय जीभ या ओंठ दूसरे भाग को स्पर्श करते हैं, उन्हें स्पर्शी व्यंजन कहते हैं; जैसे– क ख ग घ ङ, ट–वर्ग, त–वर्ग, प–वर्ग आदि।
2. **संघर्षी व्यंजन–** इन्हें उच्चारण करने पर वायु दो उच्चारण स्थानों के बीच से घर्षण करती हुई बाहर निकलती है। ये व्यंजन हैं– ख़, फ़, ज़, श, ष, स, ह।
3. **स्पर्श-संघर्षी व्यंजन–** ऐसे व्यंजन जिन्हें उच्चारण करने के दौरान मुख के कोई दो भाग परस्पर स्पर्श करने के बाद तुरंत अलग न होकर परस्पर संघर्ष करते हैं। ये व्यंजन हैं– च, छ, ज, झ।
4. **नासिक्य व्यंजन–** ऐसे व्यंजन जिनका उच्चारण करते समय वायु मुख और नाक दोनों से बाहर निकलती है, उन्हें नासिक्य व्यंजन कहते हैं।
   ये व्यंजन हैं– अं, ङ, ञ, ण, न, म।
5. **पार्श्विक व्यंजन–** ऐसे व्यंजन जिन्हें, उच्चारण करने के दौरान मुख से निकलने वाली वायु उच्चारण स्थानों को स्पर्श न करके उसके बगल से निकल जाती है, उसे पार्श्विक व्यंजन कहते हैं। केवल 'ल' व्यंजन इसका उदाहरण है। वायु जीभ और तालु के पास से होकर निकल जाती है।
6. **प्रकंपी व्यंजन–** ऐसे व्यंजन वर्ण जिन्हें उच्चारण करते समय मुख में उच्चारण स्थान पर कंपन होता है। 'र' व्यंजन के उच्चारण में ऐसा होता है कि जीभ और मसूड़े के पास कंपन उत्पन्न होता है।
7. **उत्क्षिप्त व्यंजन–** ऐसे व्यंजन जिन्हें उच्चारण करते समय जीह्वा उठ जाती है। इसके उदाहरण हैं– ड़, ढ़।
8. **अर्ध-स्वर व्यंजन–** इस प्रकार के व्यंजन वर्णों का उच्चारण करते समय उच्चारण स्थान वायु को रोकने के लिए थोड़ा ऊपर उठते हैं, किंतु वायु उनका स्पर्श नहीं कर पाती है। ये व्यंजन हैं– य, व।

अध्यापन संकेत शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को वर्ण, स्वर तथा व्यंजन आदि में भेद बताएँ तथा उन्हें वर्ण के विभिन्न रूपों से अवगत कराएँ।

महाप्राण– जब किसी व्यंजन को मुख से वायु प्रवाह के साथ बोलते हैं, तो वे महाप्राण व्यंजन कहलाते हैं; जैसे– ख, घ, झ और फ।

अल्पप्राण– ऐसे व्यंजन जिनका उच्चारण करने में अपेक्षाकृत कम वायु की आवश्यकता पड़ती है। ये व्यंजन हैं–

क च ट त प ग ज ड द ब न म र ल ड़।

सघोष और अघोष व्यंजन

1. **सघोष व्यंजन–** ऐसे व्यंजन जिनका उच्चारण करते समय वायु फेफड़ों से न निकलकर स्वर तंत्री से टकराती हुई निकलती है, उन्हें सघोष कहते हैं। ये व्यंजन हैं–

ग घ ङ ज ज़ झ ञ ड ढ ण ड़ ढ़ द ध न ब भ म य र ल व ह।

2. **अघोष व्यंजन–** ऐसे व्यंजन जिनका उच्चारण करते समय फेफड़ों से निकलने वाली वायु, स्वरतंत्री से टकराती हुई नहीं निकलती है, उन्हें अघोष व्यंजन कहते हैं। ये हैं–

क ख च छ ट ठ त थ प फ श स।

द्वित्व व्यंजन– दो समान व्यंजन (एक पूरा और दूसरा आधा) से बने संयुक्त को द्वित्व व्यंजन कहते हैं।

जैसे–
क्क	– चक्कर, मक्का	च्च	– सच्चा, बच्चा, कच्चा
त्त	– कुत्ता, उत्तर, पत्ता	ज्ज	– सज्जन, लज्जा, पिज्जा
द्द	– गद्दा, रद्दी, चद्दर	न्न	– पन्ना, खन्ना, चवन्नी
प्प	– पप्पू, चप्पू, गप्पू		

आइए, पुनरावृति करें

- वह ध्वनि जिसका हम उच्चारण करके लिखते हैं, वर्ण कहलाते हैं। यह ध्वनि की सबसे छोटी इकाई होती है।
- वर्णों का क्रमिक एवं व्यवस्थित रूप वर्णमाला कहलाता है।
- **स्वर–** ये स्वतंत्र एवं पूर्ण होते हैं। इनके उच्चारण में किसी की सहायता नहीं ली जाती है।
- स्वर के तीन भेद हैं– ह्रस्व, दीर्घ तथा प्लुत।
- **व्यंजन–** इनका उच्चारण स्वरों की सहायता से किया जाता है।
- व्यंजन के भी तीन भेद होते हैं– स्पर्श, अंत:स्थ एवं ऊष्म।
- 'र' वर्ण के तीन रूप होते हैं– रेफ़, पदेन, पदेन टवर्ग।
- उच्चारण के आधार पर वर्ण आठ प्रकार के होते हैं– स्पर्शी व्यंजन, संघर्षी व्यंजन, स्पर्श-संघर्षी व्यंजन, नासिक्य व्यंजन, पार्श्विक व्यंजन, प्रकंपी व्यंजन, उत्क्षिप्त व्यंजन तथा अर्ध-स्वर व्यंजन।

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य

Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) वर्ण किसे कहते हैं? बताइए।

(ख) वर्ण कितने प्रकार के प्रकार के होते है?

(ग) स्वरों के भेद बताइए।

लेखन कार्य

Writing Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) व्यंजन किसे कहते हैं? परिभाषित कीजिए।

(ख) स्वरों को सोदाहरण परिभाषित कीजिए।

(ग) स्वर तथा व्यंजन वर्णों में अंतर स्पष्ट कीजिए।

(घ) अनुनासिक किसे कहते हैं? लिखिए।

2. दिए गए स्वरों को उनके भेद के नीचे लिखिए।

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, अः

ह्रस्व स्वर – ....

दीर्घ स्वर – ....

अयोगवाह – ....

3. संयुक्त व्यंजन तथा द्‌वित्व व्यंजन में अंतर स्पष्ट कीजिए।

....

....

4. दिए गए वाक्यो में सही वाक्य पर सही (✓) तथा गलत (×) का निशान लगाइए।

(क) हिंदी वर्णमाला में सब मिलाकर 52 वर्ण होते हैं। ☐

(ख) व्यंजनों का उच्चारण स्वतंत्र एवं पूर्ण होता है। ☐

(ग) ह्रस्व स्वरों के उच्चारण में सबसे अधिक समय लगता है। ☐

(घ) दीर्घ स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व से दोगुना समय लगता है। ☐

5. दिए गए शब्दों में से शुद्‌ध शब्द का चुनाव कीजिए।

(क)	☐ कुँआ	☐ कूआँ	☐ कुआँ	☐ कुँआँ
(ख)	☐ आचल	☐ आँचल	☐ आचँल	☐ आंचल
(ग)	☐ गँगा	☐ गगां	☐ गंगा	☐ गंगं
(घ)	☐ र्दद	☐ र्दर्द	☐ दरद	☐ दर्द

सोचें-विचारें

Critical Thinking

6. यदि भाषा में हुई गलतियों में सुधार नहीं लाया जाएगा तो क्या भाषा संपूर्ण रूप से विकसित हो पाएगी? सोच-समझकर बताइए।

खेल-खेल में

Brain Storming Activity

7. कक्षा में छात्रों से स्वर, व्यंजन तथा इनके भेद वाले शब्द पूछें। सही बताने पर शाबाशी दें, गलत बताने पर उन्हें समझाएँ।

प्रेरणादायक मूल्य

हम जैसा बोलते है, वैसा ही लिखते हैं, जो हमारे विश्वास को बढ़ाता है। इसी प्रकार हमें एक-दूसरे के प्रति भरोसा रखने से विश्वास बढ़ता है, जो कि अच्छे रिश्ते की पहचान होती है।

अध्याय 3

शब्द-विचार
(Morphology)

पढ़िए और समझिए

बच्चो! जब हम किसी वाक्य को बोलते तथा पढ़ते हैं, तो उसमें अनेक शब्दों का सम्मिलन होता है। जब इन शब्दों को सार्थक लय में रखते हैं, तो इससे 'पद' का निर्माण होता है। भाषा की सबसे छोटी इकाई को 'वर्ण' कहा जाता है, इन वर्णों के मेल से ही शब्द बनते हैं; जैसे–

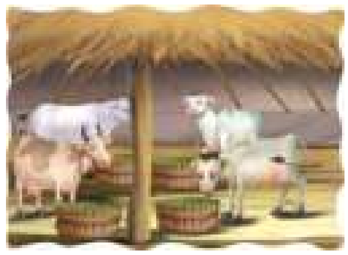

सोमेश	=	गौशाला जाएगा।
सोमेश	=	स् + ओ + म् + इ + श् + अ
गौशाला	=	ग् + औ + श् + आ + ल् + आ
जाएगा	=	ज् + आ + ए + ग् + आ

अतएव शब्दों का वर्ण-विच्छेद करने पर सभी वर्ण अलग हो जाते हैं और ये ही सबसे छोटी इकाई होते हैं। शब्द वर्णों से ही बनते हैं, किंतु वे सार्थक होने चाहिए। अतः शब्द के बारे में हम कह सकते हैं कि–

वर्णों के मेल से बनाई गई सार्थक इकाई को 'शब्द' कहा जाता है।

अब आइए, सार्थक ध्वनि समूह और निरर्थक ध्वनि समूह को समझें–

सार्थक ध्वनि समूह– क् + आ + ज् + ल् + अ = काजल (सार्थक, शब्द)

निरर्थक ध्वनि समूह– ण् + अ + ल् + अ + क् + अ = णलक (निरर्थक, शब्द नहीं)

शब्द के भेद

शब्द के पाँच भेद इन आधारों पर निश्चित किए गए हैं–

1. वाक्य में प्रयोग के आधार पर
2. रचना के आधार पर
3. उत्पत्ति के आधार पर
4. अर्थ के आधार पर
5. व्याकरणिक प्रकार्य के आधार पर

1. **वाक्य में प्रयोग के आधार पर–** वाक्य में प्रयोग के आधार पर शब्दों के दो भेद होते हैं–

(क) सार्थक शब्द (ख) निरर्थक शब्द

(क) सार्थक शब्द– ऐसे शब्द जिनका कुछ-न-कुछ अर्थ जरूर होता है या जिसके नाम की कोई वस्तु विद्यमान होती है, उसे सार्थक शब्द कहते हैं; जैसे– पानी, पेड़, चीनी, मिठाई, माता, लक्ष्मी, शेर, पशु आदि।

(ख) निरर्थक शब्द– ऐसे शब्द जिनका न तो कोई अर्थ होता है और न ही कोई वस्तु उसके अनुरूप होती है, उसे निरर्थक शब्द कहते हैं; जैसे– बॉय-बॉय, चूँ-चूँ, खट-खट आदि।

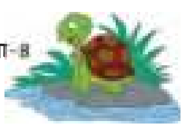

2. **रचना या बनावट के आधार पर–** रचना या बनावट के आधार पर शब्द तीन तरह के होते हैं–
(क) रूढ़ शब्द (ख) यौगिक शब्द (ग) योगरूढ़ शब्द।

(क) रूढ़ शब्द– ऐसे शब्द जो पारंपरिक रूप से मान्य हैं, वे रूढ़ शब्द कहलाते हैं; जैसे– नल, पानी, हाथ, पैर आदि। रूढ़ शब्दों के खंड करने पर इनसे कोई भी अर्थ किसी भी भाग का नहीं निकलता है।

(ख) यौगिक शब्द– ऐसे शब्द जिन्हें दो शब्दों के मेल से बनाया जाता है, ऐसे शब्दों को यौगिक शब्द कहा जाता है। यौगिक शब्दों के खंड करने पर उनके प्रत्येक भाग का अर्थ निकलता है; जैसे–

रसोई + घर = रसोईघर (किचन)
पीत + अंबर = पीतांबर (विष्णु)
राष्ट्र + पिता = राष्ट्रपिता (महात्मा गांधी)
पंक + ज = पंकज (कमल)

(ग) योगरूढ़ शब्द– दो या दो से अधिक शब्दों को मिलाकर बनने वाले शब्द किंतु इनका प्रयोग किसी निश्चित अर्थ के लिए प्रयुक्त किया जाए तो ये योगरूढ़ शब्द कहलाते हैं; जैसे–पंकज (पंक+ज) अर्थात् कीचड़ में उत्पन्न कमल।

3. **उत्पत्ति या स्रोत के आधार पर–** उत्पत्ति या स्रोत के आधार पर भी शब्द चार प्रकार के होते हैं–
(क) तत्सम (ख) तद्भव (ग) देशज (घ) विदेशी

(क) तत्सम शब्द– ऐसे शब्द जिन्हें शब्दश: संस्कृत भाषा से हिंदी भाषा में लिया गया है; जैसे– अग्नि, जल, कर्ण, अत:, प्रात:, जिह्वा, मुख, नासिका आदि।

(ख) तद्भव शब्द– ये वे शब्द होते हैं, जो मूलत: संस्कृत के हैं, किंतु हिंदी में उनका स्वरूप विकृत होकर प्रयुक्त किया जाता है; जैसे–
आग, पानी, कान, जीभ, नाक, मुँह, पैर आदि।

कुछ तत्सम-तद्भव शब्द हैं–

तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव
नासिका	नाक	उलूक	उल्लू	कर्ण	कान
काक	कौआ	अग्नि	आग	मयूर	मोर
प्रस्तर	पत्थर	स्वर्ण	सोना	अमृत	अमिय
रजत	चाँदी	कज्जल	काजल	कर्म	काम
भल्लूक	भालू	काष्ठ	काठ	दुग्ध	दूध
उष्ट्र	ऊँट	कूप	कुआँ	स्वप्न	सपना
भगिनी	बहिन	घृत	घी	अंजलि	अँजुरी
अश्रु	आँसू	उदर	पेट	इक्षु	ईख
मस्तक	माथा	ओष्ठ	ओठ	महिष	भैंस
चक्षु	आँख	धेनु	गाय	हस्त	हाथ

(ग) देशज शब्द– जो शब्द स्थानीय या क्षेत्रीय प्रभाव वाले होते हैं, उन्हें देशज शब्द कहते हैं; जैसे– पगड़ी, डिबिया, लोटा, खिचड़ी आदि।

(घ) विदेशी शब्द– ऐसे विदेशी शब्द जो विदेशी भाषा से शब्दशः लेकर हिंदी भाषा में प्रयोग किए गए उसे विदेशी शब्द कहते हैं। ये निम्न प्रकार के होते हैं–

(i) अंग्रेज़ी शब्द– ट्रेन, मेट्रो, स्कूल, स्टेशन, मास्टर, मोबाइल, कंप्यूटर, गैस, ओवन, फोन, कूलर, क्लास, बैग, बैट आदि।

(ii) तुर्की शब्द– तोप, कैंची, बंदूक, बेग़म, बावर्ची आदि।

(iii) अरबी– अदालत, इशारा, तारीख, औरत, अखबार, इनाम आदि।

(iv) फारसी– आमदनी, शहद, सब्ज़ी, मोम, चिराग, कद्दू, कमर, आस्तीन, गुलाब, नमक, नमूना, खराब, मसाला, शेर आदि।

(v) पुर्तगाली– गमला, कप्तान, संतरा, तौलिया, गलीचा, इस्पात, चीता, साबुन आदि।

4. अर्थ के आधार पर– अर्थ के आधार पर शब्द पाँच प्रकार के होते हैं–

(क) पर्यायवाची शब्द (ख) विलोम शब्द (ग) अनेकार्थी शब्द

(घ) वाक्यांशबोधक शब्द (ङ) एकार्थी शब्द

(क) पर्यायवाची शब्द– ऐसे शब्द जिनके अर्थ लगभग समान होते हैं, वे पर्यायवाची शब्द कहलाते हैं; जैसे–

पेड़	–	वृक्ष, तरु, पादप, विटप	अग्नि	–	अनल, पावक, वह्नि, आग
जल	–	पानी, वारि, सलिल	अमृत	–	सुधा, सोम, अमिय, पीयूष

(ख) विलोम शब्द– ऐसे शब्द जो परस्पर विरोधी या उल्टा अर्थ देते हैं, वे विलोम शब्द कहलाते हैं; जैसे–

शब्द	×	विलोम	शब्द	×	विलोम
निद्रा	×	जागरण	आदि	×	अंत
आगमन	×	प्रस्थान	उष्ण	×	शीत
यश	×	अपयश	आय	×	व्यय

(ग) अनेकार्थी शब्द– ऐसे शब्द जिनके एक से अधिक अर्थ होते हैं, उन्हें अनेकार्थी शब्द कहते हैं; जैसे–

अंक	–	गोद, संख्या	घन	–	बादल, हथौड़ा
अंबर	–	कपड़ा, आकाश	रस	–	स्वाद, जूस, आनंद
कनक	–	सोना, धतूरा	मत	–	राय, नहीं, वोट

(घ) वाक्यांशबोधक शब्द– ऐसे शब्द जो किसी वाक्यांश के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं, वे वाक्यांशबोधक शब्द कहलाते हैं; जैसे–

केवल शाक–सब्ज़ी खाने वाला	–	शाकाहारी
केवल फल-फूल खाने वाला	–	फलाहारी
किसी की बात मानने वाला	–	आज्ञाकारी
सगे भाई-बहन	–	सहोदर

(ङ) एकार्थी शब्द– ऐसे शब्द जिनका केवल एक ही अर्थ होता है, वे एकार्थी शब्द कहे जाते हैं; जैसे–

मित्र	–	दोस्त	चंद्रमा	–	चाँद
घर	–	मकान	मानव	–	मनुष्य
साँप	–	सर्प	कथा	–	कहानी

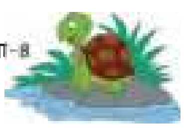

5. व्याकरणिक प्रकार्य के आधार पर– व्याकरणिक प्रकार्य के आधार पर शब्द दो प्रकार के होते हैं–

(क) विकारी (ख) अविकारी शब्द।

(क) विकारी शब्द– ऐसे शब्द जिनके रूप लिंग, वचन, कारक, काल आदि के कारण परिवर्तित हो जाते हैं, वे विकारी शब्द कहलाते हैं।

विकारी शब्द चार प्रकार के होते हैं– (i) संज्ञा (ii) सर्वनाम (iii) विशेषण (iv) क्रिया।

(i) **संज्ञा–** सभी पशु, पक्षी, नाम, प्राणी, भाव आदि के नाम को संज्ञा कहते हैं; जैसे– बच्चा, बच्चे, विराट, बुढ़ापा, बंदर आदि।

(ii) **सर्वनाम–** ऐसे शब्द जिन्हें संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त किया जाता है, उन्हें सर्वनाम कहते हैं; जैसे– वह, तुम, मैं, हम, तुम्हारा, उसका, यहाँ आदि।

(iii) **विशेषण–** ऐसे शब्द जो किसी संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, वे विशेषण शब्द कहलाते हैं; जैसे– मोटा, पतला, छोटा, खुशबूदार, काला, सुरीला आदि।

(iv) **क्रिया–** जिन शब्दों से किसी कार्य के करने या होने का पता चलता है, वे क्रिया शब्द कहलाते हैं; जैसे– रोना, गाना, हँसना, खाना, पढ़ना, लिखना, आना, जाना, नहाना, धोना आदि।

(ख) अविकारी शब्द– ऐसे शब्द जिनमें लिंग, वचन, कारक, काल के अनुसार कोई परिवर्तन नहीं आता है, उन्हें अविकारी शब्द कहते हैं; जैसे–

सुमित अंदर गया है। (लिंग, क्रिया के बदलने पर भी अंदर शब्द परिवर्तित नहीं हुआ है।)

सुचेता अंदर बैठी है।

, अविकारी शब्द हैं– (i) क्रिया-विशेषण (ii) संबंधबोधक (iii) समुच्चयबोधक (iv) विस्मयादिबोधक (vi) निपात

(i) **क्रिया-विशेषण –** ऐसे शब्द जो क्रिया की विशेषता को बताते हैं, उन्हें क्रिया-विशेषण कहते हैं; जैसे– धीरे-धीरे, अचानक, रोज-रोज, भीतर, बाहर आदि।

(ii) **संबंधबोधक–** ऐसे शब्द जो संज्ञा अथवा सर्वनाम शब्दों के साथ प्रयोग में आकर उनका वाक्य के दूसरे संज्ञा या सर्वनाम शब्दों के साथ संबंध बताते हैं, वे संबंधबोधक कहलाते हैं; जैसे–

दरवाज़े के पास राहुल खड़ा है। मैं श्याम से पहले आ गया। घर के पीछे सड़क है।

(iii) **समुच्चयबोधक–** ऐसे शब्द जो दो वाक्यों को जोड़ने का कार्य करते हैं, वे समुच्चयबोधक शब्द कहलाते हैं; जैसे–

विकास अथवा संदीप को बाज़ार भेजिए।

रोहन ने बहुत परिश्रम किया, परंतु सफलता नहीं मिली।

(iv) **विस्मयादिबोधक–** ऐसे शब्द जिनसे हर्ष, विषाद, क्रोध, घृणा आदि का भाव महसूस होता है, उन्हें विस्मयादिबोधक शब्द कहा जाता है; जैसे–

अरे! तुम रो रहे हो। छि:! कैसे गंदगी में रहते हो। आहा! कल तुमनें क्या शानदार खेला।

अध्यापन संकेत शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को शब्दों के विभिन्न रूपों के बारे में अध्ययन करवाएँ तथा उन्हें शब्द के विभिन्न रूपों से परिचित कराएँ।

(v) **निपात–** निपात वाले शब्द वाक्य में जिस भी पद के आगे जुड़ते हैं, उसके अनुसार वाक्य के अर्थ को बल प्रदान करते हैं; जैसे–

मैं कोलकाता **भी** जाऊँगा।

रेखा को **ही** नृत्य करना है।

आइए, पुनरावृति करें

- **शब्द –** सार्थक ध्वनियों के समूह होते हैं।
- **पद –** वाक्य में व्याकरणिक नियमों के अनुसार रखे गए शब्द 'पद' कहलाते हैं।
- शब्द के कई भेद होते हैं।
- **वर्ण –** ध्वनि की सबसे छोटी इकाई होते हैं।
- **वर्ण-विच्छेद –** किसी शब्द के सभी वर्णों को अलग करना वर्ण-विच्छेद कहलाता है।

शब्द

- **प्रयोग के आधार पर**
  - सार्थक
  - निरर्थक
- **रचना के आधार पर**
  - रूढ़
  - यौगिक
  - योगरूढ़
- **उत्पत्ति के आधार पर**
  - तत्सम
  - तद्भव
  - देशज
  - विदेशी
- **अर्थ के आधार पर**
  - पर्यायवाची
  - विलोम
  - अनेकार्थी
  - एकार्थी
  - वाक्यांशबोधक
- **व्याकरणिक प्रकार्य के आधार पर**
  - संज्ञा
  - सर्वनाम
  - विशेषण
  - क्रिया

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य

Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) शब्द किसे कहते हैं? बताइए।

(ख) शब्द के भेद बताइए।

(ग) अर्थ के आधार पर शब्द के भेद बताइए।

लेखन कार्य

Writing Skills

1. **दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**

(क) 'पद' को परिभाषित कीजिए।

(ख) तत्सम तथा तद्भव में क्या अंतर होता है? लिखिए।

(ग) रचना के आधार पर शब्दों के प्रकार लिखिए।

(घ) अविकारी शब्दों के भेदों को लिखिए।

(ङ) निपात किसे कहते हैं? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

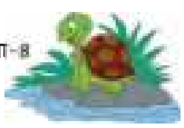

2. **दिए गए शब्दों को रूढ़, योगरूढ़ तथा यौगिक शब्द के अंतर्गत रखिए।**

पीतांबर	हिमालय	लड़का	दशानन	हरिद्वार	एकदंत
घुड़दौड़	पंकज	दिन	दोपहर	गौशाला	सुबह

रूढ़ – ....

योगरूढ़ – ....

यौगिक – ....

3. **सार्थक और निरर्थक शब्द में अंतर स्पष्ट कीजिए।**

....

....

4. **दिए गए शब्दों में रूढ़ शब्दों पर (□) तथा योगरूढ़ शब्दों पर (○) की आकृति बनाइए।**

(क)	(i) गज	(ii) आनन	(iii) कानन	(iv) एकदंत
(ख)	(i) तीन	(ii) रंग	(iii) तिरंगा	(iv) रंग-बिरंगा
(ग)	(i) कंठ	(ii) नील	(iii) पीत	(iv) नीलकंठ
(घ)	(i) पंकज	(ii) दिग्गज	(iii) मकर	(iv) संकट
(ङ)	(i) चतुर	(ii) भुजा	(iii) चतुर्भुज	(iv) चारभुज

5. **दिए गए शब्दों में से तत्सम, तद्भव, देशज एवं विदेशी को अलग कीजिए।**

मेट्रो	जीभ	हस्त	इस्पात	आग	आदमी	अग्नि	पानी
हाथ	कटि	मोबाइल	आँसू	दुग्ध	बैग	सर्प	

तत्सम – ....

तद्भव – ....

विदेशी – ....

6. **कोई भी चार वाक्यांशबोधक शब्दों को वाक्यांश के साथ लिखिए।**

....

....

....

....

7. **दिए गए विकारी शब्दों के साथ शब्दों का मिलान कीजिए।**

(खुशबूदार, धनी, ईमानदार)	संज्ञा	(मैं, तुम, वह)
(आना, जाना, करना)	सर्वनाम	(गया, गई, गए)
(हमारा, तुम्हारा, सबका)	विशेषण	(रुपया, घर, कार)
(मोहन, वृक्ष, ग्राम)	क्रिया	(परिश्रमी, सुरीला, सुंदर)

8. **दिए गए शब्दों के एकार्थी शब्द लिखिए–**

बालक – .... आभूषण – ....

चंद्रमा – .... मानव – ....

सोचें-विचारें

Critical Thinking

9. जब हम बोलते, लिखते, पढ़ते हैं तो भाषा की आवश्यकता होती है, तो ज़रा सोचिए। भाषा के लिए शब्दों की क्या उपयोगिता है?

खेल-खेल में

Brain Storming Activity

10. दिए गए शब्दों के प्रकार से संबंधित शब्द का लेखन करें।

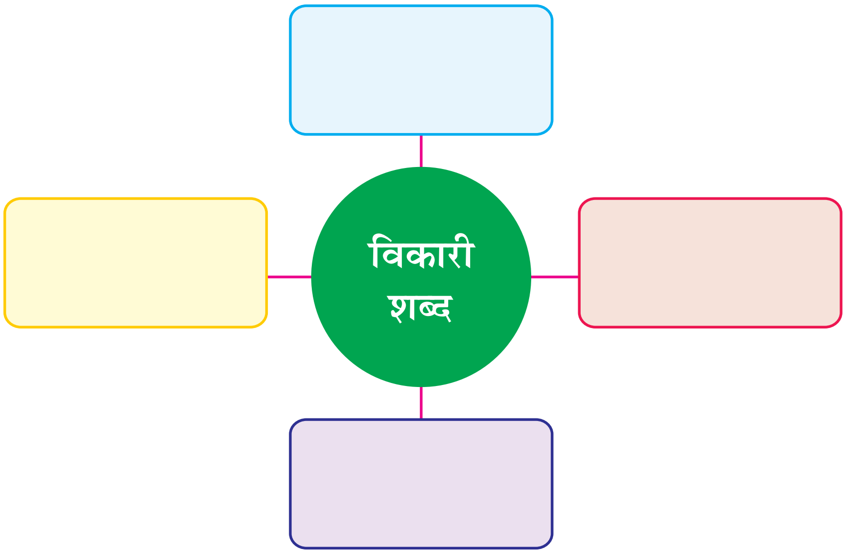

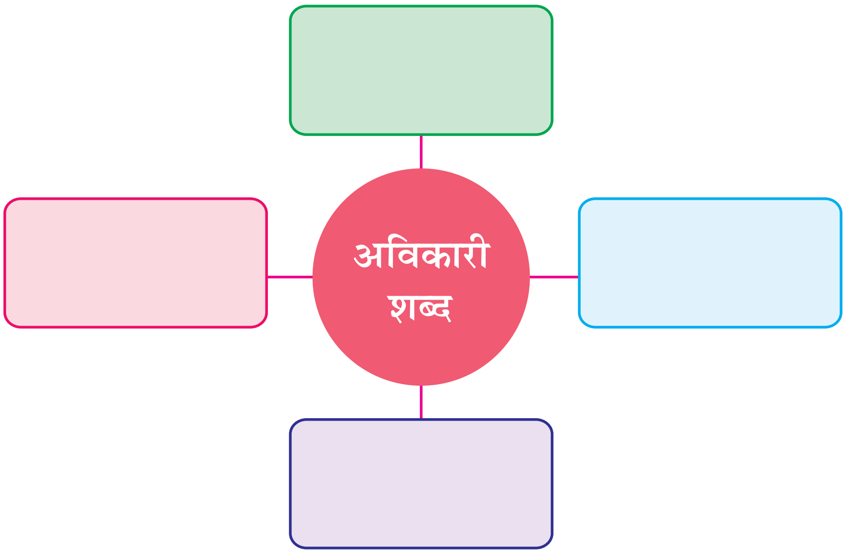

प्रेरणादायक मूल्य

जिस प्रकार शब्दों के समाकलन से ही भाषा समृद्ध बनती है, ठीक उसी प्रकार गुणों/अवगुणों के समावेशन से मनुष्यत्व का निर्माण होता है।

अध्याय 4

संज्ञा (Noun)

पढ़िए और समझिए

दिए गए चित्र को ध्यान से देखिए तथा समझिए।

आरव एक अच्छा लड़का है, वह प्रतिदिन स्नान करता है और ब्रश भी करता है। वह प्रतिदिन नाश्ता करके विद्यालय जाता है, वह हरियाली को बहुत पसंद करता है, उसने अपने घर की छत पर कई प्रकार के फूल-पौधे लगाए हैं, वह उनकी हर रोज देखभाल करता है, वह सबसे प्रसन्नता से बात करता है।

यहाँ आरव लड़का (व्यक्ति), ब्रश, नाश्ता, फूल, पौधे (वस्तुएँ) हरियाली, विद्यालय (स्थान) के नाम हैं। सभी प्रकार के नामों को **संज्ञा** कहते हैं। अत: हम कह सकते हैं कि–

किसी वस्तु, व्यक्ति, प्राणी, भाव आदि के नाम का बोध कराने वाले शब्दों को संज्ञा कहते हैं।

संज्ञा के भेद

संज्ञा के पाँच भेद होते हैं– 1. व्यक्तिवाचक 2. जातिवाचक 3. भाववाचक 4. समूहवाचक 5. द्रव्यवाचक

1. **व्यक्तिवाचक संज्ञा–** ऐसे संज्ञा शब्द जिनसे किसी विशेष व्यक्ति, विशेष स्थान, विशेष वस्तु आदि का बोध होता है, वे व्यक्तिवाचक संज्ञा शब्द कहलाते हैं; जैसे–

विशेष व्यक्ति	–	डॉ. कलाम, लाल बहादुर शास्त्री, ई. श्रीधरन आदि।
विशेष स्थान	–	दिल्ली, लंदन, दुबई, लखनऊ, गाज़ियाबाद आदि।
विशेष वस्तु	–	भगवद्गीता, महाभारत, लँगड़ा आम आदि।

2. **जातिवाचक संज्ञा–** जिन संज्ञा शब्दों के द्वारा किसी प्राणी, वस्तु या स्थान की संपूर्ण जाति के बारे में पता चलता है।, उन्हें जातिवाचक संज्ञा शब्द कहते हैं; जैसे–

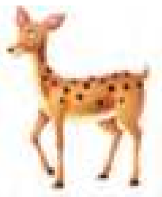

प्राणी – लड़का, लड़की, मुरगा, हिरण, कौआ आदि।

स्थान – देश, मोहल्ला, कस्बा, शहर, बाज़ार आदि।

वस्तु – कार, साइकिल, कपड़ा, पिज्ज़ा आदि।

3. **भाववाचक संज्ञा–** जिन संज्ञा शब्दों के द्वारा किसी प्राणी या वस्तु की स्थिति, भाव, दशा आदि की जानकारी होती है, उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे–

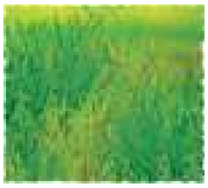

भाव – क्रोध, मुस्कराहट, हँसी आदि।

स्थिति – लड़ाई, ऊँचाई, गहराई, गरमाहट आदि।

दशा – हरियाली, लालिमा, कालिमा आदि।

4. **द्रव्यवाचक संज्ञा–** ऐसे संज्ञा शब्द जिनके द्वारा विविध पदार्थों या धातुओं का बोध होता है, उसे द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे–

आजकल सोना महँगा हो गया है।

हमारे घर चाँदी की पायल आई है।

ग्वाला भैंस का दूध लेकर आया है।

ऊपर के उदाहरणों में सोना, दूध को हम गिन नहीं सकते, तो इन्हें तौलना या नापना पड़ता है।

इसके अन्य उदाहरण हैं– चीनी, आटा, चावल, लोहा, पानी, तेल, चाय आदि।

5. **समूहवाचक संज्ञा–** जिन संज्ञा शब्दों के द्वारा किसी वस्तु या जाति के समूह का बोध हो, वे समूहवाचक संज्ञा शब्द कहलाते हैं; जैसे–

मुझे अंगूर का गुच्छा दे दो।

भारतीय सेना बहुत बहादुर है।

नेता जी की सभा बहुत शानदार थी।

मेरे पास दस के नोटों की गड्डी है।

दिए गए रेखांकित शब्द किसी-न-किसी समूह की सूचना दे रहे हैं, इसलिए ये समूहवाचक संज्ञा शब्द हैं।

भाववाचक संज्ञा शब्दों का निर्माण–

जब कुछ भाववाचक संज्ञा शब्द अपने मूल रूप में प्रयोग किए जाते हैं, तो वहीं कुछ प्रत्ययों व अन्य कुछ शब्दों– जातिवाचक संज्ञा शब्दों से, सर्वनाम से, विशेषण शब्दों व क्रिया आदि शब्दों से बनाए जाते हैं। आइए, ऐसे शब्दों को जानें–

(क) जातिवाचक संज्ञा शब्दों से भाववाचक संज्ञा शब्दों का निर्माण–

शिशु	–	शिशुत्व	बालक	–	वात्सल्य	मनुष्य	–	मनुष्यता
बच्चा	–	बचपन	इनसान	–	इनसानियत	चोर	–	चोरी

लड़का	लड़कपन	पशु	पशुता	ठग	ठगी
मानव	मानवता	दास	दासता	जवान	जवानी
पुरुष	पुरुषत्व	पंडित	पांडित्य	खेत	खेती
मूर्ख	मूर्खता	व्यक्ति	व्यक्तित्व	बढ़ई	बढ़ईगीरी
मित्र	मित्रता	दोस्त	दोस्ती	चमचा	चमचागीरी
शत्रु	शत्रुता	बाज़ीगर	बाज़ीगरी	सज्जन	सज्जनता
मजदूर	मजदूरी	अमर	अमरता	स्त्री	स्त्रीत्व
नौकर	नौकरी				

(ख) विशेषण शब्दों से भाववाचक संज्ञा शब्दों का निर्माण–

सुगम	सुगमता	अजनबी	अजनबीपन	गंदा	गंदगी
स्पष्ट	स्पष्टता	मोहक	मोह	सभ्य	सभ्यता
निडर	निडरता	स्वस्थ	स्वास्थ्य	मीठा	मिठास
उदार	उदारता	बड़ा	बड़ाई	एकाकी	एकाकीपन
दुष्ट	दुष्टता	ईमानदार	ईमानदारी	खारा	खारापन
व्याकुल	व्याकुलता	चौड़ा	चौड़ाई	अच्छा	अच्छाई
चंचल	चंचलता	लंबा	लंबाई	बुरा	बुराई
एक	एकता	उपयोगी	उपयोगिता	मोटा	मोटाई
सफल	सफलता	स्वस्थ	स्वास्थ्य	नीचा	निचाई
महान	महानता	गरम	गरमाहट	काला	कालिमा
सृब्ध	सृब्धता	दक्ष	दक्षता	कठिन	कठिनाई
उचित	औचित्य	उचित	औचित्य	खूबसूरत	खूबसूरती
युवा	यौवन	लोभी	लोभ	कंजूस	कंजूसी
गरीब	गरीबी	व्यसनी	व्यसन	चतुर	चातुर्य
चालाक	चालाकी	आदरणीय	आदर		

(ग) क्रिया शब्दों से भाववाचक संज्ञा शब्दों का निर्माण–

भागना-दौड़ना	भाग-दौड़	लेना-देना	लेन-देन	सजाना	सजावट
लुभाना	लोभ	खींचना	खिंचाव	काटना	कटाई
बदलना	बदलाव	हँसना	हँसी	तैरना	तैराई
पहनना	पहनाव	जीतना	जीत	थकना	थकान/थकावट
बहना	बहाव	घबराना	घबराहट	सजना	सजावट
चुनना	चुनाव	चिल्लाना	चिल्लाहट	खाना-पीना	खानपान
उलझना	उलझन	गिरना	गिरावट	गहरा	गहराई

अध्यापन संकेत शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को संज्ञा तथा उसके भेद एवं उसके मूल्यों से अवगत कराएँ।

रोकना	–	रुकावट	चढ़ना	–	चढ़ाई	लिखना	–	लिखावट
लड़ना	–	लड़ाई	पढ़ना	–	पढ़ाई	सिलना	–	सिलाई
चलना	–	चलन, चाल	उतरना	–	उतराई	मिलना	–	मिलाई
खींचना	–	खिंचाव	कूटना	–	कुटाई			

(घ) सर्वनाम शब्दों से भाववाचक संज्ञा शब्दों का निर्माण–

निज	–	निजता/निजत्व	स्व	–	स्वत्व	अहं	–	अहंकार
अपना	–	अपनापन	आप	–	आपा	पराया	–	परायापन
मम	–	ममत्व	सर्व	–	सर्वस्व			

(ङ) अव्यय शब्दों से भाववाचक संज्ञा शब्दों का निर्माण–

मना	–	मनाही	धिक्	–	धिक्कार	भीतर	–	भीतरी
ऊँचा	–	ऊँचाई	ऊपर	–	ऊपरी	बाहर	–	बाहरी
निकट	–	निकटता	बहुत	–	बहुतायत	दूर	–	दूरी

आइए, पुनरावृत्ति करें

- **संज्ञा–** किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, पशु-पक्षी, प्राणी, भाव आदि के नाम को **संज्ञा** कहते हैं।

संज्ञा

व्यक्तिवाचक	जातिवाचक	भाववाचक	द्रव्यवाचक	समूहवाचक
विशेष व्यक्ति, वस्तु, स्थान आदि	पूरी जाति का बोध	किसी हर्ष, क्रोध, घृणा, भाव आदि।	किसी द्रव्य आदि का बोध	गुच्छा, दर्जन, किलो लीटर आदि।

- अनेक शब्दों से भाववाचक संज्ञा शब्द बनाए जाते हैं।

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य

Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) संज्ञा किसे कहते हैं? बताइए।

(ख) संज्ञा के भेद बताइए।

(ग) द्रव्यवाचक संज्ञा से आप क्या समझते हैं? बताइए।

लेखन कार्य

Writing Skills

1. **दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**

   (क) संज्ञा से आप क्या समझते हैं?

   (ख) संज्ञा के कितने प्रकार होते हैं?

2. **दिए गए वाक्यों में से संज्ञापद के नीचे देखा खींचकर उनके प्रकार लिखिए।**

(क) हमारे खेतों में हरियाली है। ....

(ख) डॉ. कलाम हमारे राष्ट्रपति थे। ....

(ग) अच्छे से देखो, हर जगह हरियाली है। ....

3. **दिए गए शब्दों को उनके उचित वर्गों से मिलाइए।**

भारत	जातिवाचक	दर्जन
कैरेट	व्यक्तिवाचक	रुलाई
हँसी	समूहवाचक	गुच्छा
सोना	भाववाचक	पतंग
पहाड़	द्रव्यवाचक	महेश

4. **दिए गए शब्दों से भाववाचक संज्ञा शब्द बनाइए।**

दानव –	नेता –	सर्व – ....
शिष्य –	सुगम –	महान – ....
हरा –	सफल –	काला – ....

5. **दिए गए संज्ञा शब्दों को सही भेद के साथ लिखिए।**

हरियाली, चाँदी, विद्यालय, क्रोध, तेल, कुरसी, लँगड़ा आम, गड्डी, हिमालय, नदी, दिल्ली, सोना, पानी, गंगा, संसद भवन, सफलता, हँसी, गुच्छा, कैरेट, पंसेरी, पारा, पेड़, लड़ाई, दूध, दर्जन

व्यक्तिवाचक – ....

जातिवाचक – ....

भाववाचक – ....

द्रव्यवाचक – ....

समूहवाचक – ....

सोचें-विचारें

Critical Thinking

6. **लोग अपने घरों को यथासंभव आकर्षक बनाने के लिए कठिन मेहनत करते हैं। ''उपर्युक्त वाक्य में संज्ञा शब्दों का सोच-समझकर चयन कीजिए।**

खेल-खेल में

Brain Storming Activity

7. **दो मित्रों के मध्य हुए परस्पर संवाद को ध्यान से पढ़कर उनमें सज्ञा शब्दों को रेखांकित कीजिए।**

मुकेश – सीता क्या तुमने मीना को देखा है।

सीता – मैंने मीना को पार्क में झूला झूलते देखा था।

प्रेरणादायक मूल्य

जिस प्रकार संज्ञा शब्दों के माध्यम से किसी के नाम की पहचान होती है, ठीक उसी प्रकार नाम को बनाने के लिए अच्छे व्यक्तित्व का निर्माण करना आवश्यक होता है।

लिंग
(Gender)

पढ़िए और समझिए

दिए गए चित्रों के नाम पढ़िए और ध्यान दीजिए–

नर

नारी

मुरगा

मुरगी

बच्चो! ऊपर दिए गए चित्रों में नर तथा मुरगा पुरुष होने की जानकारी दे रहे हैं तथा नारी और मुरगी स्त्री होने की जानकारी दे रहे हैं। इन सभी शब्दों से पुरुष या स्त्री होने की जानकारी मिल रही है। इसलिए ये लिंग कहे जाएँगे।

हम यह भी कह सकते हैं कि–

जिन शब्दों से पुरुष जाति अथवा स्त्री जाति का बोध होता है, वे लिंग कहलाते हैं।

लिंग के भेद –

हिंदी भाषा में लिंग के दो भेद होते हैं–

(क) पुल्लिंग (ख) स्त्रीलिंग।

(क) **पुल्लिंग :** ऐसे शब्द जिनसे केवल पुरुष जाति होने का बोध होता है, वे पुल्लिंग कहलाते हैं; जैसे–

तोता सूरज 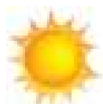

मोर आम

दादा जी पेड़

हाथी 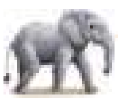 लड़का

(ख) **स्त्रीलिंग :** ऐसे शब्द जिनसे केवल स्त्री जाति का बोध होता है, उन्हें स्त्रीलिंग कहते हैं; जैसे–

मुरगी		खटिया	
घोड़ी		साड़ी	
बकरी		लड़की	
दादी जी	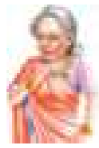	लकड़ी	

आइए, कुछ अन्य पुल्लिंग एवं स्त्रीलिंग शब्दों के नाम जानें।

पुल्लिंग

वृक्षों के नाम : शीशम, आम, महुआ, कटहल, बाँस, पीपल, जामुन, बरगद, नींबू, सागौन आदि।

पर्वत-सागर : हिमालय, हिंदूकुश, विंध्याचल, अरब सागर, हिंद महासागर, प्रशांत महासागर आदि।

अकारांत शब्द : मेज, पुत्र, मानव, दानव, दल, ज्ञान, सरोज, चंद्र, तारक आदि।

दिनों के नाम : सोमवार, मंगलवार, बृहस्पतिवार, शुक्रवार, शनिवार आदि।

धातुओं के नाम : सोना, सीसा, प्लेटिनम, लोहा, इस्पात, जस्ता आदि।

आकारांत शब्द : चूहा, कुत्ता, पत्ता, सत्ता, भुट्टा, घोड़ा, दरवाज़ा, पैसा, तमाशा, पाजामा, कपड़ा, चमड़ा आदि।

स्त्रीलिंग

अकारांत शब्द : बनावट, आहट, ऊन, राख, पुस्तक, खाट, पेंसिल, चोट आदि।

नदियों के नाम : कृष्णा, तुंगभद्रा, कावेरी, गोदावरी, गंगा, यमुना, सरस्वती, सिंधु आदि।

इकारांत शब्द : बुद्धि, मति, तिथि, मुक्ति, युक्ति, पंक्ति, नीति, प्रीति आदि।

ईकारांत शब्द : चिट्ठी, मीठी, पतली, नाटी, छोटी, बड़ी, बही, पत्री आदि।

भाषा, बोली तथा लिपियाँ : हिंदी, मराठी, गुजराती, चीनी, जापानी, कश्मीरी, हरियाणवी, पुरबिया, कोंकड़ी मागधी, खरोष्ठी, विभावरी, रोमन आदि।

तिथियों के नाम : प्रथमा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पंचमी, षष्ठी, सप्तमी, अष्टमी, एकादशी, चतुर्दशी, पहली, दूसरी, तीसरी आदि।

'इया'-'इका' वाले शब्द : बिटिया, डिबिया, खटिया, मुखिया, लेखिका, गायिका, नायिका, धाविका, सेविका, यवनिका आदि।

'मती'-'वती' वाले शब्द : श्रीमती, धनवती, पुत्रवती, सौभाग्यवती, दयावती, धनवती, बुद्धिमती, भानुमती आदि।

'आहट'-'आवट' वाले शब्द : घबराहट, झनझनाहट, सनसनाहट, फड़फड़ाहट, बुनावट, लिखावट, सजावट, मिलावट, रुकावट आदि।

'री'-'ता' वाले शब्द : बकरी, नौकरी, चाकरी, बारी, दुखियारी, शत्रुता, मित्रता, कटुता, पशुता, स्वतंत्रता, प्रसन्नता, मधुरता आदि।

लिंग-परिवर्तन

आइए, कुछ पुल्लिंग और स्त्रीलिंग शब्दों की सूची देखते हैं–

(क) शब्द के अंत में 'इन' लगाकर–

सुनार	सुनारिन	लुहार	लुहारिन
पुजारी	पुजारिन	नाई	नाइन
पापी	पापिन	भक्त	भक्तिन

(ख) 'ई' के स्थान पर 'इनी' लगाकर–

तेजस्वी	तेजस्विनी	स्वामी	स्वामिनी
यशस्वी	यशस्विनी	तपस्वी	तपस्विनी

(ग) शब्द के अंत में 'आइन' लगाकर–

लाला	ललाइन	पंडित	पंडिताइन
ठाकुर	ठकुराइन	मास्टर	मास्टराइन
बनिया	बनियाइन	गुरु	गुरुआइन

(घ) शब्दों के अंत में 'नी' जोड़कर–

रीछ	रीछनी	जाट	जाटनी
ऊँट	ऊँटनी	हिरन	हिरनी
शेर	शेरनी	मोर	मोरनी
हंस	हंसनी	चोर	चोरनी

(ङ) शब्द के अंत में 'अ' को 'आ' करके–

आत्मज	आत्मजा	सुत	सुता
महोदय	महोदया	अज	अजा
प्रधानाचार्य	प्रधानाचार्या	भवदीय	भवदीया
आदरणीय	आदरणीया	आचार्य	आचार्या
निर्मल	निर्मला	संकट	संकटा

अध्यापन संकेत

शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को लिंग के विभिन्न रूपों से अवगत कराएँ तथा उनके रूप को परिवर्तित करना भी सिखाएँ।

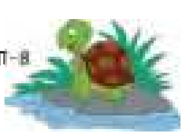

(च) विविध रूपों वाले पुल्लिंग तथा स्त्रीलिंग शब्द–

राजा	रानी	विधुर	विधवा
भाई	बहन	वीर	वीरांगना
पिता	माता	नर्तक	नर्तकी
वर	वधू	आदमी	औरत
साधु	साध्वी	ससुर	सास
लड़का	लड़की	पति	पत्नी
अभिनेता	अभिनेत्री	लेखक	लेखिका
फूफा	बुआ	सम्राट	साम्राज्ञी

आइए, पुनरावृति करें

- शब्दों का वह प्रकार जो पुरुष या स्त्री का ज्ञान कराता है, लिंग कहलाता है।
- लिंग के प्रकार–

लिंग
- पुल्लिंग (पुरुष का बोध) मोर, भील, पुरुष आदि
- स्त्रीलिंग (स्त्री का बोध) मोरनी, भीलनी, स्त्री आदि

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य — Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) लिंग किसे कहते हैं? बताइए।

(ख) लिंग के भेदों को परिभाषित कीजिए।

लेखन कार्य — Writing Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) लिंग किसे कहते हैं?

(ख) लिंग के कितने भेद होते हैं? किसी एक की परिभाषा दीजिए।

(ग) स्त्रीलिंग की परिभाषा देकर उदाहरण भी दीजिए।

2. दिए गए शब्दों के स्त्रीलिंग रूप बनाकर लिखिए।

बाबू	–	मोर	– ....
शिक्षक	–	बैल	– ....
पति	–	वीर	– ....

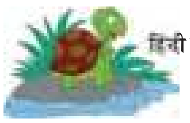

साधु	–	....	भाई	–	....
पुत्रवान	–	....	दयावान	–	....
पुजारी	–	....	स्वामी	–	....
नौकर	–	....	बनिया	–	....

3. दिए गए शब्दों के पुल्लिंग रूप बनाकर लिखिए।

नेत्री	–	....	रचयित्री	–	....
बुद्धिमती	–	....	ऊँटनी	–	....
देवरानी	–	....	सुनारिन	–	....
बछिया	–	....	थाली	–	....
हंसनी	–	....	रूपवती	–	....

4. दिए गए वाक्यों के लिंग बदलकर दोबारा लिखिए।

(क) गायकों ने सबको मंत्रमुग्ध कर दिया।

....

(ख) भारत में नेताओं का स्तर गिरता जा रहा है।

....

(ग) प्रधानाचार्य जी ने छात्राओं को पुरस्कार दिया।

....

(घ) लड़के ने एक वृद्धा को सड़क पार कराया।

....

(ङ) हमारे शिक्षक बड़े प्रतिभाशाली हैं।

....

5. दिए गए शब्दों के सही स्त्रीलिंग शब्द चुनिए।

(क) विद्वान–

☐ विद्वानी ☐ विद्यावती ☐ विदुषी ☐ विदूषकी

(ख) अभिमानी–

☐ अभिमान ☐ अभिमनी ☐ अभिवती ☐ अभिमानिनी

(ग) गायक–

☐ गायकी ☐ गायकि ☐ गायिका ☐ गायिक

6. दिए गए शब्दों के सही पुल्लिंग शब्द चुनिए–

(क) वीरांगना–

☐ वीराग ☐ अंगना ☐ वीर ☐ बहादुर

(ख) निर्मला–

☐ निर्मम ☐ नि:मल ☐ निमाल ☐ निर्मल

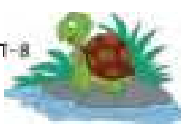

(ग) रुद्राणी–

☐ रुद्र ☐ रुद्राण ☐ प्राण ☐ रुद्रणी

(घ) दात्री–

☐ दात्र ☐ दात्रा ☐ दत्र ☐ दाता

सोचें-विचारें

Critical Thinking

7. हमारे समाज में स्त्री तथा पुरुषों के मध्य कुछ कार्यों को वर्गीकृत कर दिया है जिन्हें या तो लड़के कर सकते हैं या फिर लड़कियाँ। आप इस भेदभाव को दूर करने के लिए क्या प्रयास करेंगे? सोच-समझकर बताइए।

खेल-खेल में

Brain Storming Activity

8. कक्षा में छात्रों के दो समूह बनवाकर एक-एक से पुल्लिंग और उनके स्त्रीलिंग की नामाक्षरी का खेल खिलाएँ।
9. शिक्षिका/शिक्षक श्यामपट्ट पर कुछ नाम लिखकर या कुछ शब्द लिखकर छात्रों से उनके पुल्लिंग या स्त्रीलिंग पूछें।

प्रेरणादायक मूल्य

प्राचीन शास्त्रों में 'पुरुष' तथा स्त्री में भेदभाव को निषेधित किया गया है, इसलिए हमें भी दोनों के प्रति भेदभाव नहीं बरतना चाहिए।

वचन
(Number)

पढ़िए और समझिए

दिए गए चित्र देखिए और उनके नीचे लिखे वाक्य पढ़िए।

तोता बैठा है।

तोते बैठे हैं।

लड़की गाती है।

लड़कियाँ गाती हैं।

बच्चो! ऊपर के चित्रों में 'तोता' शब्द से 'एक तोते का', 'लड़की' शब्द से 'एक लड़की' होने का बोध हो रहा है। दूसरी ओर 'तोते' शब्द से 'एक से अधिक (अनेक) तोतों का' तथा 'लड़कियाँ' शब्द से 'एक से अधिक (अनेक) लड़कियों' के होने की जानकारी हो रही है। इसी एक या अनेक संख्या के बोध को **वचन** कहते हैं।

अत: हम कह सकते हैं कि–

संज्ञा शब्दों के जिस रूप से उसके एक या अनेक होने का पता चलता है, उसे वचन कहते हैं।

वचन के प्रकार–

वचन दो प्रकार के होते हैं– (क) एकवचन (ख) बहुवचन

(क) एकवचन– शब्द के जिस रूप से किसी एक व्यक्ति, पदार्थ, वस्तु आदि का बोध होता है, उसे एकवचन कहते हैं; जैसे–

मुरगा बाँग देता है।
चूहा दौड़ता है।
बछड़ा दूध पीता है।
चिड़िया चीं-चीं करती है।
बकरी मिमियाती है।

(ख) बहुवचन– शब्द के जिस रूप से किसी व्यक्ति, पदार्थ, वस्तु आदि के अनेक होने का बोध हो, उसे बहुवचन कहते हैं; जैसे–

मुरगियाँ अंडे दे रही हैं।
बछड़े उछल-कूद मचा रहे हैं।
बकरियाँ घास चर रही हैं।
कुत्ते भौंक रहे हैं।

वचन की पहचान–

कुछ संज्ञा शब्द ऐसे होते हैं, जो एकवचन तथा बहुवचन में एकसमान रहते हैं; जैसे–

कबूतर उड़ रहा है।	(क्रिया के प्रयोग से एकवचन)
कबूतर उड़ रहे हैं।	(क्रिया के प्रयोग से बहुवचन)
गायक गा रहा है।	(क्रिया के प्रयोग से एकवचन)
गायक गा रहे हैं।	(क्रिया के प्रयोग से बहुवचन)

सदा एकवचन रहने वाले शब्द –

कुछ संज्ञा शब्द ऐसे होते हैं, जिनका प्रयोग सदैव एकवचन में ही होता है; जैसे–

आज जनता जागरूक हो गई है।
शाम से ही पानी बरस रहा है।
सोना महँगा होता जा रहा है।
पहाड़ों पर आग लग गई है।

सदा बहुवचन रहने वाले शब्द

कुछ संज्ञा शब्द ऐसे होते हैं, जिनका प्रयोग सदैव बहुवचन में ही किया जाता है; जैसे–

साहब ने कागज़ पर हस्ताक्षर कर दिए हैं।
रचना की आँखों से आँसू निकलने लगे।
देखते-ही-देखते मानव के प्राण निकल गए।
हमने मंदिर में ईश्वर के दर्शन किए।
रीना के बाल झड़ने लगे।

कुछ शब्द ऐसे होते हैं, जिनका प्रयोग आदर प्रकट करने के लिए किया जाता है और वे बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं; जैसे–

पिता जी बाहर से आ गए हैं।
नेता जी भाषण दे रहे हैं।
हमने सारा कर्य कर दिया।
महामना जी ने अद्‌भुत कार्य किया है।

वचन-परिवर्तन–

1. अकारांत स्त्रीलिंग के शब्दों में अंतिम 'अ / ऊ' को 'एँ' करके–

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
दाल	दालें	गरदन	गरदनें
बोतल	बोतलें	धेनु	धेनुएँ
गेंद	गेंदे	आँख	आँखें

अध्यापन संकेत शिक्षक/शिक्षिका कक्षा में बच्चों को वचन की पहचान करना सिखाएँ साथ ही वचन के विभिन्न रूपों का वाक्यों में प्रयोग के तरीके बताएँ।

2. **आकारांत** स्त्रीलिंग के शब्दों के अंत में '**एँ**' जोड़ दिया जाता है–

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
पत्रिका	पत्रिकाएँ	शाखा	शाखाएँ
कविता	कविताएँ	कन्या	कन्याएँ
रचना	रचनाएँ	लेखिका	लेखिकाएँ

3. **आकारांत** पुल्लिंग के शब्दों के अंतिम '**आ**' को '**ए**' करके–

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
बस्ता	बस्ते	खंभा	खंभे
चरखा	चरखे	घड़ा	घड़े
चूहा	चूहे	पन्ना	पन्ने

4. **इया** अंत्य में '**या**' को '**इयाँ**' करके–

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
डिबिया	डिबियाँ	गुड़िया	गुड़ियाँ
खटिया	खटियाँ	चुटिया	चुटियाँ
चिड़िया	चिड़ियाँ	पुड़िया	पुड़ियाँ

5. **इकारांत** और **ईकारांत** शब्दों के अंत में '**या**' जोड़कर–

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
दवाई	दवाइयाँ	तितली	तितलियाँ
अच्छाई	अच्छाइयाँ	मछली	मछलियाँ
बुराई	बुराइयाँ	थाली	थालियाँ

6. कुछ अन्य शब्द जोड़कर–

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
कर्मचारी	कर्मचारीगण	पक्षी	पक्षीवृंद
अध्यापक	अध्यापकगण	गुरु	गुरुजन
मज़दूर	मज़ूदरवर्ग	छात्र	छात्रगण
नेता	नेतागण	गरीब	गरीबलोग

आइए, पुनरावृति करें

- **वचन**– संज्ञा की संख्या बताने वाले शब्द वचन कहलाते हैं।
- वचन दो प्रकार के होते हैं–

वचन

एकवचन (एक संख्या का बोध)

बहुवचन (एक से अधिक संख्या का बोध)

- वचन का परिवर्तन भी अनेक प्रकार से किया जाता है।

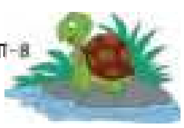

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य

Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) वचन के भेद बताइए।

(ख) संस्कृत भाषा में वचनों को कितने भागों में विभक्त किया गया है? बताइए।

लेखन कार्य

Writing Skills

1. **दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**

   (क) वचन किसे कहते हैं? परिभाषा एवं उदाहरण दीजिए।

   (ख) एकवचन की परिभाषा उदाहरण सहित दीजिए।

2. **दिए गए शब्दों के बहुवचन रूप लिखिए।**

एकवचन		बहुवचन	एकवचन		बहुवचन	एकवचन		बहुवचन
रीति	–	....	तितली	–	....	नेता	–	....
धेनु	–	....	गुरु	–	....	महिला	–	....

3. **दिए गए शब्दों के एकवचन रूप लिखिए।**

बहुवचन		एकवचन	बहुवचन		एकवचन	बहुवचन		एकवचन
वर्षों	–	....	शहनाइयाँ	–	....	कहानियाँ	–	....
अदालतें	–	....	चिड़ियाँ	–	....	चुहियाँ	–	....

4. **दिए गए वाक्यों के परिवर्तित वचनों तक रेखा खींचकर मिलाइए।**

(क)	चिड़िया	(i)	छात्र
(ख)	कवयित्री	(ii)	अध्यापक
(ग)	पीला	(iii)	पाठिकाएँ
(घ)	कन्या	(iv)	दवाइयाँ
(ङ)	छात्रगण	(v)	कन्याएँ
(च)	अध्यापकवृंद	(vi)	पीले
(छ)	दवाई	(vii)	चिड़ियाँ
(ज)	पाठिका	(viii)	कवयित्रियाँ

सोचें-विचारें

Critical Thinking

5. **जब हम किसी प्रमुख शब्द का बहुवचन बनाते हैं, तो 'वृंद', 'गण', 'वर्ग' शब्दों का प्रयोग करते हैं। क्या आप इन शब्दों में अंतर जानते हैं? सोच-समझकर बताइए।**

खेल-खेल में

Brain Storming Activity

6. **कक्षा में लड़कियों से स्त्रीलिंग वाले संज्ञा शब्द बुलवाएँ और लड़कों से पुल्लिंग में वचन बदलवाएँ।**

प्रेरणादायक मूल्य

वचन के प्रयोग से पर्यावरण की प्रचुरता तथा विविधता देखने का प्रयास करें, इससे विद्यालय के भीतरी तथा बाहरी शिक्षा को अपनाने में सहायता मिलती है।

सर्वनाम
(Pronoun)

पढ़िए और समझिए

दिए गए चित्र देखिए और उनके नीचे लिखे वाक्य पढ़िए।

नेहा, नेहा की मम्मी के साथ मॉल घूमने गई है। मॉल में नेहा नेहा की मम्मी की उँगली पकड़े है। मॉल में खिलौने, कपड़े, पुस्तकें, जूतें आदि की दुकानें सजी हैं। नेहा को नेहा की मम्मी ने जूते दिलवाए। नेहा की मम्मी ने नेहा के लिए किताबें खरीदीं।

अब इसे पढ़िए–

नेहा अपनी मम्मी के साथ मॉल घूमने गई है। मॉल में वह अपनी मम्मी की उँगली पकड़े है। वहाँ खिलौने, कपड़े, पुस्तकें, जूते आदि की दुकानें सजी हैं। उसको उसकी मम्मी ने जूते दिलवाए। उसके लिए उन्होंने किताबें खरीदीं।

आपने देखा कि यहाँ 'नेहा' और 'नेहा की मम्मी' के लिए वह, अपनी, उसको, उसकी, उन्होंने शब्दों का प्रयोग किया गया है। इससे भाषा सुंदर बन जाती है। ये सभी शब्द संज्ञा के बदले उसके स्थान पर प्रयोग किए गए हैं। अतः हम कह सकते हैं कि–

संज्ञा के बदले बोले जाने वाले या संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त किए जाने वाले सभी शब्द समूह सर्वनाम कहलाते हैं।

सर्वनाम के भेद

सर्वनाम छह प्रकार के होते हैं–

1. पुरुषवाचक सर्वनाम
2. निश्चयवाचक सर्वनाम
3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम
4. संबंधवाचक सर्वनाम
5. प्रश्नवाचक सर्वनाम
6. निजवाचक सर्वनाम

1. **पुरुषवाचक सर्वनाम–** जो सर्वनाम शब्द बोलने वाले, सुनने वाले और जिसके विषय में कहा जाए, उसके लिए प्रयोग में लाए जाते हैं, उन्हें पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं।

पुरुषवाचक सर्वनाम के भेद–

(क) उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम– ऐसे सर्वनाम शब्द जिनका प्रयोग बोलने वाला और लिखने वाला अपने लिए करता है, उसे उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम शब्द कहते हैं; जैसे– मैं, हम, मुझे, हमने, हमें आदि।

(ख) मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम– ऐसे सर्वनाम शब्द जिनका प्रयोग सुनने वाले के लिए किया जाता है, उसे मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम कहते है; जैसे– तुम्हें, तुम, आप, आप लोग, तू आदि।

(ग) अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम– ऐसे सर्वनाम शब्द का प्रयोग वक्ता या श्रोता द्वारा किसी अन्य व्यक्ति के लिए प्रयोग किया जाता है, इसे अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे– वह, वे, उन्होंने आदि।

2. **निश्चयवाचक सर्वनाम–** ऐसे सर्वनाम शब्द जो दूर या पास के व्यक्तियों, प्राणियों, वस्तुओं और घटनाओं का निश्चित बोध कराते हैं, उन्हें निश्चयवाचक सर्वनाम शब्द कहते हैं; जैसे–

वह घर मेरा है।

यह बोतल तुम्हारी है।

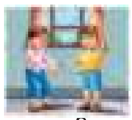

इसे संकेतवाचक सर्वनाम भी कहते हैं।

3. **अनिश्चयवाचक सर्वनाम–** ऐसे सर्वनाम शब्द जिनसे किसी निश्चित व्यक्ति या वस्तु की जानकारी नहीं मिलती है, उसे अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे–

बाहर कोई आवाज़ लगा रहा है।

माता जी कुछ बना रही हैं।

4. **संबंधवाचक सर्वनाम–** ऐसे सर्वनाम शब्द जो वाक्य में प्रयुक्त किसी अन्य सर्वनाम के साथ अपना संबंध बताते हैं, उन्हें संबंधवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे–

जैसा बोओगे, वैसा काटोगे।

जो खेल दिखा रहा था, वह चला गया।

जिसने चोरी की, वह पकड़ा गया।

5. **प्रश्नवाचक सर्वनाम–** ऐसे सर्वनाम शब्द जो किसी व्यक्ति, वस्तु, प्राणी आदि के बारे में प्रश्न का बोध करवाते हैं, उन्हें प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे–

कक्षा में किसे पुरस्कार मिला?

आज घर पर कौन आया था?

किसने चोरी की है?

6. **निजवाचक सर्वनाम–** ऐसे सर्वनाम शब्द जिनका प्रयोग कर्ता के साथ अपनापन जताने के लिए किया जाता है, उसे निजवाचक सर्वनाम शब्द कहते हैं; जैसे–

मैं स्वयं गाड़ी चलाऊँगा।

मैं अपना काम अपने-आप कर लूँगा।

वह खुद चला जाएगा।

अब आइए, सर्वनाम शब्दों की रूप-रचना के बारे में जानें–

मैं (उत्तम-पुरुष) पुरुषवाचक सर्वनाम

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	मैं, मैंने	हम, हमने, हम लोगों ने
कर्म	मुझे, मुझको	हमें, हमको, हम लोगों को
करण	मुझसे, मेरे द्वारा	हमसे, हमारे द्वारा, हम लोगों से
संप्रदान	मुझे, मुझको, मेरे लिए	हमको, हमारे लिए, हमें
अपादान	मुझसे	हमसे, हम लोगों से
संबंध	मेरा, मेरी, मेरे	हमारा, हमारे, हमारी
अधिकरण	मुझमें, मुझ पर	हममें, हमपर

तू (मध्यम-पुरुष) पुरुषवाचक सर्वनाम

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	तूने, तू	तुम, हम लोग, तुमने
कर्म	तुझे, तुझको	तुमको, तुम्हें, तुम लोगों को
करण	तुझसे, तेरे द्वारा	तुमसे, तुम्हारे द्वारा, तुम लोगों के द्वारा
संप्रदान	तुझे, तेरे लिए	तुम्हें, तुम्हारे लिए, तुम लोगों के लिए
अपादान	तुमसे	तुमसे, तुम लोगों से
संबंध	तेरे, तेरा, तेरी	तुम्हारा, तुम्हारे, तुम्हारी
अधिकरण	तुझमें, तुझपर	तुममें, तुमपर

वह (अन्य पुरुष) पुरुषवाचक सर्वनाम

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	वह, उसने	उन्होंने, वे, वे लोग, उन लोगों ने
कर्म	उसे, उसको	उन्हें, उनको, उन लोगों को
करण	उससे, उसके द्वारा	उनसे, उनके द्वारा, उन लोगों के द्वारा
संप्रदान	उसे, उसके लिए	उन्हें, उनके लिए
अपादान	उससे	उनसे, उन लोगों से
संबंध	उसका, उसके, उसकी	उनका, उनके, उनकी, उन लोगों की/का/के
अधिकरण	उसमें, उस पर	उन पर, उनमें, उन लोगों में, उन लोगों पर

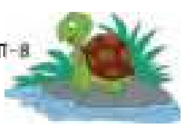

यह (निश्चयवाचक सर्वनाम शब्द)

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	यह, इसने	ये, इन्होंने, इन लोगों ने
कर्म	इस, इसको	इन्हें, इनको, इन लोगों को
करण	इससे, इसके द्वारा	इनसे, इनके द्वारा, इन लोगों से
संप्रदान	इसको, इसके लिए	इन्हें, इनके लिए, इन लोगों के लिए
अपादान	इससे	इनसे, इन लोगों से
संबंध	इसका, इसके, इसकी	इनका, इनकी, इनके, इन लोगों का/की/के
अधिकरण	इसमें, इस पर	इनमें, इन पर, इन लोगों में, इन लोगों पर

कोई (अनिश्चयवाचक सर्वनाम)

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	कोई, किसी	किन्हीं ने
कर्म	किसी को	किन्हीं को
करण	किसी से, किसी के द्वारा	किन्हीं से, किन्हीं के द्वारा
संप्रदान	किसी को, किसी के लिए	किन्हीं को, किन्हीं के लिए
अपादान	किसी से	किन्हीं से
संबंध	किसी का, किसी के, किसी की	किन्हीं का, किन्हीं के, किन्हीं की
अधिकरण	किसी में, किसी पर	किन्हीं में, किन्हीं पर

कौन (प्रश्नवाचक सर्वनाम)

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	कौन, किसने	किन्होंने, किन लोगों ने
कर्म	किसे, किसको	किन्हें, किनको, किन लोगों को
करण	किससे, किसके द्वारा	किनके, किनके द्वारा, किन लोगों से
संप्रदान	किसको, किसके लिए	किनको, किनके लिए, किन लोगों के लिए
अपादान	किससे	किनसे, किन लोगों से
संबंध	किसका, किसके, किसकी	किनका, किनके, किनकी, किन लोगों का/के/की
अधिकरण	किसमें, किसपर	किनमें, किनपर, किन लोगों में, किन लोगों पर

अध्यापन संकेत

शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को सर्वनाम तथा उसके भेदों के बारे में बताएँ तथा उन्हें उचित रूप से अनुवादित करके उदहरणों के साथ समझाएँ।

आइए, पुनरावृति करें

- संज्ञा के बदले जो शब्द प्रयोग किए जाते हैं, उन्हें सर्वनाम कहते हैं।
- सर्वनाम के छह भेद होते हैं।
- पुरुषवाचक सर्वनाम के तीन उपभेद होते हैं– उत्तमपुरुष, मध्यमपुरुष, अन्य पुरुष

सर्वनाम के भेद

- **पुरुषवाचक** (मैं, तुम, वह, वे)
- **निश्चयवाचक** (वह, यह, वो)
- **अनिश्चयवाचक** (कोई, कुछ)
- **संबंधवाचक** (जो-सो, जिसने-उसने)
- **प्रश्नवाचक** (किसने, किसे, कौन)
- **निजवाचक** (खुद, स्वयं, स्वतः, अपने आप)

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य

Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) सर्वनाम से आप क्या समझते हैं? बताइए।

(ख) सर्वनाम के प्रकार बताइए।

(ग) प्रश्नवाचक सर्वनाम को परिभाषित कीजिए।

लेखन कार्य

Writing Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) सर्वनाम किसे कहते हैं?

(ख) सर्वनाम कितने प्रकार के होते हैं?

(ग) पुरुषवाचक सर्वनाम के कितने भेद होते हैं?

2. दिए गए वाक्यों में सर्वनाम शब्दों को रेखांकित करके भेद का नाम लिखिए।

(क) जो जैसा करेगा, वह वैसा फल पाएगा। ....

(ख) देखो, दरवाज़े पर कोई आया है। ....

(ग) बिल्ली रोटी लेकर अपने-आप चली गई। ....

(घ) मेरा बस्ता किसने उधर रख दिया? ....

(ङ) यह कार मेरी है। ....

(च) दाल में कुछ मिलावट की गई है। ....

(छ) जिसने पढ़ाई की, वही पास हुआ। ....

3. **सही सर्वनाम शब्दों के साथ रेखा खींचकर मिलाइए।**

(तुम, तुम्हें, आप)	उत्तम पुरुषवाचक	यह, वह)
	प्रश्नवाचक	
(जैसा, वैसा)	निजवाचक	
	संबंधवाचक	(खुद, स्वत:)
(कोई, कुछ)	निश्चयवाचक	
	अनिश्चयवाचक	(किसने, किसे, कौन)
(मैं, मैंने, हम)	मध्यम पुरुषवाचक	

4. **निम्नलिखित वाक्यों में रंगीन सर्वनाम शब्दों के उचित भेद चुनिए।**

(क) यह नंदन का घर है।

☐ संबंधवाचक ☐ अनिश्चयवाचक ☐ निश्चयवाचक ☐ निजवाचक

(ख) दूध में कुछ गिर गया है।

☐ निश्चयवाचक ☐ निजवाचक ☐ प्रश्नवाचक ☐ अनिश्चयवाचक

(ग) कान्हा कहाँ खेलने गया है?

☐ निश्चयवाचक ☐ प्रश्नवाचक ☐ निजवाचक ☐ संबंधवाचक

(घ) मैं स्वयं चलकर आया हूँ।

☐ निश्चयवाचक ☐ अनिश्चयवाचक ☐ संबंधवाचक ☐ निजवाचक

सोचें-विचारें

Critical Thinking

5. **ऐसे सर्वनाम शब्द जो पास या दूर की घटनाओं का बोध कराने वाले शब्दों को अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते है, तो ज़रा सोचिए यदि निश्चयवाचक सर्वनाम नहीं होते तो हम अपनी बात या वस्तु की सत्यता कैसे बताते?**

खेल-खेल में

Brain Storming Activity

6. **कक्षा में सर्वनाम शब्दों की शब्दाक्षरी का खेल खिलवाएँ।**

प्रेरणादायक मूल्य

जैसे सर्वनाम शब्दों के माध्यम से संज्ञा शब्दों की पहचान होती है, वैसे ही इंसान की पहचान भी उसके किसी खास गुण से होती है, जो उसके व्यक्तित्व को निखारता है।

अध्याय 8

विशेषण (Adjective)

पढ़िए और समझिए

दिए गए चित्र देखिए और चित्र के नीचे लिखे वाक्यों को पढ़िए। वाक्यों में आए रंगीन शब्दों पर ध्यान दीजिए।

नवयुग मेला देखने गया है। उसके घर से मेला दस किलोमीटर दूर है। वह अपने माता-पिता के साथ अपनी नई कार से गया है। नवयुग की कार का रंग नीला है। मेले में बड़ी सुंदर चीज़ें बिक रही थीं। उसने पके फल खरीदे। स्वादिष्ट मिठाइयाँ खरीदी। नए-नए स्वेटर खरीदे। गर्म काफ़ी पी और कुछ खेल खेले। शाम को वह खुशी से घर वापस आ गया।

बच्चो! आपने देखा कि ऊपर के वाक्यों में आए रंगीन शब्द– दस किलोमीटर, नई, नीला, सुंदर, पके, स्वादिष्ट, नए-नए, गर्म, कुछ, खुशी वाक्य में आए संज्ञा शब्द– नवयुग, दूरी, कार, चीज़ें, फल, मिठाइयाँ, स्वेटर, कॉफी, खेल, नवयुग की विशेषता बता रहे हैं। अतएव संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की विशेषता बताने वाले सभी शब्द विशेषण कहलाएँगे। अत: हम यह भी कह सकते हैं कि–

जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता (गुण, मात्रा या परिमाण), संख्या (निश्चित या अनिश्चित) आदि का बोध कराते हैं, वे विशेषण कहलाते हैं।

यहाँ दो शब्दों पर ध्यान देना आवश्यक है–

(क) **विशेष्य –** जिसकी विशेषता बताई जाए।

(ख) **विशेषण –** किसी संज्ञा/सर्वनाम की जो विशेषता बताई जाए; जैसे–

राम आज्ञाकारी बालक है।

↓ ↓

विशेष्य विशेषण

विशेषण के भेदः

हिंदी भाषा में विशेषण चार प्रकार के होते हैं–

1. गुणवाचक 2. संख्यावाचक 3. परिमाणवाचक 4. सार्वनामिक।

1. गुणवाचक विशेषणः ऐसे विशेषण शब्द जो संज्ञा अथवा सर्वनाम के गुणों (रूप-रंग, आकार-प्रकार, अवस्था, दशा, देश, काल, स्वाद, गंध, गुण, दोष आदि को बताते हैं, वे गुणबोधक विशेषण कहलाते हैं; जैसे–

कमरे में सफ़ेद बत्ती जल रही है।

विद्‌यालय के कमरे बहुत बड़े हैं।

क्यारियों में लाल-पीले गुलाब खिले हैं।

कॉलेज की सायंकालीन कक्षाएँ चल रही हैं।

हमारे घर शुद्ध घी निकाला जाता है।

अब आइए, गुणवाचक विशेषण के कुछ और शब्द जानते हैं–

गुणः योग्य, मेहनती, ईमानदार, पराक्रमी आदि।

स्वाद-गंधः मीठा, तीखा, खुशबूदार, चरपरा, नमकीन आदि।

आकार-प्रकारः मोटा, पतला, दुबला, गोलाकार, त्रिकोण आदि।

दोषः खर्चीला, दुष्ट, पापी, चोर, आलसी, अयोग्य आदि।

स्थितिः ऊपरी, निचला, बाहरी, भीतरी, अगला, पिछला आदि।

रंग-रूपः सुनहरी, काली, गोरा, सफ़ेद, चमकीली, मैली आदि।

स्थान-देशकालः ग्रामीण, शहरी, मणिपुरी, भारतीय, अमेरिकी आदि।

दशा-अवस्थाः पतला, गाढ़ा, गीला, सूखा, स्वस्थ, कमज़ोर आदि।

विशेषः गुणवाचक विशेषण की पहचान करते समय विशेषण के साथ कैसा/कैसी प्रश्न करने पर जो उत्तर मिलता है, वह गुणवाचक विशेषण होता है; जैसे–

कैसी यात्रा? **उत्तर**– मनोरंजक।

कैसा फूल? **उत्तर**– लाल फूल, महकने वाला।

कैसा वृक्ष? **उत्तर**– फलदार।

कैसी अध्यापिका? **उत्तर**– सुंदर, योग्य।

कैसा जल? **उत्तर**– गर्म जल।

कैसा आम? **उत्तर**– लँगड़ा आम।

2. **संख्यावाचक विशेषण:** ऐसे शब्द जो विशेष्य (संज्ञा या सर्वनाम) की संख्या से संबंधित विशेषता बताते हैं, उन्हें संख्यावाचक विशेषण कहते हैं; जैसे–

पिता जी एक कैरेट अंडे ले आए।

मैं आठवीं कक्षा में पढ़ता हूँ।

मैदान में चार बकरियाँ चर रही हैं।

सड़क पर हज़ारों किसान धरना दे रहे हैं।

संख्यावाचक विशेषण में संख्या की निश्चितता और अनिश्चितता के कारण इसके दो भेद माने गए हैं–

(क) निश्चित संख्यावाचक विशेषण: निश्चित संख्या का बोध कराने वाले विशेषण शब्द निश्चित संख्यावाचक विशेषण कहलाते हैं; जैसे–

हमारे विद्यालय में पचास कमरे हैं।

पिता जी दो दर्जन केले ले आए हैं।

हमारे घर से चौथी दुकान चाचा जी की है।

निश्चित संख्यावाचक विशेषण शब्द भी कई तरह के होते हैं; जैसे–

क्रमवाचक : आठवीं, सातवीं, दूसरा व्यक्ति, चौथा छात्र आदि।

समुदायवाचक : तीनों सदस्य, पाँचों भाई, दोनों बहनें आदि।

गणनावाचक : एक दर्जन अंडे, सात घोड़े, तीन गायें आदि।

आवृतिवाचक : दोहरा लाभ, दोहरा बदन, तिगुनी शक्ति आदि।

(ख) अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण: ऐसे विशेषण शब्द जो विशेष्य (संज्ञा या सर्वनाम) की अनिश्चित संख्या का बोध कराते हैं, वे अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण कहलाते हैं; जैसे–

अनेक व्यक्ति इकट्ठे थे।

मेले में बहुत-सी दुकानें लगी हैं।

चलो, कुछ मीठा हो जाए।

3. **परिमाणवाचक विशेषण:** जो शब्द विशेष्य (संज्ञा या सर्वनाम) के परिमाण अथवा माप-तौल की जानकारी देते हैं, उन्हें परिमाणवाचक विशेषण शब्द कहते हैं; जैसे–

चाय में चीनी थोड़ी कम डालो।

आज माता जी दो किलो आम ले आई हैं।

ज्यादा मीठा नहीं खाना चाहिए।

परिमाणवाचक विशेषण भी दो प्रकार के होते हैं–

(क) निश्चित परिमाणवाचक: ऐसे विशेषण शब्द जो निश्चित परिमाण या मात्रा की जानकारी देते हैं, वे निश्चित परिमाणवाचक विशेषण कहलाते हैं; जैसे–

हमारे घर तीन लीटर दूध रोज़ आता है।

माता जी दो नए कपड़े लेकर आईं।

पिता जी पूजा के लिए पाँच मीटर कपड़ा ले आए।

फलवाले ने दो किलो आम दिए।

(ख) अनिश्चित परिमाणवाचक शब्द: ऐसे विशेषण शब्द जो अपने विशेष्य (संज्ञा या सर्वनाम) के निश्चित परिमाण का बोध नहीं कराते हैं, वे अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण कहलाते हैं; जैसे–

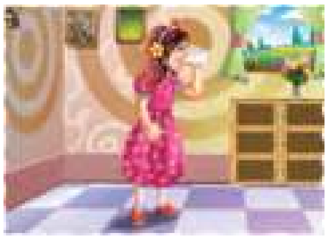

अधिकांश लोग कम पानी पीते हैं।

मुझे थोड़े-से चावल दे दो।

बाज़ार से जाकर कुछ सब्ज़ियाँ ले आनी हैं।

अनिश्चित संख्यावाचक और अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण में अंतर

आज कक्षा में कुछ छात्र नहीं आए हैं। (अनिश्चित संख्यावाचक)

महात्मा जी आए हैं, इन्हें कुछ फल खाने को दे दो। (अनिश्चित परिमाणवाचक)

4. सार्वनामिक विशेषण: जब सर्वनाम शब्दों का प्रयोग संज्ञा की विशेषता बताने के लिए किया जाता है, तो उसे सार्वनामिक विशेषण कहते हैं; जैसे–

यह बस्ता उसका है।

वह घर मेरा है।

बाहर कोई आदमी बुला रहा है।

सर्वनाम और सार्वनामिक विशेषण में अंतर

सर्वनाम	सार्वनामिक विशेषण
वह विद्यालय जा रहा है।	वह विद्यालय हमारा है।
यह पुस्तक है।	यह पुस्तक मेरी है।
कुछ लोग हमारे घर आए हैं।	उसे खाने को कुछ फल दे दो।

विशेषण की अवस्थाएँ

विशेषण शब्दों की तीन अवस्थाएँ होती हैं–

(क) मूलावस्था– यह किसी वस्तु के गुण की मूलावस्था होती है, जो सामान्य गुण होता है; जैसे–

माधुरी सुंदर है। कठोर, तीव्र आदि अन्य शब्द हैं।

(ख) उत्तरावस्था– जहाँ दो वस्तुओं के बीच तुलना की जाती है और उनमें से किसी एक को दूसरे से बेहतर बताया जाता है; जैसे– अपराजिता नयनी से सुंदरतर है।

उत्तरावस्था व्यक्त करने के लिए सामान्य गुण वाले शब्दों के अंत में 'तर' लगा दिया जाता है।

(ग) उत्तमावस्था– जब कभी दो से अधिक व्यक्तियों या वस्तुओं के बीच तुलना की जाती है, तो सर्वाधिक श्रेष्ठ या उत्तम बताने के लिए विशेषण शब्द की उत्तमावस्था का प्रयोग किया जाता है। शब्द के अंत में 'तम' जोड़ दिया जाता है। जैसे– सभी लड़कियों में स्नेहा सुंदरतम है।

तीनों अवस्थाओं का स्वरूप इस प्रकार होता है–

मूलावस्था	उत्तरावस्था	उत्तमावस्था
श्रेष्ठ	श्रेष्ठतर	श्रेष्ठतम
सुंदर	सुंदरतर	सुंदरतम
तीव्र	तीव्रतर	तीव्रतम
लघु	लघुतर	लघुतम
प्रिय	प्रियतर	प्रियतम
कठिन	कठिनतर	कठिनतम
सरल	सरलतर	सरलतम
मधुर	मधुरतर	मधुरतम
महान	महानतर	महानतम
गुरु	गुरुतर	गुरुतम

प्रविशेषण: ऐसे शब्द जो विशेषण शब्दों की भी विशेषता बताते हैं, उन्हें प्रविशेषण कहते हैं; जैसे–

मोहन बहुत तेज़ दौड़ता है।

आज अत्यधिक परीश्रमी व्यक्ति सफल हो रहे हैं।

कुछ लोग बड़े मेहनती होते हैं।

विशेषण शब्दों की रूप-रचना

विशेषण शब्दों की रचना संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया तथा अव्यय शब्दों द्वारा की जाती है–

(क) संज्ञा शब्दों द्वारा विशेषण शब्दों की रचना–

संज्ञा शब्द	विशेषण शब्द	संज्ञा शब्द	विशेषण शब्द
लोक	लौकिक	अर्थ	आर्थिक
अध्यात्म	आध्यात्मिक	अंत	अंतिम
सुख	सुखी	आलस्य	आलसी
शर्म	शर्मीला/शर्मीली	धन	धनी
स्वर्ण	स्वर्णिम	गुलाब	गुलाबी
शहर	शहरी	लाल	लालिमा
ग्राम	ग्रामीण	ठंड	ठंडा
भारत	भारतीय	नमक	नमकीन
रंग	रंगीन	शौक	शौकीन

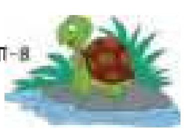

संज्ञा शब्द	विशेषण शब्द	संज्ञा शब्द	विशेषण शब्द
चीन	चीनी	प्यास	प्यासा
अमेरिका	अमेरिकी	ईमानदारी	ईमानदार
पुस्तक	पुस्तकीय	पत्थर	पथरीला
सुर	सुरीला	चमक	चमकीला
वेद	वैदिक	गुण	गुणी
मिठाई	मीठा	चाचा	चचेरा
समाज	सामाजिक	मामा	ममेरा
स्वाद	स्वादिष्ट	फूफा	फुफेरा
राष्ट्र	राष्ट्रीय	जाति	जातीय
स्थान	स्थानीय	नीति	नैतिक
रेत	रेतीला	कृपा	कृपालु
शब्द	शाब्दिक	कुल	कुलीन
हृदय	हार्दिक	काँटा	कँटीला
विष	विषैला	उदास	उदासी
कागज़	कागज़ी	इतिहास	ऐतिहासिक
मर्म	मार्मिक	भूगोल	भौगोलिक
धर्म	धार्मिक	पिता	पैतृक
राजनीति	राजनीतिक	ज्ञान	ज्ञानी
श्रम	श्रमिक	वर्ष	वार्षिक

(ख) सर्वनाम शब्दों से विशेषणों की रचना–

सर्वनाम	विशेषण	सर्वनाम	विशेषण
वह	वैसा	हम	हमारा
जो	जैसा	तुम	तुम्हारा
मैं	मेरा	यह	ऐसा
आप	आप जैसा/आपसी	कौन	कैसा

(ग) क्रिया शब्दों से विशेषण शब्दों की रचना–

क्रिया	विशेषण	क्रिया	विशेषण
भूलना	भुलक्कड़	लिखना	लिखावट
देखना	दिखावटी	पढ़ना	पढ़ाकू
बनाना	बनावटी	भागना	भगोड़ा
कमाना	कमाऊ	हँसना	हँसोड़

अध्यापन संकेत शिक्षक/शिक्षिका कक्षा में बच्चों को विशेषण शब्दों को वाक्य-रचना के आधार पर समझाएँ साथ ही उसके भेदों को विस्तारपर्वूक स्पष्ट करें।

(घ) अव्यय शब्दों से विशेषण शब्दों की रचना–

अव्यय	विशेषण	अव्यय	विशेषण
भीतर	भीतरी	पीछे	पिछला
ऊपर	ऊपरी	आगे	अगला
नीचे	निचला	दाएँ	दाहिना
बाहर	बाहरी	बाएँ	बायाँ

आइए, पुनरावृति करें

- जो शब्द विशेष्य (संज्ञा या सर्वनाम) की विशेषता बताता है, उसे विशेषण कहते हैं।
- विशेषण की तीन अवस्थाएँ होती हैं– मूलावस्था, उत्तरावस्था तथा उत्तमावस्था।
- अनेक शब्दों से विशेषण शब्दों की रचना की जाती है।
- विशेषण के चार भेद होते हैं–

विशेषण

गुणवाचक विशेषण	संख्यावाचक विशेषण	परिमाणवाचक विशेषण	सार्वनामिक विशेषण
(रंग-रूप, आकार-प्रकार, स्वाद-गंध, गुण-दोष)	(अनेक, प्रथम आदि) 1. निश्चित संख्या 2. अनिश्चित संख्या (थोड़े, कुछ, हजारों)	(मात्रा-2 किलो, 1 लीटर आदि) 1. निश्चित परिमाण 2. अनिश्चित परिमाण	(वह घर, यह पुस्तक आदि)

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य

Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) 'राम बहुत तेज़ दौड़ता है' इस वाक्य में रेखांकित शब्द क्या दर्शाता है?

(ख) विशेषण की कितनी अवस्थाएँ होती हैं?

लेखन कार्य

Writing Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) विशेषण की परिभाषा और उदाहरण दीजिए।

(ख) विशेषण के भेदों के नाम लिखकर किसी एक की परिभाषा लिखकर बताइए।

(ग) किन-किन शब्दों से विशेषण शब्द बनाए जाते हैं?

2. **दिए गए वाक्यों में विशेषण शब्दों के नीचे रेखा खींचकर उसके भेद का नाम लिखिए।**

(क) सोना एक <u>चमकीली</u> धातु है। ....गुणवाचक............

(ख) तोते की चोंच लाल है। ....

(ग) आसमान में काले बादल छाए हैं। ....

(घ) आज तेज़ धूप निकली है। ....

(ङ) कोई आदमी हमारे घर आया है। ....

(च) कुछ फल मुझे भी चाहिए। ....

(छ) दो दर्जन केले खरीदे गए हैं। ....

(ज) निरंजना बड़ी चटोरी है। ....

3. **दिए गए शब्दों से विशेषण शब्द बनाकर लिखिए।**

यह	–	भूगोल	– ....
ज्ञान	–	राजनीति	– ....
मिठाई	–	शर्म	– ....
विष	–	खर्च	– ....
सुर	–	शहर	– ....
पाप	–	नगर	– ....
कमाना	–	भारत	– ....
पढ़ना	–	कागज़	– ....
स्वाद	–	तीन	– ....
श्रम	–	पत्थर	– ....
भूल	–	नमक	– ....

4. **दिए गए शब्दों में से सही विशेषण शब्द को चुनिए।**

नीति–

☐ (क) नीतिकुशल ☐ (ख) नीतिक ☐ (ग) नीति–मीति ☐ (घ) नितिक

सम्मान–

☐ (क) ससम्मान ☐ (ख) सम्मानित ☐ (ग) समानित ☐ (घ) सम्माननीय

गर्व–

☐ (क) गर्वीला ☐ (ख) गर्विला ☐ (ग) गर्वन्वित ☐ (घ) गर्व–गर्व

बुद्धि–

☐ (क) बुद्धी ☐ (ख) बुद्धिमान ☐ (ग) बुद्धिमती ☐ (घ) ख एवं ग

5. **दिए गए वाक्यों में से प्रविशेषण शब्द छाँटकर लिखिए।**

(क) आज बहुत तेज धूप निकली है।

(ख) रंजना बहुत समझदार लड़की है।

(ग) खली अधिक बलवान है।

(घ) सुनंदा तो बड़ी मूर्ख है।

(ङ) यह मिठाई तो बड़ी स्वादिष्ट है।

(च) नंदन सबसे तेज़ छात्र है।

सोचें-विचारें

Critical Thinking

6. विशेषण को आधार बनाते हुए कुछ ऐसे शब्दों का चयन कीजिए जो किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व को बेहतर तरीके से दर्शाता है? सोचकर बताइए।

खेल-खेल में

Brain Storming Activity

7. दी गई शब्द-पहेली में से विशेषण शब्द चुनकर लिखिए।

मू	र्ख	ब	ल	शा	ली
द	या	लु	यो	ग्य	शा
ई	ग	पा	पी	च	ग्य
मा	र्वी	कृ	ड़ि	म	भा
न	ला	कृ	त	त्का	शौ
दा	म	धु	र	री	की
र		बु	द्धि	मा	न

प्रेरणादायक मूल्य

विशेषण के विभिन्न प्रकारों के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि व्यक्ति में भी विभिन्न प्रकार के गुण होते हैं, जिन्हें केवल निखारने की ज़रूरत है। उन गुणों का सही प्रयोग व्यक्ति को बेहतर बनाएगा और समाज तथा मूल्य निर्माण में सहायक होगा।

अध्याय 9

क्रिया (Verb)

पढ़िए और समझिए

दिए गए चित्रों के नाम पढ़िए और ध्यान दीजिए–

बच्चे खेल रहे हैं।

तोते उड़ रहे हैं।

अध्यापिका पढ़ा रही हैं।

बच्चो! ऊपर के वाक्यों में 'खेल रहे हैं', 'उड़ रहे हैं', 'पढ़ा रही हैं' से कर्ता द्वारा कार्य करने या होने का बोध हो रहा है, अतएव ये सब क्रिया शब्द हैं। अत: हम यह भी कह सकते हैं कि–

ऐसे शब्द जिनसे पता चलता है कि कोई कार्य हो रहा है या किया जा रहा है, तो उसे क्रिया कहते हैं।

क्रिया शब्द मूल धातु में 'ना' जोड़कर बनाए जाते हैं।

जैसे–

चल	+	ना	=	चलना	पढ़	+	ना	=	पढ़ना
देख	+	ना	=	देखना	सो	+	ना	=	सोना
आ	+	ना	=	आना	जा	+	ना	=	जाना
हँस	+	ना	=	हँसना	उड़	+	ना	=	उड़ना

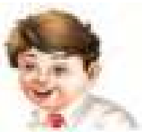

अब आइए, क्रिया के भेदों के बारे में जानें–

क्रिया के भेद

क्रिया के भेद दो आधारों पर निश्चित किए जाते हैं–

(1) कर्म के आधार पर (2) रचना के आधार पर।

1. **कर्म के आधार पर क्रिया के दो भेद होते हैं–** सकर्मक क्रिया तथा अकर्मक क्रिया।

(*i*) **सकर्मक क्रिया–** जिस क्रिया में कर्म की आवश्यकता होती है और क्रिया का फल कर्म पर पड़ता है; उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं; जैसे–

माता जी खाना बना रही हैं।

दरज़ी कपड़े सिल रहा है।

सोनू कार चला रहा है।

इन वाक्यों में आई क्रियाओं का फल कर्ता पर न पड़कर केवल कर्म पर पड़ रहा है, इसलिए ये सब क्रियाएँ सकर्मक कहलाती हैं।

सकर्मक क्रिया की पहचान

सकर्मक क्रिया की पहचान के लिए वाक्य की क्रिया से पहले क्या, किसे, किसको आदि लगाकर प्रश्न करने पर यदि उत्तर मिलता है, तो सकर्मक क्रिया होती है। यदि कोई उत्तर नहीं मिलता है, तो वह अकर्मक क्रिया होती है; जैसे–

माता जी ने भोजन बनाया।	क्या बनाया?	भोजन।
नौकरानी ने बच्चे को सुलाया।	किसे सुलाया?	बच्चे को।
दादा जी ने पोते को बुलाया।	किसको बुलाया?	पोते को।

सकर्मक क्रिया के भेद

सकर्मक क्रिया के भी दो भेद होते हैं– (क) एककर्मक क्रिया (ख) द्विकर्मक क्रिया

(क) एककर्मक क्रिया– ऐसी क्रिया जिसका एक ही कर्म होता है, उसे एककर्मक क्रिया कहते हैं; जैसे–

मैदान में बकरियाँ चर रही हैं।

माली ने फूल तोड़े।

इन वाक्यों में केवल एक ही कर्म–'बकरियाँ' एवं 'फूल' का प्रयोग किया गया है।

(ख) द्विकर्मक क्रिया– वाक्य में जिस क्रिया के लिए दो-दो कर्म प्रयुक्त किए जाते हैं, उन्हें द्विकर्मक क्रिया कहते हैं; जैसे–

मालकिन ने बच्चे को दूध पिलाया।

गीता ने सीता को कलम दिया।

(*ii*) अकर्मक क्रिया– वाक्य में जिस क्रिया का फल केवल कर्ता पर पड़ता है एवं जहाँ कोई कर्म नहीं होता है, उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं; जैसे–

नूतन मुस्कराती है।

रंजीत दौड़ता है।

शेर दहाड़ता है।

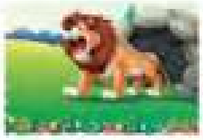

इन वाक्यों में आई क्रियाएँ– 'मुस्कराती है', 'दौड़ता है' तथा 'दहाड़ता है' अकर्मक हैं। इनमें कोई भी कर्म नहीं है, केवल कर्ता और क्रिया हैं। अन्य अकर्मक क्रियाएँ हैं– रोना, हँसना, टहलना, चलना, नहाना, छींकना, खाँसना, देखना, गाना आदि।

2. रचना के आधार पर क्रिया के भेद–

रचना के आधार पर क्रिया के निम्नलिखित भेद होते हैं–

(क) सामान्य क्रिया (ख) संयुक्त क्रिया (ग) प्रेरणार्थक क्रिया (घ) नामधातु क्रिया (ङ) पूर्वकालिक क्रिया।

(क) सामान्य क्रिया– ऐसे सभी वाक्य जिनमें केवल एक ही क्रिया का प्रयोग किया जाता है, उसे सामान्य क्रिया कहते हैं; जैसे–

माता जी ने भोजन परोसा।

नंदिनी नानी जी के घर गई।

अध्यापिका ने पाठ पढ़ाया।

अध्यापन संकेत शिक्षक/शिक्षिका कक्षा में बच्चों को क्रिया के सभी रूपों को विस्तारपूर्वक बताते हुए सभी भेदों की पहचान वाक्य निर्माण द्वारा करना सिखाएँ।

(ख) संयुक्त क्रिया– जिस किसी वाक्य में दो या दो से अधिक क्रियाएँ मिलकर किसी एक कार्य को पूरा करती हैं, उन्हें संयुक्त क्रिया कहते हैं; जैसे–

तोते उड़ गए।

हिरन दौड़ रहे हैं।

चोर भाग गए।

इन वाक्यों में प्रयुक्त रंगीन छपे शब्द क्रियाएँ हैं।

हमें यह भी जानना चाहिए कि संयुक्त क्रिया में पहली मुख्य और दूसरी क्रिया सहायक क्रिया होती है; जैसे– ऊपर के तीनों उदाहरणों में क्रमशः उड़, भाग तथा दौड़ मुख्य क्रियाएँ हैं और गए, गए तथा रहे हैं सहायक क्रियाएँ हैं। अतएव मुख्य क्रिया तथा सहायक क्रियाएँ मिलकर संयुक्त क्रियाएँ कहलाती हैं।

(ग) प्रेरणार्थक क्रिया– वाक्य में प्रयुक्त ऐसी क्रिया जिसे कर्ता स्वयं न करके किसी अन्य को कोई कार्य करने के लिए प्रेरित करता है, उसे प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं; जैसे–

रंजना नौकरानी से खाना बनवाती है।

पिता जी नौकर से गाड़ी साफ़ करवाते हैं।

सरिता ब्यूटीशियन से फेस मसाज करवाती है।

उपर्युक्त वाक्यों में क्रमशः नौकरानी, नौकर तथा ब्यूटीशियन कार्य करते हैं। इनके कार्य करने की प्रेरणा क्रमशः रंजना, पिता जी और सरिता द्वारा मिल रही है।

अतएव ये क्रियाएँ– बनवाती, साफ़ करवाते तथा करवाती प्रेरणार्थक क्रियाएँ हैं।

(घ) नामधातु क्रिया– जो क्रियाएँ संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण वाक्यों से बनती हैं, उसे नामधातु क्रिया कहते हैं; जैसे–

बदमाश जमीन को हथियाता है।

नेता जी किसानों का दिल दुखाते हैं।

अध्यापिका छात्रा की पीठ थपथपाती है।

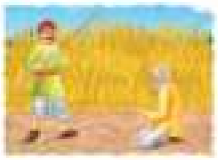

अन्य नामधातु क्रियाए हैं– गरमाना, लजाना, बतियाना, सठियाना, बरसाना, फिसलना, ठंडाना, दोहराना, झनझनाना, हिनहिनाना, खटखटाना आदि।

(ङ) पूर्वकालिक क्रिया– किसी भी वाक्य में मुख्य क्रिया से पहले होने वाली क्रिया को पूर्वकालिक क्रिया कहते हैं; जैसे–

माता जी ने गिनकर रुपये रखे।

दिनेश ने झुककर प्रणाम किया।

सुनंदा ने गीत गाकर नृत्य किया।

उपर्युक्त वाक्यों में गिनकर, झुककर तथा गाकर पूर्वकालिक क्रियाएँ हैं, जो मुख्य क्रिया से पहले ही पूर्ण या संपन्न हो चुकी हैं।

रंजक क्रिया– अर्थ का रंजन करने वाली क्रियाएँ रंजक क्रिया कहलाती हैं। कुछ सहायक क्रियाएँ मुख्य क्रिया के अर्थ में विशेषता उत्पन्न करने का कार्य करती हैं। कहने का अभिप्राय यह है कि रंजक क्रिया मुख्य क्रिया के प्रभाव को बढ़ाती है; जैसे–

बाज़ार से कुछ फल ले आना।

स्नेहा साड़ी पहन चुकी।

कविता चौंक उठी।

आइए, पुनरावृति करें

- **लिंग–** किसी कार्य का करना या होना क्रिया कहलाता है।
- क्रिया के भेद दो आधारों पर तय किए जाते हैं– (क) कर्म के आधार पर तथा (ख) रचना के आधार पर।
- **धातु–** मूल धातु में 'ना' जोड़कर क्रिया शब्द बनाए जाते हैं।
- **कर्म के आधार पर क्रिया के भेद**
  - **सकर्मक** (कर्म सहित)
    - **एककर्मक क्रिया** (एक ही कर्म होता है)
    - **द्विकर्मक क्रिया** (दो कर्म होते हैं)
  - **अकर्मक** (कर्म रहित)
- **रचना के आधार पर क्रिया के भेद**
  - **सामान्य क्रिया** एक क्रिया का प्रयोग
  - **संयुक्त क्रिया** दो या इससे अधिक क्रिया का प्रयोग
  - **प्रेरणार्थक क्रिया** दूसरे से क्रिया करवाना
  - **नामधातु क्रिया** संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषण से बनने वाली क्रियाएँ
  - **पूर्वकालिक क्रिया** मुख्य क्रिया से पूर्व यह क्रिया पूरी होती है।

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य

Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) रंजक क्रिया का उदाहरण बताइए।

(ख) 'तोता उड़ गया' वाक्य में प्रयुक्त संयुक्त क्रिया बताइए।

लेखन कार्य

Writing Skills

1. **दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**

(क) क्रिया की परिभाषा उदाहरण के साथ दीजिए।

(ख) सकर्मक क्रिया और अकर्मक क्रिया में अंतर बताइए।

(ग) रचना के आधार पर क्रिया के कितने भेद होते हैं?

(घ) प्रेरणार्थक क्रिया का सोदाहरण परिचय दीजिए।

(ङ) रंजक क्रिया किसे कहते हैं?

2. दिए गए वाक्यों में कर्म के आधार पर क्रिया-भेद बताइए।

(क) रंजन हँसता है। ....

(ख) सुनंदा पुष्पा को कलम देती है। ....

(ग) पिता जी अखबार पढ़ते हैं। ....

(घ) नौकरानी साड़ी धो रही है। ....

(ङ) माली ने गमले सींचे। ....

(च) अध्यापिका पढ़ाती हैं। ....

(छ) छात्रगण परीक्षा दे रहे हैं। ....

(ज) नेता जी ने नवयुवक का उत्साह बढ़ाया। ....

3. दिए गए शब्दों से प्रेरणार्थक क्रियाएँ बनाइए।

बोल – ....

पीस – ....

सुन – ....

डूब – ....

लिख – ....

चाल – ....

उठ – ....

पढ़ – ....

चल – ....

ठेल – ....

जाग – ....

डर – ....

4. दिए गए शब्दों से नामधातु क्रियाएँ बनाइए।

लात – ....

बात – ....

साठ – ....

गर्म – ....

दोहरा – ....

चिकना – ....

बड़-बड़ – ....

भिन-भिन – ....

अपना – ....

जूता – ....

लज्जा – ....

शर्म – ....

हाथ – ....

झूठ – ....

थर-थर – ....

हिच-हिच – ....

टिम-टिम – ....

हिन-हिन – ....

सोटा – ....

फटकार – ....

5. दिए गए वाक्यों के लिए सही विकल्प चुनिए।

(क) नन्हें भोजन करता है, वाक्य में क्रिया है–

☐ भोजन ☐ करता ☐ है ☐ नन्हें

(ख) राजू साइकिल चलाता है, में क्रिया है–

☐ सामान्य क्रिया ☐ अकर्मक क्रिया ☐ सकर्मक क्रिया ☐ सहायक क्रिया

(ग) आजकल अनेक विषयों को फिल्माया जा रहा है, में क्रिया है–

☐ अकर्मक ☐ नामधातु ☐ प्रेरणार्थक ☐ रंजक क्रिया

(घ) माता जी ने बच्चे की आया से मालिश करवाई, में क्रिया है–

☐ प्रेरणार्थक क्रिया ☐ नामधातु क्रिया ☐ अकर्मक क्रिया ☐ पूर्वकालिक क्रिया

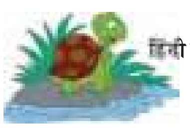

(ङ) मैंने पिता जी से जेबखर्च लिया, में क्रिया है–

☐ अकर्मक क्रिया ☐ एककर्मक क्रिया ☐ प्रेरणार्थक क्रिया ☐ नामधातु क्रिया

6. दी गई प्रेरणार्थक क्रियाओं से वाक्य का निर्माण कीजिए।

(क) खिंचवाना – ....

(ख) पढ़वाना – ....

(ग) चमकाना – ....

(घ) चलवाना – ....

(ङ) सुलाना – ....

(च) खिलाना – ....

(छ) जितवाना – ....

सोचें-विचारें

Critical Thinking

7. क्या प्रत्येक क्रिया सकर्मक होती है? सोचकर बताइए।

खेल-खेल में

Brain Storming Activity

8. किसी समाचार-पत्र में से क्रिया शब्द छाँटकर अपनी कॉपी में लिखिए तथा क्रिया के भेद का नाम भी लिखिए।

9. दी गई सारिणी में से क्रिया शब्द छाँटकर उनके भेद का नाम भी लिखिए।

पि	जा	ना	का	ट	ना	जा	ग	ना
ल	सि	ग	रु	लि	ख	वा	ना	सो
वा	ल	जा	ला	छी	हि	दे	स्प	ख
ना	वा	सु	ना	न	न	ना	फि	र
ढूँ	ना	ला	सा	ना	हि	ब	भौं	ख
ढ़	ख	ना	हँ	खा	ना	ति	क	रा
ना	वा	घ	लि	दु	ना	या	ना	ना
क	र	ना	रो	ल	जा	ना	ले	

....

....

....

....

....

....

....

....

प्रेरणादायक मूल्य

हमें निरंतर महत्वपूर्ण कार्यों को करना चाहिए ताकि समाज के निर्माण में अपना योगदान दे सकें।

क्रियाविशेषण
(Adverb)

पढ़िए और समझिए

दिए गए चित्र देखिए और रंगीन शब्दों पर ध्यान दीजिए–

राजेश बहुत कम पढ़ता है।

बारिश अचानक होने लगी।

बिल्ली नीचे बैठी है।

सारे सामान हाथों-हाथ बिक गए।

बच्चो! इन वाक्यों में आई क्रियाएँ– 'पढ़ता है', 'होने लगी', 'बैठी है' और 'बिक गए' के पूर्व 'बहुत कम', 'अचानक', 'नीचे' तथा 'हाथों-हाथ' शब्द आए हैं, जो क्रिया की विशेषता बता रहे हैं कि क्रिया किस तरह हो रही है। इन्हें ही क्रियाविशेषण कहते हैं। अत: हम यह भी कह सकते हैं कि–

क्रिया की विशेषता बताने वाले सभी शब्द क्रियाविशेषण कहलाते हैं।

क्रियाविशेषण के भेद

क्रियाविशेषण चार प्रकार के होते हैं–

1. रीतिवाचक क्रियाविशेषण
2. स्थानवाचक क्रियाविशेषण
3. कालवाचक क्रियाविशेषण
4. परिमाणवाचक क्रियाविशेषण

1. **रीतिवाचक क्रियाविशेषण–** ऐसे क्रियाविशेषण शब्द जिनसे क्रिया के होने की रीति या ढंग की जानकारी मिलती है, उसे रीतिवाचक क्रियाविशेषण शब्द कहते हैं; जैसे–

स्टेशन पर गाड़ी अचानक आ गई।
कछुआ धीरे-धीरे चलता है।
देशी गुड़ हाथों-हाथ बिक जाता है।

2. **स्थानवाचक क्रियाविशेषण–** ऐसे क्रियाविशेषण शब्द जिनसे क्रिया के होने के स्थान का पता चलता है, उसे स्थानवाचक क्रियाविशेषण शब्द कहते हैं; जैसे–

आप थोड़ा आगे चले जाइए।
फूफा जी सामने रहते हैं।
खाने का सामान उस तरफ रख दो।

3. **कालवाचक क्रियाविशेषण–** ऐसे क्रियाविशेषण शब्द जिनसे क्रिया के होने के समय का पता चलता है, उसे कालवाचक क्रियाविशेषण शब्द कहते हैं; जैसे–

बारिश दिनभर होती रही।
मैं प्रतिदिन घूमने जाता हूँ।
कोरोना से सारा साल बेकार गया है।

4. **परिमाणवाचक क्रियाविशेषण–** ऐसे क्रियाविशेषण शब्द जो क्रिया की मात्रा या परिमाण को बताते हैं, उन्हें परिमाणवाचक क्रियाविशेषण शब्द कहते हैं; जैसे–

ये भोजन मेरे लिए पर्याप्त है।
अत्यधिक मीठा खाना ठीक नहीं है।
मेरे पैसे थोड़ा-थोड़ा करके लौटा दो।

विशेषण और क्रियाविशेषण में अंतर

रंजना बहुत अच्छी महिला है।	(विशेषण)
वह साड़ी बहुत अच्छी पहनती हैं।	(क्रिया-विशेषण)

परिमाणवाचक विशेषण और परिमाणवाचक क्रियाविशेषण में अंतर

दास साहब के पास काफ़ी पुस्तकें हैं।	(परिमाणवाचक विशेषण)
रात काफी बीत चुकी है, अब सो जाओ।	(परिमाणवाचक क्रियाविशेषण)

बच्चो! क्रियाविशेषणों के अलावा संबंधबोधक, समुच्चयबोधक तथा विस्मयादिबोधक शब्द भी अव्यय होते हैं। जो इस प्रकार हैं–

संबंधबोधक (Preposition)

सुभाष के पीछे कुत्ते खड़े हैं।

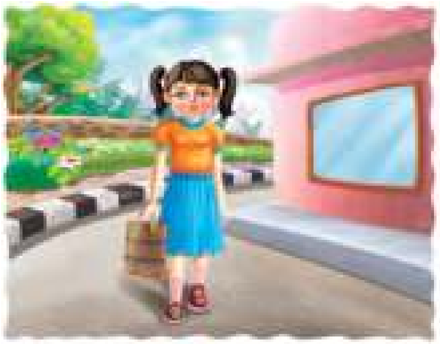
घर के आस-पास बाज़ार है।

मैं रंजन के साथ जाना चाहूँगा।

यहाँ वाक्यों में आए शब्द के पीछे, के आस-पास तथा के साथ शब्द वाक्य में आए संज्ञा या सर्वनाम शब्दों के साथ संबंध प्रकट करने से संबंधबोधक शब्द कहलाएँगे।

अतएव हम कह सकते हैं कि–

ऐसे शब्द जो संज्ञा और सर्वनाम शब्दों के साथ आकर उनका संबंध वाक्य के अन्य शब्दों के साथ संबंध प्रकट करते हैं, उन्हें संबंधबोधक कहते हैं।

संबंधबोधक के भेद

इसके मुख्यत: तीन भेद होते हैं– 1. प्रयोग के अनुसार 2. व्युत्पत्ति के अनुसार 3. अर्थ के अनुसार

1. **प्रयोग के अनुसार–** इसके मुख्यत: दो भेद होते हैं–

   (क) संबद्ध संबंधबोधक– ऐसे संबंधबोधक प्राय: विभक्ति के साथ संज्ञा या सर्वनाम शब्दों के साथ प्रयुक्त किए जाते हैं; जैसे– कुत्तों के पीछे, गर्मी के मारे, घर के भीतर, उसके बिना आदि।

   (ख) अनुबद्ध संबंधबोधक– इस प्रकार के संबंधबोधक प्राय: संज्ञा शब्दों के विकृत रूप के बाद आते हैं; जैसे– दोष-रहित, कटोराभर, गुण-हीन, महिलाएँ सहित आदि।

2. **व्युत्पत्ति के अनुसार–** इसके भी दो भेद होते हैं–

   (क) मूल संबंधबोधक– जैसे– तक, सहित, पास, पूर्वक, बिना आदि।

   (ख) यौगिक संबंधबोधक– जैसे– की अपेक्षा, से परे, के बाहर, के अंदर आदि।

3. **अर्थ के अनुसार संबंधबोधक** निम्नलिखित हैं–

   (क) कालवाचक – आगे, पीछे, पश्चात्, बाद, पहले आदि।

   (ख) स्थानवाचक – ऊपर, नीचे, बाहर, भीतर आदि।

   (ग) दिशावाचक – पास, निकट, सामने, तरफ, ओर आदि।

   (घ) विरोधसूचक – प्रतिकूल, विरुद्ध, खिलाफ, उल्टे आदि।

   (ङ) समानसूचक – समान, अनुसार, सदृश आदि।

   (च) साधनवाचक – कारण, द्वारा, निमित्त, खातिर आदि।

   (छ) हेतुवाचक – अतिरिक्त, अलावा, सिवा, रहित आदि।

नोट : उपर्युक्त सभी शब्दों के पहले 'के' लगेगा। जैसे - के पीछे, के पास, के समान आदि।

क्रियाविशेषण तथा संबंधबोधक में अंतर

क्रिया-विशेषण	संबंधबोधक
भीतर बैठिए।	महल के भीतर साजिश हो रही है।
नीचे जाकर देखिए।	जीने के नीचे कुछ लोग खड़े हैं।

समुच्चयबोधक (Conjuction)

ऐसे शब्द जो दो शब्दों, वाक्यांशों या वाक्यों को जोड़ने का कार्य करते हैं, उन्हें समुच्चयबोधक कहा जाता है। ये दो प्रकार के होते हैं–

1. **समानाधिकरण समुच्चयबोधक–** ऐसे समुच्चयबोधक शब्द जिनके द्वारा दो समान वाक्यांशों, शब्दों और वाक्यों को जोड़ा जाता है, उन्हें समानाधिकरण समुच्चयबोधक शब्द कहते हैं; जैसे– और, तो, एवं, अथवा आदि।

   इसके चार भेद होते हैं–

   (क) संयोजक – जैसे– और, एवं तथा आदि।

   (ख) विभाजक – जैसे– या, अथवा, अन्यथा आदि।

   (ग) विरोध-सूचक – जैसे– मगर, परंतु, लेकिन, बल्कि आदि।

   (घ) परिणाम-सूचक – जैसे– फलत:, परिणामत:, अत:, इसलिए, अतएव आदि।

2. **व्यधिकरण समुच्चयबोधक–** किसी भी वाक्य के प्रधान और आश्रित उपवाक्यों को जोड़ने वाले शब्द व्यधिकरण समुच्चयबोधक शब्द कहलाते हैं; जैसे– धीरे बोलो ताकि कोई सुन न ले।

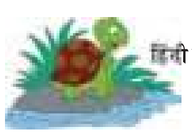

व्यधिकरण समुच्चयबोधक भी चार प्रकार के होते हैं–

(क) **करण कारक** – क्योंकि, ताकि आदि। (ख) **संकेतसूचक** – यदि-तो, जो-तो आदि।

(ग) **उद्देश्यसूचक** – ताकि, जिससे कि (घ) **स्वरूप सूचक** – अर्थात्, मानो आदि।

विस्मयादिबोधक (Interjection)

ऐसे शब्द जिनके द्वारा भय, हर्ष, क्रोध, घृणा, विस्मय आदि भाव प्रकट होते हैं, उन्हें विस्मयादिबोधक शब्द कहते हैं; जैसे– वाह! खेल देखकर मज़ा आ गया।

विस्मयादिबोधक शब्द हैं– अहा!, अरे!, सावधान!, हाय!, छि:!, वाह!, दीर्घायु हो! आदि।

निपात (Stressing Words)

ऐसे अविकारी शब्द जिनका प्रयोग वाक्य में आवश्यकतानुसार कहीं भी किया जा सकता है और जिस शब्द के बाद इनका प्रयोग किया जाता है, उन पर कुछ विशेष बल पड़ता है। ऐसे शब्दों को निपात कहते हैं। दूसरे शब्दों में, हम यह भी कह सकते हैं कि–

ऐसे अव्यय शब्द, जो वाक्य में किसी पद के साथ लगकर उसे विशेष बल प्रदान करते हैं, उसे निपात कहते हैं।

जैसे– पिता जी के साथ भाई भी आएगा।

पिता जी भी भाई के साथ आएँगे।

यहाँ 'भी' शब्द 'पिता जी' और 'भाई' के साथ जुड़कर अलग-अलग वाक्यों में उनके प्रभाव को बढ़ा रहे हैं।

अन्य निपात वाले शब्द हैं– तो, तक, भर, केवल, मत, ही आदि।

आइए, पुनरावृति करें

- क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्द क्रियाविशेषण कहलाते हैं।
- क्रियाविशेषण चार प्रकार के होते हैं–

क्रियाविशेषण

रीतिवाचक	स्थानवाचक	कालवाचक	परिमाणवाचक
धीरे-धीरे, अचानक, हाथों-हाथ	आगे, सामने, इधर बाहर, भीतर	लगातार, आजकल दिनभर, रातभर	काफी, पर्याप्त थोड़ा-थोड़ा

- **संबंधबोधक–** ऐसे शब्द जो संज्ञा और सर्वनाम शब्दों के साथ आकर उनका संबंध वाक्य के अन्य शब्दों के साथ प्रकट करते हैं, वे संबंधबोधक कहलाते हैं।
- **समुच्चयबोधक–** जो शब्द दो शब्दों, वाक्यों और वाक्यांशों को जोड़ने का कार्य करते हैं, उन्हें समुच्चयबोधक कहते हैं।
- समुच्चयबोधक दो प्रकार के होते हैं– समानाधिकरण समुच्चयबोधक तथा व्यधिकरण समुच्चयबोधक।
- **विस्मयादिबोधक–** ऐसे शब्द जिनके द्वारा हर्ष, विषाद, क्रोध, भय, घृणा आदि भाव प्रकट किए जाते हैं, वे विस्मयादिबोधक कहलाते हैं।
- **निपात–** ऐसे अव्यय शब्द जो वाक्य में किसी पद के साथ आकर उसे विशेष बल प्रदान करते हैं, वे निपात कहलाते हैं।

अध्यापन संकेत

शिक्षक/शिक्षिका कक्षा में बच्चों को अव्यय और क्रियाविशेषण के बीच में अंतर को तार्किक रूप से समझाएँ।

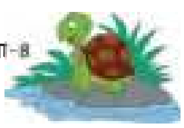

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य

Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) क्रियाविशेषण के भेद बताइए।

(ख) यौगिक संबंधबोधक का उदाहरण बताइए।

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) क्रियाविशेषण को उदाहरण देकर समझाइए।

(ख) क्रियाविशेषण और संबंधबोधक में अंतर बताइए।

(ग) समुच्चयबोधक किसे कहते हैं? यह कितने प्रकार का होता है?

(घ) विस्मयादिबोधक की उदाहरण सहित परिभाषा दीजिए।

2. दिए गए वाक्यों में से क्रियाविशेषण शब्द छाँटकर लिखिए और भेद भी बताइए।

(क) मोहन अचानक गिर गया। ....

(ख) खरगोश धीरे-धीरे चलता रहा। ....

(ग) वह फुटबॉल बहुत अच्छा खेलता है। ....

(घ) लोग उस तरफ भाग रहे हैं। ....

(ङ) इतना भोजन पर्याप्त है। ....

(च) जितना गुड़ डालोगे, उतना मीठा होगा। ....

(छ) तीन दिन से प्रतिदिन वर्षा हो रही है। ....

(ज) मिठाई थोड़ी-थोड़ी खानी चाहिए। ....

3. दिए गए शब्दों को वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

(क) के पास – ....

(ख) के बिना – ....

(ग) के कारण – ....

(घ) के सिवा – ....

(ङ) की जगह – ....

(च) से आगे – ....

(छ) के बीच – ....

(ज) के नीचे – ....

(झ) के अंदर – ....

4. दिए गए वाक्यों में से समुच्चयबोधक शब्द छाँटकर उनके भेद का नाम लिखिए।

(क) वह आगरा गया है, इसलिए विद्यालय नहीं आया। ....

(ख) राम को घर जाना था, किंतु बसें आज बंद हैं। ....

(ग) मास्क पहन लो वरना कोरोना हो सकता है। ....

(घ) दूध पीओगे या चाय? ....

(ङ) उसने परिश्रम नहीं किया था, अत: अनुत्तीर्ण हो गया। ....

(च) सुनीता और विनीता दोनों सगी बहने हैं। ....

5. दिए गए विस्मयादिबोधक शब्दों से वाक्य बनाइए।

(क) उफ! – ....

(ख) आह! – ....

(ग) अहा! – ....

(घ) वाह! – ....

(ङ) धिक्! – ....

(च) छिः!छिः! – ....

(छ) शाबाश! – ....

(ज) खामोश! – ....

6. खाली स्थानों में उचित निपात शब्द भरिए।

(क) रंजना .... बारात में जा रही है।

(ख) नेता जी को .... गुजरात जाना है।

(ग) मोहन .... अपने पापा के साथ शहर जाएगा।

(घ) सहाय को उसके घर .... जाना है।

(ङ) वह गया .... है।

(च) सुलेखा ने मुझे .... पुस्तक दी है।

(छ) वह दस कदम .... गया है।

7. रेखा खींचकर मिलाइए।

(अचानक, धीरे-धीरे)	निपात	(के समान, की अपेक्षा)
	विस्मयादिबोधक	
(एवं, तो, अथवा)	व्यधिकरण समुच्चयबोधक	(तो, भी, केवल)
	समानाधिकरण समुच्चयबोधक	
(छिः! ओह!)	संबंधबोधक	
	रीतिवाचक क्रियाविशेषण	(क्योंकि, ताकि)

सोचें-विचारें

Critical Thinking

8. आप किसी कार्य को किस तरीके से करते हैं? उसमें क्रियाविशेषण के किन भेदों का प्रयोग होता है? सोच-विचारकर बताइए।

खेल-खेल में

Brain Storming Activity

9. कक्षा में क्रियाविशेषण शब्दों के शब्दाक्षरी का खेल खिलवाएँ।

10. अव्यय शब्दों का एक-एक छात्र से वाक्य प्रयोग करवाएँ।

11. कक्षाध्यापिका क्रियाविशेषण शब्दों के प्रत्येक प्रकार के प्रश्न बच्चों से पूछें।

प्रेरणादायक मूल्य

क्रियाविशेषण में प्रयुक्त शब्दों को मानवीय मूल्यों में शामिल कर अपने व्यक्तित्व को रचनात्मकता प्रदान करनी चाहिए।

अध्याय 11

काल (Tense)

पढ़िए और समझिए

दिए गए चित्रों को देखिए और उनके नीचे लिखे वाक्यों के रंगीन भाग पर ध्यान दीजिए–

रेलगाड़ी चली गई।

बाज़ार खुले हैं।

अगले महीने से विद्यालय खुलेंगे।

बच्चो! इन वाक्यों में आए रंगीन शब्दों में 'चली गई' से कार्य के बीते समय में पूरा होने का, 'खुले हैं' से कार्य के जारी रहने का तथा 'खुलेंगे' से विद्यालय के आगामी समय में खोले जाने का पता चल रहा है। दूसरे शब्दों में, क्रियाओं के अलग-अलग समयों (काल) में होने का पता चलता है। हम यह भी कह सकते हैं कि–

क्रिया के जिस रूप से उसके होने के समय का पता चलता है, उसे काल कहते हैं।

अब आइए, काल के भेदों के बारे में जानते हैं कि काल के तीन भेद होते हैं–

1. भूतकाल 2. वर्तमानकाल 3. भविष्यत्काल।

1. **भूतकाल –** इस काल में कार्य या क्रिया के बीते समय में पूरा होने का पता चलता है, इसे ही भूतकाल कहते हैं; जैसे–

वंदना ने सुंदर नृत्य किया।

बच्चा सो रहा था।

हज़ारों लोगों ने कोरोना की जाँच करवाई।

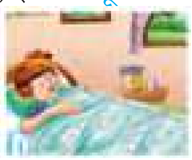

भूतकाल के भी छह भेद होते हैं– (क) सामान्य भूतकाल (ख) आसन्न भूतकाल (ग) पूर्ण भूतकाल (घ) अपूर्ण भूतकाल (ङ) संदिग्ध भूतकाल (च) हेतुहेतुमद भूतकाल।

(क) सामान्य भूतकाल– क्रिया का वैसा रूप जिससे किसी कार्य के सामान्य रूप में पिछले (बीते) समय में पूर्ण होने की जानकारी मिलती है, उसे सामान्य भूतकाल कहते हैं; जैसे–

माताजी ने भोजन पकाया।

सरला ने चाय बनाई।

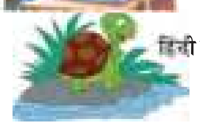

(ख) आसन्न भूतकाल : ऐसी क्रियाएँ जिनसे पता चलता है कि क्रिया कुछ ही समय पहले पूरी हो गई है, उसे आसन्न भूतकाल कहते हैं; जैसे–

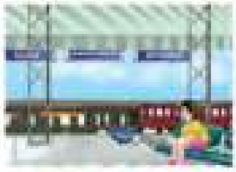

रेलगाड़ी स्टेशन पर आई है।

मैंने गृहकार्य पूरा कर लिया है।

पिता जी मिठाई लेकर आए हैं।

(ग) पूर्ण भूतकाल : क्रिया का वैसा रूप जिससे किसी क्रिया के बहुत पहले ही पूरा हो जाने का पता चलता है, उसे पूर्ण भूतकाल कहते हैं; जैसे–

बंदर भाग चुका था।

चुनाव समाप्त हो चुके थे।

पूजा समाप्त हो गई थी।

स्मरणीय– इस क्रिया के अंत में चुका/चुकी/था/थी/थे आता है।

(घ) अपूर्ण भूतकालः क्रिया का वह रूप जिससे यह पता चलता है कि कार्य का आरंभ तो बीते समय में हुआ था, किंतु कार्य के समाप्त होने की जानकारी नहीं मिलती है। उसे अपूर्ण भूतकाल कहते हैं; जैसे–

लड़कियाँ नृत्य कर रही थीं।

गाड़ी जा रही थी।

बच्चे विद्यालय जा रहे थे।

स्मरणीय– इस क्रिया के अंत में रहा/रहे/रही/था/थी लगता है।

(ङ) संदिग्ध भूतकालः क्रिया का वैसा रूप जिसके द्वारा यह पता नहीं चलता है कि कार्य पूरा हो गया है या नहीं अर्थात् कार्य के पूर्ण होने में संदेह होता है, वहाँ संदिग्ध भूतकाल होता है; जैसे–

पिता जी यूरोप पहुँच चुके होंगे।

नानी जी घर पहुँच चुकी होंगी।

दुल्हा ससुराल पहुँच चुका होगा।

स्मरणीय– इसमें चुका होगा/चुकी होगी/चुके होंगे क्रियाएँ लगती हैं।

(च) हेतुहेतुमद भूतकालः इसमें क्रिया का वह रूप जिससे पता चलता है कि कार्य पूर्ण होना किसी अन्य पर निर्भर करता है। यदि वह नहीं रहा, तो क्रिया का कार्य भी पूर्ण नहीं होगा। वहाँ हेतुहेतुमद भूतकाल का प्रयोग होता है; जैसे–

यदि वर्षा होती, तो जमीन गीली हो जाती।

श्रेया यदि मेहनत करती, तो सफलता प्राप्त कर लेती।

यदि मामा जी आए होते, तो मैं उनके साथ चला गया होता।

स्मरणीय– हेतुहेतुमद् भूतकाल में 'यदि–तो' का प्रयोग किया जाता है।

2. **वर्तमानकाल** – क्रिया का वैसा रूप जिससे किसी कार्य के वर्तमान समय में होने का पता चलता है, उसे वर्तमान काल कहते हैं; जैसे–

मंजुला गीत गाती है।
दिव्यांश खेलता है।
नंदन स्कूल जाता है।

स्मरणीय– यहाँ ता/ ती/ ते के साथ है/ हैं लगता है।

वर्तमानकाल के तीन भेद होते हैं– (क) सामान्य वर्तमानकाल (ख) अपूर्ण वर्तमानकाल (ग) संदिग्ध वर्तमानकाल।

(क) सामान्य वर्तमानकाल : इसमें क्रिया वर्तमान (मौजूदा समय) में सामान्य रूप से संपन्न होती है, वहाँ सामान्य वर्तमानकाल का प्रयोग किया जाता है; जैसे–

मिलिंद बाँसुरी बजाता है।
अध्यापिका बच्चों को पढ़ाती है।
पिता जी कार चलाते हैं।

(ख) अपूर्ण वर्तमानकाल : क्रिया का वैसा रूप जिससे यह पता चलता है कि कार्य तो वर्तमान में प्रारंभ हो गया है, किंतु अभी भी वह पूरा नहीं हो सका है, उसे अपूर्ण वर्तमानकाल कहते हैं; जैसे–

नौकरानी सफ़ाई कर रही है।
माता जी भोजन बना रही हैं।
अध्यापिका जी कॉपी जाँच रही हैं।
बस जा रही है।

3. **भविष्यत्काल** – क्रिया के जिस रूप से किसी कार्य के आने वाले समय में पूरा होने की जानकारी मिलती है, उसे भविष्यत्काल कहते हैं; जैसे–

मामा जी परसों जौनपुर जाएँगे।
कान्हा कल मंदिर जाएगा।
कल से हमारी परीक्षाएँ होंगी।

भविष्यत्काल के दो भेद होते हैं– (क) सामान्य भविष्यत्काल (ख) संभाव्य भविष्यत्काल।

(क) सामान्य भविष्यत्काल– क्रिया का वैसा स्वरूप जिससे आने वाले समय में किसी कार्य के सामान्य ढंग से पूरा होने की जानकारी मिलती है, उसे सामान्य भविष्यत्काल कहा जाता है; जैसे–

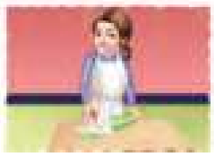

वायुयान थोड़ी देर बाद उड़ेगा।
नताशा कल मामा जी के यहाँ जाएगी।
माता जी शाम को भोजन बनाएँगी।

(ख) संभाव्य भविष्यत्काल : ऐसे क्रिया शब्द जिनसे उसके भविष्य में होने की संभावना का पता चलता है, उसे संभाव्य भविष्यत्काल कहते हैं; जैसे–

शायद मेरा भाई जून में आए।
राधिका संभवतः छुट्टियों में घर आए।
कल शायद वर्षा होगी।

अध्यापन संकेत शिक्षक/शिक्षिका कक्षा में बच्चों को काल के विभिन्न भेदों को उनके वाक्यों के अनुसार प्रायोगिक तौर पर समझाएँ ताकि बच्चे पाठ को आसानी से समझ सकें।

आइए, पुनरावृति करें

- **काल**– क्रिया के जिस रूप से उसके होने के समय का पता चलता है, उसे काल कहते हैं।
- काल के भेद–

काल

- भूतकाल (बीता समय)
  - सामान्यभूत (किया/गया)
  - आसन्न भूत (आता है/आई है)
  - पूर्णभूत (गई थी/चुकी थी)
  - अपूर्ण भूत (रहा था/रही थी)
  - संदिग्ध भूत (चुके होंगे/माँगी होगी)
- वर्तमान काल
  - सामान्य वर्तमान ('ता' होती है।)
  - अपूर्ण वर्तमान (रहे हैं/रही है)
  - संदिग्ध वर्तमान (रही होगी/रहा होगा)
- भविष्यत् काल
  - सामान्य भविष्यत् (पढ़ेगा, जाएगा)
  - संभाव्य भविष्यत् (शायद आए)

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य

Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) भूतकाल के भेदों को बताइए।

(ख) 'राम कल हरिद्वार जाएगा। यह वाक्य किस काल का उदाहरण है?

लेखन कार्य

Writing Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) काल किसे कहते हैं?

(ख) काल के भेदों और उनके उपभेदों के नाम लिखिए।

(ग) संभाव्य भविष्यत् काल की सोदाहरण परिभाषा दीजिए।

(घ) हेतुहेतुमद भूतकाल की उदाहरण देकर परिभाषा दीजिए।

2. दिए गए वाक्यों में कालों के उपभेद लिखिए।

(क) संभवत: अब कोरोना समाप्त हो जाए। ....

(ख) दशहरे का मेला लगा था। ....

(ग) रात होने पर तारे जगमगाएँगे। ....

(घ) यदि बादल घिरेंगे तो वर्षा होगी। ....

(ङ) सब्ज़ीवाला सब्ज़ियाँ बेचता है। ....

3. निर्देशानुसार वाक्यों के कालों को बदलकर दोबारा लिखिए।

(क) मेले में खरबूजे बिकने लगे। (पूर्ण वर्तमान काल में)

(ख) मालिन माला गूँथ रही है। (सामान्य भविष्यत् काल में)

(ग) गली में कुत्ते भौंकते हैं। (अपूर्ण वर्तमान काल में)

(घ) मतदान पड़ रहा है। (संदिग्ध वर्तमान काल में)

(ङ) नौकरानी झाड़ू लगाती है। (पूर्ण भूतकाल में)

4. रिक्त स्थान के लिए सही शब्द का चुनाव कीजिए।

(क) हमारी अध्यापिका जी प्रसिद्ध .... हैं।

☐ कवि ☐ लेखक ☐ नेता ☐ कवयित्री

(ख) अचानक बादल घिर आए और वर्षा होने ....।

☐ लगा ☐ हुई ☐ लगी ☐ लगेगी

(ग) डॉ. कलाम हमारे राष्ट्रपति ....।

☐ था ☐ थी ☐ रहेंगे ☐ थे

(घ) नंदन वन चीत्कारों से गूँजने ....।

☐ लगी ☐ लगा ☐ लगेगी ☐ लग चुकी

5. दिए गए वाक्यों को उनके सही काल से मिलाइए।

(क) राजीव पुस्तक पढ़ चुका है।	(i) सामान्य भूतकाल
(ख) यदि मैं पढ़ता तो पास हो जाता।	(ii) संभाव्य भविष्यत् काल
(ग) अनन्या जाग रही होगी।	(iii) सामान्य वर्तमान काल
(घ) पुजारी पूजा कर रहे हैं।	(iv) अपूर्ण वर्तमान काल
(ङ) पापा शायद रसगुल्ले ले आएँ।	(v) हेतुहेतुमद भूतकाल
	(vi) संदिग्ध भूतकाल

सोचें-विचारें

Critical Thinking

6. संदिग्ध वर्तमान काल और संभाव्य भविष्यत्काल के बीच विभेद को सोचकर बताइए।

खेल-खेल में

Brain Storming Activity

7. अपनी पाठ्य-पुस्तक में से सभी कालों एवं उनके भेदों वाले वाक्य रेखांकित करके अपनी कॉपी में लिखिए।

प्रेरणादायक मूल्य

'समय कभी किसी के लिए नहीं ठहरता।' अत: हमें सदैव वर्तमान समय में अपने कार्यों को पूर्ण करने का प्रयास करना चाहिए।

अध्याय 12

संधि (Joining)

पढ़िए और समझिए

बच्चो! संधि का अर्थ 'मेल' या 'जोड़' होता है, किंतु यह जोड़ एक अनोखा होता है। इसमें दो शब्दों का नहीं बल्कि दो वर्णों का जोड़ होता है।

जैसे – विद्या+आलय = विद्यालय। यहाँ आ+आ जुड़कर 'या' बन गए हैं।
(आ + आ)

अतः हम संधि के बारे में यह भी कह सकते हैं कि–

दो वर्णों के योग से जो विकार या परिवर्तन होता है, उसे संधि कहते हैं।

संधि-विच्छेदः संधि से बने या बनाए गए शब्दों को अलग-अलग करना ही संधि-विच्छेद कहलाता है।
जैसे – शिक्षालय = शिक्षा + आलय।

अब आइए, संधि के भेद के बारे में जानें:

संधि के भेदः संधि के तीन भेद होते हैं–

1. स्वर संधि 2. व्यंजन संधि 3. विसर्ग संधि।

1. **स्वर संधिः** स्वर और स्वर के मेल से होने वाला विकार या परिवर्तन स्वर संधि कहलाता है।
जैसे – सती + ईश= सतीश। (ई+ई=ई)

स्वर संधि के भेदः स्वर संधि के निम्नलिखित भेद होते हैं–
(क) दीर्घ संधि (ख) गुण संधि (ग) वृद्धि संधि (घ) यण संधि (ङ) अयादि संधि।

(क) **दीर्घ संधिः** यदि ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ के बाद क्रमशः अ, इ, उ आएँ या अ, इ, उ के बाद आ, ई, ऊ आएँ, तो इनके मेल से क्रमशः आ, ई, ऊ हो जाते हैं।
जैसे–

(i) अ + अ = आ (ा)

धर्म	+	अर्थ	=	धर्मार्थ	(अ + अ = आ)
सूर्य	+	अस्त	=	सूर्यास्त	(अ + अ = आ)
सार	+	अंश	=	सारांश	(अ + अ = आ)
मत	+	अनुसार	=	मतानुसार	(अ + अ = आ)
चर	+	अचर	=	चराचर	(अ + अ = आ)
भाव	+	अर्थ	=	भावार्थ	(अ + अ = आ)

अ + आ = आ (ा)

पुस्तक	+	आलय	=	पुस्तकालय	(अ + आ =आ)
नील	+	आकाश	=	नीलाकाश	(अ + आ = आ)
दश	+	आनन	=	दशानन	(अ + आ = आ)
रत्न	+	आकर	=	रत्नाकर	(अ + आ = आ)
धर्म	+	आत्मा	=	धर्मात्मा	(अ + आ = आ)
गज	+	आनन	=	गजानन	(अ + आ = आ)

आ + अ = आ (ा)

रेखा	+ अंकित	=	रेखांकित	(आ + अ = आ)
सेवा	+ अर्थ	=	सेवार्थ	(आ + अ = आ)
विद्या	+ अर्थी	=	विद्यार्थी	(आ + अ = आ)
यथा	+ अर्थ	=	यथार्थ	(आ + अ = आ)
दीक्षा	+ अंत	=	दीक्षांत	(आ + अ = आ)
विद्या	+ स्थान	=	विद्यास्थान	(आ + अ = आ)

आ + आ = आ (ा)

शिक्षा	+ आलय	=	शिक्षालय	(आ + आ = आ)
महा	+ आशय	=	महाशय	(आ + आ = आ)
दया	+ आनंद	=	दयानंद	(आ + आ = आ)
कृपा	+ आकांक्षी	=	कृपाकांक्षी	(आ + आ = आ)
विद्या	+ आलय	=	विद्यालय	(आ + आ = आ)
विद्या	+ आरंभ	=	विद्यारंभ	(आ + अ = आ)

(ii) इ + इ = ई (ी)

रवि	+ इंद्र	=	रवींद्र	(इ + इ = ई)
मुनि	+ इंद्र	=	मुनींद	(इ + इ = ई)
अभि	+ इष्ट	=	अभीष्ट	(इ + इ = ई)
अति	+ इव	=	अतीव	(इ + इ = ई)
हरि	+ इच्छा	=	हरीच्छा	(इ + इ = ई)
कवि	+ इंद्र	=	कवींद्र	(इ + इ = ई)

इ + ई = ई (ी)

गिरि	+ ईश	=	गिरीश	(इ + ई = ई)
अधि	+ ईश्वर	=	अधीश्वर	(इ + ई = ई)
कपि	+ ईश	=	कपीश	(इ + ई = ई)
परि	+ ईक्षा	=	परीक्षा	(इ + ई = ई)
हरि	+ ईश	=	हरीश	(इ + ई = ई)
कवि	+ ईश्वर	=	कवीश्वर	(इ + ई = ई)

ई + इ = ई (ी)

नारी	+ इंदु	=	नारींदु	(ई + इ = ई)
मही	+ इंद्र	=	महींद्र	(ई + इ = ई)
सती	+ इच्छा	=	सतीच्छा	(ई + इ = ई)
नारी	+ इंद्र	=	नारींद्र	(ई + इ = ई)
देवी	+ इच्छा	=	देवीच्छा	(ई + इ = ई)

ई + ई = ई (ी)

सती	+ ईश	=	सतीश	(ई + ई = ई)
रजनी	+ ईश	=	रजनीश	(ई + ई = ई)
नदी	+ ईश	=	नदीश	(ई + ई = ई)
मही	+ ईश	=	महीश	(ई + ई = ई)
नारी	+ ईश्वर	=	नारीश्वर	(ई + ई = ई)

(iii) उ + उ = ऊ (ू)

गुरु	+ उपदेश	=	गुरुपदेश	(उ + उ = ऊ)
साधु	+ उपदेश	=	साधूपदेश	(उ + उ = ऊ)
सु	+ उक्ति	=	सूक्ति	(उ + उ = ऊ)
लघु	+ उत्तर	=	लघूत्तर	(उ + उ = ऊ)
विधु	+ उदय	=	विधूदय	(उ + उ = ऊ)
गुरु	+ उपमा	=	गुरुपमा	(उ + उ = ऊ)

उ + ऊ = ऊ (ू)

सिंधु	+ ऊर्मि	=	सिंधूर्मि	(उ + ऊ = ऊ)
लघु	+ ऊर्मि	=	लघूर्मि	(उ + ऊ = ऊ)
अंबु	+ ऊर्मि	=	अंबूर्मि	(उ + ऊ = ऊ)
प्रभु	+ ऊर्मि	=	प्रभूर्मि	(उ + ऊ = ऊ)

ऊ + उ = ऊ (ू)

वधू	+ उत्सव	=	वधूत्सव	(ऊ + उ = ऊ)

ऊ + ऊ = ऊ (ू)

वधू	+ ऊर्जा	=	वधूर्जा	(ऊ + ऊ = ऊ)

वधू + उन्नति = वधून्नति (ऊ + उ = ऊ)
स्वयंभू + उदय = स्वयंभूदय (ऊ + उ = ऊ)
भू + उत्सर्ग = भूत्सर्ग (ऊ + उ = ऊ)

वधू + ऊर्मि = वधूर्मि (ऊ + ऊ = ऊ)
भू + ऊर्ध्व = भूर्ध्व (ऊ + ऊ = ऊ)

(ख) गुण संधि: जब अ या आ के बाद कोई भी ह्रस्व या दीर्घ स्वर इ, उ, ऋ आए तो क्रमश: ए, ओ, तथा अर् हो जाता है; जैसे–

(i) अ + इ = ए (े)

स्व + इच्छा = स्वेच्छा (अ + इ = ए)
सुर + इंद्र = सुरेंद्र (अ + इ = ए)
शुभ + इच्छा = शुभेच्छा (अ + इ = ए)
नर + इंद्र = नरेंद्र (अ + इ = ए)
धर्म + इंद्र = धर्मेंद्र (अ + इ = ए)

अ + ई = ए (े)

योग + ईश = योगेश (अ + ई = ए)
सुर + ईश = सुरेश (अ + ई = ए)
नर + ईश = नरेश (अ + ई = ए)
गण + ईश = गणेश (अ + ई = ए)
दिन + ईश = दिनेश (अ + ई = ए)
सोम + ईश्वर = सोमेश्वर (अ + ई = ए)
कमल + ईश = कमलेश (अ + ई = ए)
भव + ईश = भवेश (अ + ई = ए)

आ + इ = ए (े)

राजा + इंद्र = राजेंद्र (आ + इ = ए)
महा + इंद्र = महेंद्र (आ + इ = ए)
यथा + इष्ट = यथेष्ट (आ + इ = ए)
जया + इंद्र = जयेंद्र (आ + इ = ए)
माया + इंद्र = मयेंद्र (आ + इ = ए)

आ + ई = ए (े)

राका + ईश = राकेश (आ + ई = ए)
महा + ईश = महेश (आ + ई = ए)
उमा + ईश = उमेश (आ + ई = ए)
लंका + ईश = लंकेश (आ + ई = ए)
रमा + ईश = रमेश (आ + ई = ए)

(ii) अ + उ = ओ (ो)

भाग्य + उदय = भाग्योदय (अ + उ = ओ)
पर + उपकार = परोपकार (अ + उ = ओ)
वसंत + उत्सव = वसंतोत्सव (अ + उ = ओ)
लोक + उपचार = लोकोपचार (अ + उ = ओ)
सूर्य + उदय = सूर्योदय (अ + उ = ओ)

अ + ऊ = ओ (ो)

सागर + ऊर्मि = सागरोर्मि (अ + ऊ = ओ)
नव + ऊढ़ा = नवोढ़ा (अ + ऊ = ओ)
सूर्य + ऊष्मा = सूर्योष्मा (अ + ऊ = ओ)
भाव + ऊर्मि = भावोर्मि (अ + ऊ = ओ)
जल + ऊर्मि = जलोर्मि (अ + ऊ = ओ)

आ + उ = ओ (ो)

गंगा + उदक = गंगोदक (आ + उ = ओ)
महा + उत्सव = महोत्सव (आ + उ = ओ)
महा + उदय = महोदय (आ + उ = ओ)
महा + उदधि = महोदधि (आ + उ = ओ)
यथा + उचित = यथोचित (आ + उ = ओ)
महा + उल्लास = महोल्लास (आ + उ = ओ)

आ + ऊ = ओ (ो)

महा + ऊष्मा = महोष्मा (आ + ऊ = ओ)
महा + ऊर्जा = महोर्जा (आ + ऊ = ओ)
गंगा + ऊर्मि = गंगोर्मि (आ + ऊ = ओ)
दया + ऊर्मि = दयोर्मि (आ + ऊ = ओ)
दिवा + ऊष्मा = दिवोष्मा (आ + ऊ = ओ)

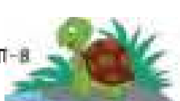

(iii) अ + ऋ = अर्

देव	+	ऋषि	=	देवर्षि	(अ + ऋ = अर्)
सप्त	+	ऋषि	=	सप्तर्षि	(अ + ऋ = अर्)
ब्रह्म	+	ऋषि	=	ब्रह्मर्षि	(अ + ऋ = अर्)
वसंत	+	ऋतु	=	वसंतर्तु	(अ + ऋ = अर्)

आ + ऋ = अर्

राजा	+	ऋषि	=	राजर्षि	(आ + ऋ = अर्)
वर्षा	+	ऋतु	=	वर्षर्तु	(आ + ऋ = अर्)
महा	+	ऋषि	=	महर्षि	(आ + ऋ = अर्)

(ग) वृद्धि संधि: जब अ या आ के बाद ए या ऐ आता है, तो दोनों के मेल से ऐ हो जाता है। अ या आ के बाद ओ या औ आता है, तो दोनों के मेल से औ हो जाता है। इसे ही **वृद्धि संधि** कहते हैं; जैसे–

(i) अ + ए = ऐ (ै)

एक	+	एक	=	एकैक	(अ + ए = ऐ)
जीव	+	एषणा	=	जीवैषणा	(अ + ए = ऐ)

आ + ए = ऐ (ै)

सदा	+	एव	=	सदैव	(आ + ए = ऐ)
यथा	+	एव	=	यथैव	(आ + ए = ऐ)
तथा	+	एव	=	तथैव	(आ + ए = ऐ)

अ + ऐ = ऐ (ै)

मत	+	ऐक्य	=	मतैक्य	(अ + ऐ = ऐ)
परम	+	ऐश्वर्य	=	परमैश्वर्य	(अ + ऐ = ऐ)
धन	+	ऐश्वर्य	=	धनैश्वर्य	(अ + ऐ = ऐ)

आ + ऐ = ऐ (ै)

महा	+	ऐश्वर्य	=	महैश्वर्य	(आ + ऐ = ऐ)
रमा	+	ऐश्वर्य	=	रमैश्वर्य	(आ + ऐ = ऐ)
राजा	+	ऐश्वर्य	=	राजैश्वर्य	(आ + ऐ = ऐ)

(ii) अ + ओ = औ (ौ)

परम	+	ओज	=	परमौज	(अ + ओ = औ)
अधर	+	ओष्ठ	=	अधरौष्ठ	(अ + ओ = औ)
दंत	+	ओष्ठ	=	दंतौष्ठ	(अ + ओ = औ)
जल	+	ओघ	=	जलौघ	(अ + ओ = औ)

आ + ओ = औ (ौ)

महा	+	ओजस्वी	=	महौजस्वी	(आ + ओ = औ)
गंगा	+	ओघ	=	गंगौघ	(आ + ओ = औ)
महा	+	ओज	=	महौज	(आ + ओ = औ)

(iii) अ + औ = औ (ौ)

वन	+	औषधि	=	वनौषधि	(अ + औ = औ)
परम	+	औदार्य	=	परमौदार्य	(अ + औ = औ)
परम	+	औषध	=	परमौषध	(अ + औ = औ)

आ + औ = औ (ौ)

महा	+	औषध	=	महौषध	(आ + औ = औ)
महा	+	औदार्य	=	महौदार्य	(आ + औ = औ)
महा	+	औघ	=	महौघ	(आ + औ = औ)

(घ) यण संधि: जब इ, उ (ह्रस्व या दीर्घ) तथा ऋ के बाद कोई असमान स्वर आए, तो उनके मेल से उनके स्थान पर क्रमश: य, व, अर् हो जाता है। इस परिवर्तन को **यण** संधि कहते हैं।

(i) इ + अ = य

अति	+	अंत	=	अत्यंत	(इ + अ = य)
यदि	+	अपि	=	यद्यपि	(इ + अ = य)
अति	+	अधिक	=	अत्यधिक	(इ + अ = य)

इ + आ = या

इति	+	आदि	=	इत्यादि	(इ + आ = या)
अति	+	आचार	=	अत्याचार	(इ + आ = या)

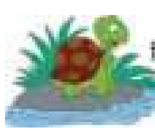

ई + अ = य

सखी + अवहेलना = सख्यवहेलना (ई + अ = य)
देवी + अलंकार = देव्यलंकार (ई + अ = य)

ई + आ = या

नदी + आगमन = नद्यागमन (ई + आ = या)
देवी + आगमन = देव्यागमन (ई + आ = या)

इ + उ = यु

प्रति + उत्तर = प्रत्युत्तर (इ + उ = यु)
अति + उत्तम = अत्युत्तम (इ + उ = यु)

इ + ऊ = यू

वि + ऊह = व्यूह (इ + ऊ = यू)
अति + ऊष्म = अत्यूष्म (इ + ऊ = यू)

इ + ए = ये

प्रति + एक = प्रत्येक (इ + ए = ये)
अधि + एषणा = अध्येषणा (इ + ए = ये)

ई + ऐ = यै

नदी + ऐश्वर्य = नद्यैश्वर्य (ई + ऐ = यै)
सखी + ऐश्वर्य = सख्यैश्वर्य (ई + ऐ = यै)

(ii) उ + अ = व

सु + अच्छ = स्वच्छ (उ + अ = व)
अनु + अय = अन्वय (उ + अ = व)

उ + आ = वा

गुरु + आदेश = गुर्वादेश (उ + आ = वा)
सु + आगत = स्वागत (उ + आ = वा)

उ + इ = वि

अनु + इच्छा = अन्विच्छा (उ + इ = वि)
अनु + इति = अन्विति (उ + इ = वि)

उ + ए = वे

अनु + एषण = अन्वेषण (उ + ए = वे)

उ + ई = वी

अनु + ईक्षण = अन्वीक्षण (उ + ई = वी)

(iii) ऋ + अ = र

मातृ + अंश = मात्रंश (ऋ + अ = र)
पितृ + अनुमति = पित्रनुमति (ऋ + अ = र)

ऋ + आ = रा

पितृ + आलय = पित्रालय (ऋ + आ = रा)
मातृ + आज्ञा = मात्राज्ञा (ऋ + आ = रा)

ऋ + इ = रि

मातृ + इच्छा = मात्रिच्छा (ऋ + इ = रि)
पितृ + इच्छा = पित्रिच्छा (ऋ + इ = रि)

ऋ + उ = रु

पितृ + उपदेश = पित्रुपदेश (ऋ + उ = रु)

(ङ) अयादि संधि: जब ए, ऐ तथा ओ, औ के बाद इनसे अलग कोई दूसरा स्वर आए तो ए के स्थान पर अय्; ऐ के स्थान पर आय्; ओ के स्थान पर अव्; औ के स्थान पर आव् हो जाता है। इसे **अयादि** (अय्+आदि) संधि कहते हैं; जैसे–

(i) ए + अ = अय

ने + अन = नयन (ए + अ = अय)
चे + अन = चयन (ए + अ = अय)

ऐ + अ = आय

नै + अक = नायक (ऐ + अ = आय)

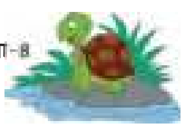

ऐ + इ = आयि

गै + इका = गायिका (ऐ + इ = आयि) | नै + इका = नायिका (ऐ + इ = आयि)

(ii) **ओ + अ = अव** पो + अन = पवन (ओ + अ = अव)

भो + अन = भवन (ओ + अ = अव)

ओ + इ = अवि भो + इष्य = भविष्य (ओ + इ = अवि)

औ + अ = आव पौ + अन = पावन (औ + अ = आव)

औ + इ = अवि नौ + इक = नाविक (औ + इ = आवि)

औ + उ = आवु भौ + अक = भावुक (औ + उ = आवु)

2. व्यंजन संधि

किसी भी व्यंजन के बाद कोई स्वर या व्यंजन आने पर जो परिवर्तन होता है, उसे **व्यंजन संधि** कहते हैं; जैसे–

सत् + जन = सज्जन

व्यंजन संधि के नियम निम्नवत् हैं-

वर्ग का प्रथम वर्ग के तीसरे वर्ण में परिवर्तन

(क) सत् + धर्म = सद्धर्म (त् का द् में परिवर्तन) वाक् + जाल = वाग्जाल

सत् + गति = सद्गति दिक् + अंत = दिगंत

(ख) वर्ग का प्रथम वर्ण पाँचवें वर्ण में परिवर्तन

उत् + नति = उन्नति | सत् + मार्ग = सन्मार्ग

तत् + मय = तन्मय | षट् + मुख = षण्मुख

त् संबंधी व्यंजन संधि के नियम

(क) त् के बाद च या छ आने पर त् च् में परिवर्तित हो जाता है; जैसे–

तत् + छाया = तच्छाया उत् + चारण = उच्चारण

(ख) त् के बाद ज, झ आने पर त् ज् में परिवर्तित हो जाता है; जैसे–

सत् + जन = सज्जन उत् + ज्वल = उज्ज्वल

(ग) त् के बाद 'ट' या 'ठ' आने पर त् ट् में परिवर्तित हो जाता है; जैसे–

तत् + टीका = तट्टीका

(घ) त् के बाद ड या ढ आने पर ड् में बदल जाता है; जैसे–

उत् + डयन = उड्डयन

(ङ) त् के बाद श् हो तो त् का च् और च् का छ बन जाता है; जैसे–

सत् + शास्त्र = सच्छास्त्र उत् + शिष्ट = उच्छिष्ट

(च) किसी स्वर के बाद यदि छ आए तो 'छ' से पूर्व च् जुड़ जाता है; जैसे–

स्व + छंद = स्वच्छंद वि + छेद = विच्छेद

(छ) म् के बाद यदि य, र, ल, व, श, ष, स, ह आए तो म् सदैव अनुस्वार या बिंदी (ं) में बदल जाता है; जैसे–

सम् + वाद = संवाद | सम् + साधन = संसाधन

सम् + शय = संशय | सम् + योग = संयोग

सम् + सार = संसार | सम् + लाप = संलाप

(ज) म् के बाद क से म तक कोई भी व्यंजन आ जाए तो म् उस व्यंजन के पांचवे वर्ण (ङ्, ञ्, ण्, न्, म्) में बदलकर शब्द के ऊपर बिंदु के रूप में लिखा जाता है; जैसे–

सम् + बंध = संबंध
सम् + जीवन = संजीवन
सम् + पूर्ण = संपूर्ण

सम् + गति = संगति
सम् + जय = संजय
सम् + तोष = संतोष

विसर्ग संधि

विसर्ग का मेल यदि किसी स्वर या व्यंजन से होता है तो विसर्ग के स्थान पर होने वाले बदलाव (परिवर्तन) को विसर्ग संधि कहते हैं; जैसे–

दु: + गुण = दुर्गुण

इसके नियम ये हैं–

(i) विसर्ग का लोप होना –

नि: + रोग = नीरोग
नि: + रस = नीरस
अत: + एव = अतएव

(ii) विसर्ग का र् होना

नि: + यात = निर्यात
दु: + उपयोग = दुरुपयोग
नि: + धन = निर्धन
पुन: + जन्म = पुनर्जन्म

(iii) विसर्ग का ष् होना–

विसर्ग के पूर्व, इ, उ के पश्चात् क, ख, ट, ढ, प हो तो विसर्ग के स्थान पर ष् हो जाता है।

जैसे – दु: + कर = दुष्कर
नि: + कलंक = निष्कलंक
धनु: + टंकार = धनुष्टंकार
नि: + फल = निष्फल

(iv) विसर्ग का श् में परिवर्तन

दु: + शासन = दुश्शासन
दु : + चरित्र = दुश्चरित्र
नि: + चय = निश्चय
नि: + चल = निश्चल

आइए, पुनरावृति करें

- दो वर्णों के मेल से जो विकार या परिवर्तन होता है, उसे **संधि** कहते हैं।
- संधि तीन प्रकार की होती है।
- इनके भी उपभेद होते हैं।

संधि

- **स्वर संधि**
  - दीर्घ संधि
  - गुण संधि
  - यण् संधि
  - वृद्धि संधि
  - अयादि संधि
- **व्यंजन संधि**
  - व्यंजन का व्यंजन के साथ
  - व्यंजन का स्वर के साथ
- **विसर्ग संधि**

अध्यापन संकेत शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को संधि तथा उसके भेदों के बारे में बताएँ तथा उन्हें संधि युक्त शब्दों के विच्छेद के माध्यम से अभ्यास करवाएँ।

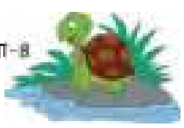

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य

Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) संधि किसे कहते हैं? बताइए।

(ख) संधि के भेदों को सोदाहरण परिभाषित कीजिए।

लेखन कार्य

Writing Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) संधि की परिभाषा दीजिए।

(ख) व्यंजन संधि की परिभाषा दीजिए।

(ग) विसर्ग संधि की परिभाषा दीजिए।

2. दिए गए शब्दों का संधि-विच्छेद कीजिए।

सूक्ति	–	....	प्रत्युत्तर	–	....	अत्यधिक	–	....
नायिका	–	....	शीतर्तु	–	....	भोजनालय	–	....
गजानन	–	....	चराचर	–	....	यथेष्ट	–	....
नायिका	–	....	स्वच्छ	–	....	यद्यपि	–	....
महेंद्र	–	....	नरेंद्र	–	....	पावक	–	....
निश्चल	–	....	निष्पाप	–	....	सदैव	–	....

3. संधि कीजिए।

उत् + ज्वल	–	....	जगत् + नाथ	–	....	अध: + पतन	–	....
दु: + गम	–	....	शरत् + चंद	–	....	सम् + चय	–	....
सप्त + ऋषि	–	....	महा + ओजस्वी	–	....	राका + ईश	–	....
देवी + अलंकार	–	....	लघु + ऊर्मि	–	....	मातृ + आज्ञा	–	....
राजा + ऋषि	–	....	ने + इका	–	....	महा + औदार्य	–	....
शे + अन	–	....	शिक्षा + आलय	–	....	अभि + इष्ट	–	....
सेवा + अर्थ	–	....	सती + ईश	–	....	भाव + अर्थ	–	....
भौ + उक	–	....						

4. सही संधि - विच्छेद के विकल्प को चुनिए।

(क)	गुर्वादेश –	☐ गुर्वा + आदेश	☐ गुरो + आदेश	☐ गुर्व + आदेश	☐ गुरु + आदेश
(ख)	पावक –	☐ पो + वक	☐ पौ + अक	☐ पाव + क	☐ पो + अक
(ग)	सदैव –	☐ सदै + व	☐ सद् + एव	☐ सदा + एव	☐ सद + ऐव
(घ)	मतैक्य –	☐ मतै + क्य	☐ मता + क्य	☐ मात + एक	☐ मत + ऐक्य
(ङ)	एकैक –	☐ एके + एके	☐ एके + एक	☐ एक + एक	☐ ऐक + ऐक
(च)	जयेंद्र –	☐ जया + इंद्र	☐ जय + इंद्र	☐ जाय + इंद्र	☐ जये + न्द्र
(छ)	यथोचित –	☐ यथा + उचित	☐ यथो + चित	☐ यथैव + उचित	☐ यथे + इत
(ज)	वधून्नति –	☐ वधु + उन्नति	☐ वधू + उन्नति	☐ वध + उन्नति	☐ वधू + नति
(झ)	नाविक –	☐ नो + इक	☐ नौ + इक	☐ नौ + विक	☐ नो + आविक
(ञ)	प्रत्युत्तर –	☐ प्रत + उत्तर	☐ प्रत्यु + उत्तर	☐ प्रति + उत्तर	☐ प्रती + उत्तर
(ट)	संशोधन –	☐ सम् + शोधन	☐ सम् + शाधन	☐ संशो + धन	☐ सन् + शोधन
(ठ)	भगवद्गीता –	☐ भगवन् + गीता	☐ भगवद् + गीता	☐ भावत् + गीत	☐ भगवती +गीता
(ड)	संजीवन –	☐ सम् + जीवन	☐ सन् + जीवन	☐ सज् + जीवन	☐ सम् + जीवन
(ढ)	संसार –	☐ सम + सार	☐ सं + सार	☐ सम् + सार	☐ संसा + र

सोचें-विचारें

Critical Thinking

5. हिंदी भाषा में कई शब्दों को अन्य भाषाओं से लिया गया है, तो क्या आप जानते हैं 'संधि' शब्द किस भाषा का है? सोच-समझकर बताइए

खेल-खेल में

Brain Storming Activity

6. कक्षा के बच्चों से संधियुक्त शब्दों की सूची बनवाएँ।

7. किसी हिंदी समाचार-पत्र में से या अपनी पाठ्यपुस्तक में से संधि युक्त शब्दों को छाँटिए और उनका संधि-विछेद भी कीजिए।

प्रेरणादायक मूल्य

जिस प्रकार संधि में वर्णों के मेल से शब्द में विकार उत्पन्न हो जाता है, ठीक उसी प्रकार ज्यादा नज़दीकियाँ रखने से मनमुटाव होता है, इसलिए कभी-कभी दूर रहने से ही संबंधों में प्रगाढ़ता बनी रहती है।

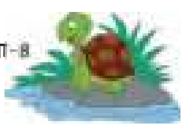

अध्याय 13

समास (Compound)

पढ़िए और समझिए

दुबई में गगनचुंबी इमारतें हैं।

तालाब में नीलकमल खिला है।

अनिल रातों-रात धनी हो गया।

बच्चो! ऊपर के उदाहरणों में गगनचुंबी (गगन को चूमने वाली), नीलकमल (नीला है जो कमल) तथा रातों-रात (रात-ही-रात में) ये सभी शब्द कोष्ठक में लिखे शब्दों के संक्षिप्त रूप हैं। अतः हम कह सकते हैं कि–

अनेक शब्दों को संक्षिप्त करके शब्द बनाने की प्रक्रिया को समास कहते हैं।

समास करते समय या तो उनकी विभक्तियों का लोप किया जाता है अथवा इसका संक्षिप्तीकरण करके नया शब्द बनाया जाता है।

समास में दो चीज़ों को समझना आवश्यक होता है–

(क) सामासिक पद : अनेक शब्दों को संक्षिप्त करने के बाद निर्मित नए शब्द सामासिक पद कहलाते हैं; जैसे– 'जितना संभव हो' से बनाया गया सामासिक पद 'यथासंभव' होगा।

(ख) समास-विग्रह : सामासिक पदों को विग्रह करने के बाद पूर्व के अनेक शब्दों में ले आने की क्रिया को समास-विग्रह कहते हैं; जैसे– ऊपर के उदाहरण में यथासंभव (सामासिक पद) का विग्रह करने पर होगा–जितना संभव हो सके।

समास के प्रकार

समास छह प्रकार के होते हैं–
1. अव्ययीभाव समास
2. तत्पुरुष समास
3. कर्मधारय समास
4. द्विगु समास
5. द्वंद्व समास
6. बहुव्रीहि समास

1. अव्ययीभाव समास– जिस समास का पहला पद अव्यय होता है और वही प्रधान होता है, उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं; जैसे–

दिनोंदिन (दिन-ही-दिन में) बेनाम (बिना नाम के)

कुछ अव्ययीभाव समास के उदाहरण निम्नलिखित हैं–

आजीवन (जीवन भर)
यथाशीघ्र (जितना शीघ्र हो सके)
प्रतिदिन (हर दिन)
दिनोंदिन (दिन-ही-दिन में)
प्रत्यक्ष (आँखों के सामने)
यथाशक्ति (शक्ति के अनुसार)
भरपेट (पेट भरकर)

आमरण (मरण तक)
सादर (आदर सहित)
प्रत्येक (एक-एक)
घर-घर (हर घर)
यथानियम (नियम के अनुसार
यथायोग्य (योग्यता के अनुसार)
प्रतिमास (प्रत्येक मास)

2. **तत्पुरुष समास :** जिस समास में दूसरा पद प्रधान होता है और दोनों पदों के बीच से कारकों के परसर्ग हट जाते हैं, उनको **तत्पुरुष समास** कहा जाता है; जैसे–

तुलसीकृत (तुलसी द्वारा कृत) पापमुक्त (पाप से मुक्त)

इनमें 'द्वारा' तथा 'से' विभक्तियों का लोप हुआ है।

कारक परसर्ग के अनुसार तत्पुरुष के उदाहरण निम्नलिखित हैं–

(क) कर्म तत्पुरुष ('को' का लोप)

ग्रामगत (ग्राम को गया हुआ)
शरणागत (शरण में आया हुआ)
सर्वप्रिय (सब को प्रिय)
यशप्राप्त (यश को प्राप्त)
ग्रंथकार (ग्रंथ को लिखने वाला)

माखनचोर (माखन को चुराने वाला)
गगनचुंबी (गगन को चूमने वाली)
मृत्युंजय (मृत्यु को जीतने वाला)
जनप्रिय (जन को प्रिय)
आकाशगत (आकाश को गया हुआ)

(ख) करण तत्पुरुष ('से' का लोप)

अकालपीड़ित (अकाल से पीड़ित)
रेखांकित (रेखा से अंकित)
भयाकुल (भय से आकुल)
श्रमसाध्य (श्रम से साध्य)
ईश्वर प्रदत्त (ईश्वर द्वारा प्रदत्त)

पथभ्रष्ट (पथ से भ्रष्ट)
भुखमरा (भूख से मरा)
भयभीत (भय से भीत)
गुणयुक्त (गुण से युक्त)
तुलसीकृत (तुलसी द्वारा कृत)

(ग) संप्रदान तत्पुरुष ('को/के लिए' का लोप)

रसोईघर (रसोई के लिए घर)
सत्याग्रह (सत्य के लिए आग्रह)
राहखर्च (राह के लिए खर्च)
पुष्पदान (पुष्प के लिए दान)

परीक्षाकेंद्र (परीक्षा के लिए केंद्र)
गुरुदक्षिणा (गुरु के लिए दक्षिणा)
विद्यालय (विद्या के लिए आलय)
हथकड़ी (हाथों के लिए कड़ी)

(घ) अपादान तत्पुरुष समास (से का लोप अलग)

शक्तिहीन (शक्ति से हीन)
पापमुक्त (पाप से मुक्त)
बंधनमुक्त (बंधन से मुक्त)

गुणहीन (गुण से हीन)
धनहीन (धन से हीन)
पदमुक्त (पद से मुक्त)

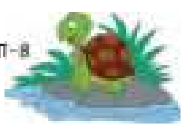

ऋणमुक्त	(ऋण से मुक्त)	आवरणहीन	(आवरण से हीन)
चरित्रहीन	(चरित्र से हीन)	न्यायच्युत	(न्याय से च्युत)
कर्तव्यविमुख	(कर्तव्य से विमुख)	देशनिकाला	(देश से निकाला)

(ङ) संबंध तत्पुरुष समास (का/ के/की)

दीनानाथ	(दीनों के नाथ)	घुड़दौड़	(घोड़े की दौड़)
पराधीन	(पर के अधीन)	देशरक्षा	(देश की रक्षा)
प्रदेशवासी	(प्रदेश का वासी)	देशवासी	(देश का वासी)
देवमूर्ति	(देव की मूर्ति)	भारतरत्न	(भारत का रत्न)
दिनचर्या	(दिन की चर्या)	गृहस्वामी	(गृह का स्वामी)

(च) अधिकरण तत्पुरुष समास (में/ पर)

घुड़सवार	(घोड़े पर सवार)	कार्यकुशल	(कार्य में कुशल)
पर्वतारोहण	(पर्वत पर आरोहण)	आपबीती	(आप पर बीती)
ध्यानमग्न	(ध्यान में मग्न)	लोकप्रिय	(लोक में प्रिय)
जलमग्न	(जल में मग्न)	रथारूढ़	(रथ पर आरूढ़)
आनंदमग्न	(आनंद में मग्न)	नीतिनिपुण	(नीति में निपुण)

3. **कर्मधारय समास :** जिस समास के दोनों पदों में विशेषण-विशेष्य या उपमान-उपमेय का संबंध होता है, साथ ही उत्तर (दूसरा) पद प्रधान हाता है, वहाँ **कर्मधारय समास** होता है; जैसे–

पुरुषोत्तम (पुरुष में जो है उत्तम)

कुछ अन्य उदाहरण हैं–

नीलकमल	(नीला है जो कमल)	कालीमिर्च	(काली है जो मिर्च)
प्रधानाध्यापक	(प्रधान है जो अध्यापक)	अंधकूप	(अंधा है जो कूप)
सद्धर्म	(सद् है जो धर्म)	पीतांबर	(पीला है जो अंबर)
महात्मा	(महान है जो आत्मा)	श्वेतांबर	(श्वेत है जो अंबर)
महाराजा	(महान है जो राजा)	दिगंबर	(दिक् है जो अंबर)
पुरुषसिंह	(सिंह के समान पुरुष)	अधपका	(आधा है जो पका)
चरणकमल	(कमल के समान चरण)		

4. **द्विगु समास :** जिस समास का पहला पद संख्यावाची विशेषण होता है। समस्तपद समाहार यानी समूह का बोध कराता है, उसे **द्विगु समास** कहते हैं; जैसे–

नवरात्रि (नवरात्रियों का समाहार)

कुछ अन्य उदाहरण नीचे दिए जा रहे हैं–

चौराहा	(चार राहों का समूह)	पंजाब	(पाँच आबों (जल) का समूह)
त्रिशूल	(तीन शूलों का समूह)	सतसई	(सात सौ दोहों का समाहार)
त्रिभुज	(तीन भुजाओं का समूह)	त्रिकाल	(तीन कालों का समाहार)

नवदेवी	(नौ देवियों का समूह)	नवनिधि	(नौ निधियों का समाहार)
नवग्रह	(नौ ग्रहों का समूह)	सप्तर्षि	(सात ऋषियों का समूह)
त्रिवेणी	(तीन वेणियों का समूह)	सप्ताह	(सात दिनों का समाहार)
तिराहा	(तीन राहों का समूह)	पंचतत्व	(पाँच तत्वों का समाहार)
पंचवटी	(पाँच वटों (वृक्षों) का समूह)	दोपहर	(दो पहरों का समाहार)
त्रिलोक	(तीन लोकों का समूह)	चौमासा	(चार मासों का समूह)
अठन्नी	(आठ आनों का समूह)		

5. **द्वंद्व समास :** जिस समास के दोनों पद प्रधान होते हैं, उन्हें **द्वंद्व समास** कहते हैं। द्वंद्व समास के दोनों पद योजक चिह्न (-) द्वारा जुड़े होते हैं; जैसे–

माता-पिता (माता और पिता)

कुछ अन्य उदाहरण नीचे दिए जा रहे हैं–

लाभ-हानि	(लाभ या हानि)	फूल-माला	(फूल और माला)
चाय-कॉफी	(चाय या कॉफी)	नर-नारी	(नर और नारी)
अच्छा-बुरा	(अच्छा या बुरा)	दाल-रोटी	(दाल और रोटी)
जीवन-मरण	(जीवन और मरण)	दिन-रात	(दिन या रात)
साग-सब्ज़ी	(साग और सब्ज़ी)	भूख-प्यास	(भूख और प्यास)
सुख-दुख	(सुख या दुख)	भाई-बहन	(भाई और बहन)
राजा-रंक	(राजा या रंक)	यश-अपयश	(यश और अपयश)

6. **बहुव्रीहि समास :** ऐसा सामासिक पद जिसमें कोई भी पद प्रधान न होकर कोई तीसरा या अन्य पद प्रधान होता है, उसे **बहुव्रीहि समास** कहते हैं; जैसे–

नीलकंठ (नीला है कंठ जिसका अर्थात् शिवजी।)

कुछ अन्य उदाहरण नीचे दिए जा रहे हैं–

दशानन	(दश मुख हैं जिसके अर्थात् रावण)
चंद्रशेखर	(चंद्र है शिखर पर जिसके अर्थात् शिव जी)
कमलनयन	(कमल के समान नेत्र हैं जिसके अर्थात् श्रीरामचंद्र जी)
लंबोदर	(लंबा है उदर जिसका अर्थात् गणेश जी)
बारहसिंहा	(बारह सींग हैं जिसके अर्थात् हिरन विशेष)
अंशुमाली	(अंशु (किरणें) माला हैं जिसकी अर्थात् सूर्य)
त्रिलोचन	(तीन हैं लोचन जिसके अर्थात् शंकर जी)
षडानन	(षड् (छह) आनन (मुख) हैं जिसके अर्थात् कार्तिकेय)

अब आइए, कर्मधारय और बहुव्रीहि समास में अंतर को जानें–

जैसे– उदारमना – उदार है जो मन (कर्मधारय)

उदारमना – उदार है मन जिसका अर्थात् व्यक्ति विशेष (बहुव्रीहि)

अध्यापन संकेत शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को सामासिक पदों का अभ्यास कराएँ तथा उन्हें सामासिक विग्रह के माध्यम से विभिन्न सामासिक रूपों से परिचित कराएँ।

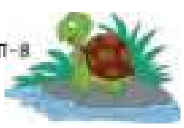

आइए, पुनरावृति करें

- **समास–** समास संक्षिप्तीकरण की एक प्रक्रिया है।
- **समास के भेद–** समास छह प्रकार के होते हैं।

समास

- **अव्ययीभाव समास** (पहला पद प्रधान)
- **तत्पुरुष समास** (उत्तर पद प्रधान) विभक्तियों का लोप
- **कर्मधारय समास** पहला पद विशेषण दूसरा पद विशेष्य उपमेय-उपमान का संबंध भी
- **द्विगु समास** प्रथम पद संख्यावाची विशेषण
- **द्वंद्व समास** दोनों पद प्रधान और या का लोप
- **बहुव्रीहि समास** किसी तीसरे पद की प्रधानता

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य

Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) समास विग्रह किसे कहते हैं?

(ख) समास के भेदों को बताइए।

(ग) तत्पुरुष समास को समझाइए।

लेखन कार्य

Writing Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) समास से आप क्या समझते हैं? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

(ख) कर्मधारय समास और बहुव्रीहि समास में क्या अंतर है?

(ग) द्विगु समास के बारे में बताइए।

2. दिए गए समस्तपदों का विग्रह करके समास का नाम भी लिखिए।

(क) त्रिलोचन – ....

(ख) कालीमिर्च – ....

(ग) शक्तिसंपन्न – ....

(घ) सप्तर्षि – ....

(ङ) पंजाब – ....

(च) दिनोंदिन – ....

(छ) माता-पिता – ....

(ज) कमलनयन – ....

3. दिए गए समास-विग्रह का समस्तपद बनाकर समास का नाम भी लिखिए।

(क) रसोई के लिए घर – ....

(ख) चार हैं भुजाएँ जिसकी अर्थात् विष्णु – ....

(ग) नौ निधियों का समाहार – ....

(घ) जितना शीघ्र है – ....

(ङ) माखन को चुराने वाला – ....

(च) सेना का नायक – ....

(छ) श्याम और सुंदर है जो – ....

(ज) सिंह के समान शक्तिशाली पुरुष – ....

4. सही विकल्प का चयन कीजिए।

(क) **नीला है जो कमल – नीलकमल**

☐ बहुव्रीहि ☐ द्विगु ☐ कर्मधारय ☐ अव्ययीभाव

(ख) **तीन कालों का समाहार– त्रिकाल**

☐ कर्मधारय ☐ अव्ययीभाव ☐ द्विगु ☐ द्वंद्व

(ग) **बिना जान-पहचान का– अनजान**

☐ द्विगु ☐ अव्ययीभाव ☐ कर्मधारय ☐ तत्पुरुष

(घ) **पुरुषों में जो उत्तम है–पुरुषोत्तम**

☐ कर्मधारय ☐ बहुव्रीहि ☐ द्विगु ☐ तत्पुरुष

सोचें-विचारें

Critical Thinking

5. शब्दों के विभिन्न समूह को संक्षिप्त करके सामासिक पद बनते हैं, तो जरा सोचिए, 'पूर्व पद' तथा 'उत्तर पद' के योग से किसका निर्माण होगा? सोचकर बताइए।

खेल-खेल में

Brain Storming Activity

6. दी गई शब्द सारिणी में से समस्तपद छाँटकर लिखिए।

दे	स	त	स	ई	श	ता	ब्दी	वा
श	य	था	शी	घ्र	नी	श्या	से	ल्मी
नि	पी	स	रा	त्रि	ति	म	ना	कि
का	तां	त	धा	लो	कु	सुं	ना	र
ला	ब	स	कृ	च	श	द	य	चि
	र	ई	ष्ण	न	ल	र	क	त

....

....

....

....

....

....

प्रेरणादायक मूल्य

जब दो शब्दों के मेल से समास बनता है तो उनके बीच के विभक्ति चिह्नों का लोप हो जाता है, ठीक उसी प्रकार हम अपने अंदर स्वार्थीपन को त्यागकर साथ जुड़ेंगे तो देश का कल्याण होगा।

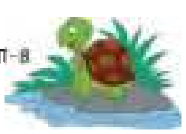

अध्याय 14

कारक
(Case)

पढ़िए और समझिए

दिए गए चित्र देखिए और उनके नीचे लिखे वाक्य पढ़िए–

सीता ने पत्र लिखा।

सीता ने मीता को पत्र लिखा।

पिता जी मेरे लिए कमीज़ ले आए हैं।

बच्चो! आपने देखा कि इन वाक्यों में ने, को, लिए को यदि वाक्य में से हटा दें, तो वाक्य का अर्थ ही समझ में नहीं आएगा। इनसे वाक्य में लेना, देना, संबंध आदि प्रकट हो रहा है। इन शब्दों को कारक कहते हैं। हम कारक को इस प्रकार भी कह सकते हैं कि–

वाक्य में संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध वाक्य में क्रिया के साथ-साथ अन्य पदों से किया जाए, उसे कारक कहते हैं।

अब आइए, संक्षेप में कारक के भेदों को जानते हैं।

कारक का नाम	चिह्न	वाक्य
कर्ता कारक	ने	राम ने तीर चलाया।
कर्म कारक	को	राम तीर चला रहे हैं। राधे नाव को चला रहा है।
करण कारक	से/द्वारा	रामू बस से गाँव गया।
संप्रदान कारक	को/के लिए	माता जी ने पुजारी को दक्षिणा दी।
अपादान कारक	से (अलग)	पेड़ से पत्ते गिरते हैं।
संबंध कारक	का, की, के, रा, रो, रे	यह राम की पुस्तक है।
अधिकरण कारक	में, पर	कबूतर पेड़ पर बैठे हैं।
संबोधन कारक	हे!, अरे!	अरे! मनचंदा, शहर से कब आया?

1. **कर्ता कारक–** वाक्य में क्रिया को संपन्न करने वाला या जिसके द्वारा क्रिया संपन्न की जाती है, उसे कर्ता कारक कहते हैं। इसका चिह्न 'ने' होता है। चिह्न को परसर्ग भी कहा जाता है; जैसे–

रंजना ने कार चलाई।

धोबी ने कपड़े धोए।

निखिल पढ़ता है।

कर्ता कारक परसर्ग सहित और परसर्ग रहित दोनों होता है। ऊपर का तीसरा उदाहरण परसर्ग रहित है।

2. **कर्म कारक–** वाक्य में जिस संज्ञा या सर्वनाम पद पर क्रिया के व्यवहार का फल पड़ता है, वह कर्म कारक कहलाता है। इसकी विभक्ति 'को' है; जैसे–

मैंने नौकर को बाज़ार भेजा।

पिता जी ने फाइलों को निबटाया।

राधे ने मोहन को घुमाया।

कर्म कारक में क्रिया का सीधा फल कर्म पर पड़ता है। कर्ता पर सीधा फल नहीं पड़ता है।

3. **करण कारक-** क्रिया की संपन्नता जिस साधन (करण) से होती है, उसे करण कारक कहते हैं। इसका विभक्ति चिह्न 'से' या 'द्वारा' है; जैसे–

रवि के पिता जी ने डंडे से साँप को मारा।

मैंने शादी की सूचना श्याम को पत्र द्वारा दी।

पाकिस्तान पर बम-वर्षक विमान से बम गिराए गए।

यहाँ क्रिया की संपन्नता, डंडे, पत्र, बमवर्षक विमान के साधनों से हो रही है। इसलिए यहाँ करण कारक कहलाएगा।

4. **संप्रदान कारक–** जिस किसी को उदारता या शुद्ध मन से कुछ दिया जाए, उसे संप्रदान कारक कहते हैं। इसका चिह्न 'को, के लिए' है; जैसे–

माता जी ने नौकरानी को साड़ी दी।

पिता जी पंडित जी के लिए वस्त्र ले आए।

कविता ने विमला को लड्डू दिए।

यहाँ सभी उदाहरणों में क्रिया स्वेच्छापूर्वक होने से संपन्न हुई है। इसलिए यहाँ पर संप्रदान कारक का प्रयोग हुआ है।

5. **अपादान कारक–** अपादान कारक में अलग होने का भाव होता है, इसलिए वहाँ अपादान कारक का प्रयोग किया जाता है। इसका परसर्ग 'से (अलग होना)' है; जैसे–

भैंस पानी से बाहर निकल गई।

रंजना संजना से अधिक सुंदर है।

साँप नेवले से डरता है।

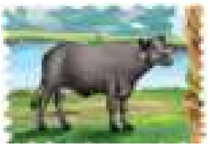

यहाँ डरना, तुलना करना, अलग होने का भाव है। ऐसी चीज़ों में अपादान कारक का प्रयोग किया जाता है।

6. **संबंध कारक–** वाक्य में संज्ञा अथवा सर्वनाम के जिस रूप से उसके किसी दूसरे के साथ संबंध होने की जानकारी होती है, उसे संबंध कारक कहते हैं। इसके परसर्ग हैं– रा, री, रे, का, की, के, ना, नी, ने; जैसे–

यह सीता का बस्ता है।

यह पुस्तक तुम्हारी है।

माँ ने तुम्हारे लिए लड्डू बनाए हैं।

7. **अधिकरण कारक–** जिस पद के द्वारा क्रिया करने के आधार का पता चलता है, वहाँ अधिकरण कारक का प्रयोग किया जाता है। इसका परसर्ग है– 'में', 'पर'; जैसे–

पेड़ों पर फल लगे हैं।

पानी में मछलियाँ तैर रही हैं।

कबूतर डाल पर बैठे हैं।

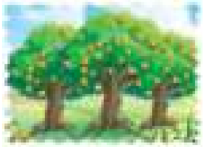

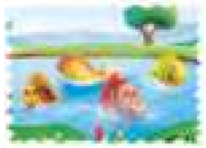

यहाँ पेड़, पानी तथा डाल क्रमशः फलों, मछलियों तथा कबूतर के लिए आधार का कार्य कर रहे हैं। अतः यहाँ अधिकरण कारक का प्रयोग हुआ है।

8. **संबोधन कारक–** किसी भी व्यक्ति को दूर से पुकारने या बुलाने के लिए जिस शब्द का प्रयोग किया जाता है, उसे संबोधन कारक कहते हैं। इसका परसर्ग है– हे!, अरे! आदि; जैसे–

अरे राघव! यहाँ तो आओ।

ओ भाई! ज़रा बात सुनना।

हे! कहाँ जा रहे हो?

संबोधन कारक में संबोधन चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

कर्मकारक और संप्रदान कारक में अंतर

यद्यपि दोनों ही कारकों में 'को' चिह्न का प्रयोग किया जाता है, तो भी दोनों कारकों में कुछ अंतर होता है; जैसे–

नंदन ने पंकज को चिढ़ाया। (कर्म कारक)

नंदन ने पंकज को पुस्तक दी। (संप्रदान कारक)

यहाँ आपने देखा कि कर्म कारक में क्रिया का प्रभाव केवल कर्म पर पड़ रहा है, किंतु संप्रदान वाले उदाहरण में कर्ता द्वारा कर्म (पंकज) को पुस्तक देने (प्रदान करने) का कार्य किया गया है, इसलिए यहाँ संप्रदान कारक का प्रयोग हुआ है।

करण कारक और अपादान कारक में अंतर

करण कारक और अपादान कारक दोनों का परसर्ग 'से' है। किंतु दोनों में काफ़ी अंतर है; जैसे–

मैं रेलगाड़ी से जयपुर गया। (करण कारक)

साँप बिल से बाहर आ गया। (अपादान कारक)

यहाँ जयपुर जाने का साधन रेलगाड़ी थी, इसलिए करण कारक का प्रयोग हुआ।

दूसरे उदाहरण में साँप बिल से बाहर आ गया अर्थात् बिल से अलग हो गया, यहाँ अपादान कारक का प्रयोग हुआ है।

अध्यापन संकेत शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को परसर्ग/विभक्ति चिह्नों से अवगत कराएँ तथा कारक का प्रयोग वाक्य में करना सिखाएँ।

आइए, पुनरावृति करें

- **कारक**– संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध वाक्य में क्रिया के साथ जाना जाता है, उसे कारक कहते हैं।
- कारक के आठ भेद होते हैं।

कारक के भेद

- **कर्ता कारक** (ने/)
- **कर्म कारक** (को/)
- **करण कारक** (से/द्वारा)
- **संप्रदान कारक** (को/के लिए)
- **अपादान कारक** से (अलग)
- **संबंध कारक** रा, रे, री, का, के, की, ना, ने, नी
- **अधिकरण** (में/पर)
- **संबोधन** (हे!, हो!, अरे!)

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य

Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) कारक किसे कहते हैं? बताइए।

(ख) कारक के भेदों को परिभाषित कीजिए।

(ग) संबंध कारक से आप क्या समझते हैं? बताइए।

लेखन कार्य

Writing Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) कारक को परिभाषित कीजिए।

(ख) करण कारक और अपादान कारक में अंतर बताइए।

(ग) संप्रदान कारक को सोदाहरण परिभाषित कीजिए।

(घ) परसर्ग किसे कहते हैं?

2. दिए गए वाक्यों में उचित परसर्ग लगाइए।

(क) सरिता .... बाज़ार .... साड़ी खरीदी।

(ख) यह पुस्तक पापा लखन .... ले आए हैं।

(ग) दशरथ .... तीर श्रवण कुमार .... मारा।

(घ) कबूतर डाल .... बैठे हैं।

(ङ) नीलांजना .... पोशाक बहुत सुंदर है।

3. **दिए गए परसर्गों को उनके सही भेद से रेखा खींचकर मिलाइए।**

(क)	से / द्वारा	(i)	संप्रदान कारक
(ख)	का, की, रा	(ii)	संबोधन कारक
(ग)	को, के लिए	(iii)	कर्म कारक
(घ)	से (अलग)	(iv)	अपादान कारक
(ङ)	हे, हो, अरे	(v)	संबंध कारक
(च)	ने	(vi)	करण कारक
(छ)	को	(vii)	कर्ता कारक

सोचें-विचारें

Critical Thinking

4. **शब्द के किस रूप से किसी को पुकारा जाए तो वहाँ संबोधन का प्रयोग होता है, तो जरा सोचिए कि संबोधन वाले शब्दों का इसके अलावा कहाँ प्रयोग होता है?**

खेल-खेल में

Brain Storming Activity

5. **कक्षा अध्यापक/अध्यापिका जी श्यामपट्ट पर कुछ कारक चिह्नों को लिखकर उसके वाक्य प्रयोग बच्चों से पूछें, ताकि कारक स्पष्ट हो जाएँ।**

प्रेरणादायक मूल्य

किसी वाक्य में प्रयुक्त शब्दों के साथ क्रिया के संबंध को कारक कहते हैं, ठीक उसी प्रकार कोई व्यक्ति जब अच्छे गुणों का समावेशन करता है, तो कुशल मानवता का निर्माण होता है।

अध्याय 15

उपसर्ग
(Prefix)

पढ़िए और समझिए

दिए गए चित्र देखिए और उनके नीचे लिखे शब्दों पर ध्यान दीजिए–

नीता को उपहार मिला।	यह उपवन सुंदर है।	नंदू बड़ा खुशदिल है।

बच्चो! ऊपर के वाक्यों में रंगीन शब्दों– उपहार, उपवन तथा खुशदिल में मूल शब्द हैं– हार, वन तथा दिल। इन शब्दों के पहले क्रमशः उप, उप तथा खुश उपसर्ग लगे हैं। इनसे मूल शब्दों के अर्थ बदल जाते हैं। मूल शब्दों के पूर्व लगने वाले ये शब्द **उपसर्ग** कहे जाते हैं। अतः हम कह सकते हैं कि–

ऐसे शब्दांश जो किसी शब्द के पहले जुड़कर नए शब्द का निर्माण करते हैं और उसके अर्थ में परिवर्तन ला देते हैं, वे उपसर्ग कहलाते हैं।

जैसे– वि + हार = विहार   प्र + हार = प्रहार

अप + मान = अपमान   अति + आचार = अत्याचार

उपसर्ग के प्रकार

हिंदी भाषा में निम्नलिखित उपसर्ग होते हैं–

1. संस्कृत के उपसर्ग   2. हिंदी के उपसर्ग   3. उर्दू/ फारसी / अंग्रेज़ी के उपसर्ग   4. संस्कृत के अव्यय

1. **संस्कृत के उपसर्ग**– ऐसे उपसर्ग जिनसे संस्कृत के शब्दों का निर्माण होता है, वे संस्कृत के उपसर्ग कहलाते हैं; जैसे– दुस् + साहस = दुस्साहस

संस्कृत के कुछ उपसर्ग इस प्रकार हैं–

उपसर्ग	अर्थ	उपसर्गयुक्त शब्द
अनु	पीछे	अनुचर, अनुक्रम, अनुकंपा, अनुसार
अ	नहीं/ अभाव	असत्य, अखंड, अधर्म, अज्ञान
आ	सहित/ तक	आहार, आजन्म, आचरण, आजीवन
अव	हीन/बुरा	अवनत, अवहेलना, अवतार, अवगुण

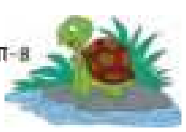

उपसर्ग	अर्थ	उपसर्गयुक्त शब्द
उप	छोटा/अच्छा	उपवन, उपचार, उपहास, उपस्थित
अप	बुरा/ विरुद्ध	अपकार, अपयश, अपमान, अपभ्रंश
अन्	अभाव/नहीं	अनेक, अनादर, अनादि, अनंत
निर्	निषेध	निर्दोष, निर्भय, निर्जल, निर्लज्ज
कु	बुरा	कुरूप, कुपुत्र, कुमार्ग, कुमति
उत्	उत्कर्ष/ऊपर	उत्थान, उत्पन्न, उत्साह, उत्कर्ष
उद्	ऊपर/उत्कर्ष	उद्घाटन, उद्योग, उद्भव, उद्घोष
दुस्	कठिन	दुस्तर, दुस्साहस, दुस्साध्य, दुष्प्रचार
दुर्	कठिन/बुरा	दुर्गम, दुर्घटना, दुर्बल, दुर्गति
अभि	ओर/सामने	अभिप्राय, अभिमान, अभियान, अभ्यस्त
निस्	निषेध	निस्तेज, निस्संदेह, निस्संतान, निस्तार
प्रति	विरोध/ प्रत्येक	प्रतिलिपि, प्रतिक्रिया, प्रतिमास, प्रतिघात
सम्	पूर्णता/ संयोग	संपूर्ण, संगीत, संहार, संगम
प्र	आगे/अधिक	प्रहार, प्रचार, प्रमाण, प्रकट, प्रचार
नि	भीतर/ नीचे	नियम, निवास, नियुक्ति, निबंध
वि	विरोध/विशेषता	विदेश, विहार, व्याकरण, विशेष
सु	अच्छा	सुमन, सुपुत्र, सुगंध, सुकर्म, सुवास
स	साथ	सफल, सहर्ष, सादर, सपरिवार
परा	अधिक/उल्टा	पराजय, परास्त, पराक्रम, पराकाष्ठा
स्व	अपना/निज	स्वराज, स्वार्थ, स्वदेश, स्वतंत्र, स्वाभिमान

2. **हिंदी के उपसर्ग–** ऐसे उपसर्ग और मूल शब्द जो मिलकर हिंदी शब्दों का निर्माण करते हैं, वे हिंदी के उपसर्ग कहे जाते हैं; जैसे–

चौ + बीस = चौबीस

अध + पका = अधपका

बिन + खिला = बिनखिला

हिंदी के उपसर्ग इस प्रकार हैं–

उपसर्ग	अर्थ	उपसर्गयुक्त शब्द
भर	भरा	भरसक, भरपेट, भरपूर, भरमार
अध	आधा	अधकचरा, अधमरा, अधखुला, अधजला
औ	हीन	औघड़, औसत, औतार
अन	अभाव/निषेध	अनपढ़, अनचाहा, अनजान, अनबन
चौ	चार	चौराहा, चौमास, चौदह, चौसर
नि	रहित/नहीं	निकम्मा, निडर, निहत्था, निहाल
क/कु	बुरा	कपूत, कुजात, कुलच्छनी
दु/दो	कम, दो	दुगुना, दुलत्ती, दोबारा, दोमुँहा

उपसर्ग	अर्थ	उपसर्गयुक्त शब्द
उन	एक कम	उनतीस, उनसठ, उनहत्तर, उनतालीस
बिन	रहित/ बिना	बिनब्याही, बिनचाहा, बिनबुलावा
पर	दूसरा/दूसरी पीढ़ी	परनाना, परदादी, परनानी, परदादा

3. **उर्दू/फारसी के उपसर्ग–** ऐसे उपसर्ग और मूल शब्द जिनसे उर्दू/फ़ारसी शब्दों का निर्माण होता है, वे उर्दू/फ़ारसी उपसर्ग कहे जाते हैं; जैसे– गैर + जिम्मेदार = गैर जिम्मेदार

दर + मियान = दरमियान

सर + दार = सरदार

उर्दू / फारसी के कुछ उपसर्ग नीचे दिए जा रहे हैं–

उपसर्ग	अर्थ	उपसर्गयुक्त शब्द
ना	नहीं	नापसंद, नामंजूर, नाचीज़, नाबालिग
ला	बिना	लापरवाह, लाइलाज, लाजवाब, लावारिस
कम	थोड़ा	कमउम्र, कमज़ोर, कमअक्ल, कमबख्त
बा	साथ	बाअदब, बाकायदा, बाइज्ज़त
ब	साथ	बतौर, बखूबी, बदौलत, बनाम, बदस्तूर,
बद	बुरा	बदनाम, बदसूरत, बदतमीज़, बदबख्त
सर	प्रमुख	सरदार, सरताज, सरहद, सरपंच
बे	बिना	बेकरार, बेईमान, बेपनाह, बेखबर
दर	में	दरअसल, दरकिनार, दरमियान, दरगुज़र
खुश	प्रसन्न	खुशमिज़ाज, खुशबू, खुशखबरी, खुशहाल
हम	साथ	हमराज, हमसफर, हमजोली, हमदम

अंग्रेज़ी के उपसर्ग एवं कुछ उदाहरण–

उपसर्ग	अर्थ	उपसर्गयुक्त शब्द
हेड	प्रधान	हेडमास्टर, हेडऑफिस, हेडक्लर्क
डिप्टी	उप/सहायक	डिप्टी जेलर, डिप्टी डायरेक्टर, डिप्टी ऑफिसर
सब	अधीन	सबस्टेशन, सबइंस्पेक्टर, सबरजिस्ट्रार
चीफ	मुख्य	चीफसेक्रेटरी, चीफ मिनिस्टर, चीफ कमिश्नर
जनरल	प्रधान	जनरल सेक्रेटरी, जनरल मैनेजर
असिस्टेंट	सहायक	असिस्टेंट मैंनेजर, असिस्टेंट प्रोफेसर
वाइस	सहायक	वाइस प्रेसीडेंट, वाइस चांसलर, वाइस कैप्टन

4. **संस्कृत के अव्यय उपसर्ग के रूप में :** संस्कृत शब्दों के कुछ अव्यय शब्द भी उपसर्ग के रूप में प्रयुक्त होकर नए शब्दों का निर्माण करते हैं, जो निम्नलिखित हैं–

अध्यापन संकेत शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को उपसर्ग युक्त शब्दों का अभ्यास कराएँ।

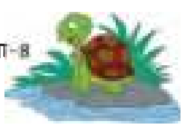

उपसर्ग	अर्थ	उपसर्गयुक्त शब्द
चिर	अधिक समय	चिरपरिचित, चिरकाल, चिरस्थायी, चिरंजीवी
सत्	अच्छा	सत्संग, सद्‌भावना, सत्पुरुष, सत्साहित्य
अंत:	अंदर	अंतर्दर्शन, अंतरात्मा, अंतर्मन, अंतर्देशीय
अ	अभाव	अहिंसा, असुंदर, अज्ञान, अभाव, असाध्य
बहिस् / बहिर	बाहर	बहिर्गमन, बहिष्कार, बहिस्कृत, बहिर्मुखी
अध:	नीचे	अध:पतन, अधोमुखी, अधोगति, अधोमार्गी
स्व	अपना	स्वराज्य, स्वदेश, स्वावलंबन, स्वजन
पुनर्	पुन: / दोबारा	पुनर्कथन, पुनर्विवाह, पुनरुक्ति, पुनर्निर्माण
सु	अच्छा	सुकर्म, सुपात्र, सुपुत्र, सुयश
कु	बुरा	कुख्यात, कुपात्र, कुपुत्र, कुकृत्य
आविर्	प्रकट	आविर्भाव, आविर्भूत
पर	अन्य	परलोक, परोपकार, पराधीन, परतंत्र
स्वयं	अपने-आप	स्वयंवर, स्वयंसेवक, स्वयंचालित, स्वयंप्रकाश
पुरा	पहले	पुराजीव, पुरापाषाण, पुरातत्व, पुरालेख
सह	साथ	सहोदर, सहपाठी, सहयोग, सहकर्मी
अलम्	पर्याप्त	अलंकार, अलंकृत

आइए, पुनरावृति करें

- **उपसर्ग–** ऐसे शब्दांश जो मूल शब्दों से पहले जुड़कर उनके अर्थ में परिवर्तन ला देते हैं, उन्हें **उपसर्ग** कहते हैं।
- उपसर्ग के कई प्रकार होते हैं– 1. संस्कृत के उपसर्ग 2. हिंदी के उपसर्ग 3. उर्दू/फारसी/अंग्रेज़ी के उपसर्ग 4. संस्कृत के अव्यय।

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य

Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) उपसर्ग किसे कहते हैं? बताइए।

(ख) उपसर्ग के प्रकार बताइए।

लेखन कार्य

Writing Skills

1. **दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**

(क) उपसर्ग किसे कहते हैं?

(ख) उपसर्ग कितने प्रकार के होते हैं?

(ग) संस्कृत के उपसर्ग के बारे में जानकारी दीजिए।

2. दिए गए उपसर्गों से दो-दो शब्द बनाइए।

सह – ....
अ – ....
पुरा – ....
गैर – ....
भर – ....
स्व – ....
अधः – ....
चौ – ....
प्रति – ....
चिर – ....
हम – ....

कु – ....
प्र – ....
बहिर् – ....
अध – ....
सु – ....
स्व – ....
सर – ....
परि – ....
नि – ....
बा – ....
बद – ....

3. दिए गए शब्दों में से उपसर्ग और मूलशब्द को अलग करके लिखिए।

चौराहा = ... + ...
दरअसल = ... + ...
निवास = ... + ...
सपरिवार = ... + ...
अतीव = ... + ...
परास्त = ... + ...
प्रतिक्रिया = ... + ...
प्रदक्षिणा = ... + ...
बिनबुलाया = ... + ...
गैरइरादतन = ... + ...
समकोण = ... + ...
लापरवाह = ... + ...
बाअदब = ... + ...
अनबन = ... + ...

प्रहार = ... + ...
संपत्ति = ... + ...
सुकर्म = ... + ...
खुशमिज़ाज = ... + ...
दरमियान = ... + ...
कमउम्र = ... + ...
पुनर्वास = ... + ...
सज्जन = ... + ...
आविर्भाव = ... + ...
स्वयंसेवक = ... + ...
स्वदेश = ... + ...
हमसफर = ... + ...
समकालीन = ... + ...
भरपेट = ... + ...

4. सही उपसर्ग लगाकर रिक्त स्थान भरिए।

.... + मार = ...
.... + पात्र = ...
.... + मन = ...
.... + ब्याही = ...
.... + कूल = ...
.... + पुरुष = ...
.... + मान = ...

.... + व्यय = ...
.... + बालिग = ...
.... + देश = ...
.... + परवाह = ...
.... + जिम्मेदार = ...
.... + निर्माण = ...
.... + भाग = ...

.... + हार = ...

.... + पूर्ण = ...

.... + मुखी = ...

.... + आत्मा = ...

.... + कार = ...

.... + तरफ = ...

.... + सूरत = ...

.... + हत्था = ...

5. दिए गए शब्दों के उपसर्ग और मूलशब्द के सही विकल्प को चुनिए।

(क) **संवाद–**

☐ सम + वाद ☐ सम् + वाद ☐ सम्म + वाद ☐ साम + वाद

(ख) **प्रतिकूल–**

☐ प्रर + कूल ☐ प्रती + कूल ☐ प्रति + कूल ☐ प्रत + कूल

(ग) **अत्याचार–**

☐ अत्या + चार ☐ अती + आचार ☐ अत्य + आचार ☐ अति + आचार

(घ) **खुशखबरी–**

☐ खु + शखबरी ☐ खुश् + खबरी ☐ खुश + खबरी ☐ खुशी + खबरी

6. सही विकल्प का चुनाव कीजिए।

(क) **दुस्** + **शासन** से शब्द बनेगा–

☐ दुस्शासन ☐ द्शासन ☐ दुश्शासन ☐ दुश्वासन

(ख) **सत्** + **जन** से शब्द बनेगा–

☐ सरजन ☐ सज्ज्न ☐ सज्जन ☐ सतजन

(ग) **नि:** + **संकोच** से शब्द बनेगा–

☐ नि:कोच ☐ निस्कोच ☐ निस्संकोच ☐ निसंकोच

(घ) **निर्** + **वस्त्र** से शब्द बनेगा–

☐ निरावस्त्र ☐ निरवस्त्र ☐ निर्वस्त्र ☐ र्निवस्त्र

सोचें-विचारें

Critical Thinking

7. जरा सोचिए! यदि संपूर्ण हिंदी भाषा में से 'उपसर्ग' हटाकर अलग कर दिए जाएँ तो क्या नवीन शब्द का निर्माण संभव हो पाएगा?

खेल-खेल में

Brain Storming Activity

8. छात्रों से कुछ उपसर्गयुक्त शब्दों की शब्दाक्षरी का खेल खिलवाएँ।

प्रेरणादायक मूल्य

जिस प्रकार शब्दों में उपसर्ग का प्रयोग करके वाक्य के अर्थ में परिवर्तन हो जाता है ठीक उसी प्रकार वैयक्तिक चरित्र में गुणों के समावेशन से महान व्यक्तित्व का निर्माण होता है।

अध्याय 16

प्रत्यय
(Suffix)

पढ़िए और समझिए

दिए गए चित्र देखिए और उनके नीचे लिखे रंगीन शब्दों पर ध्यान दीजिए–

रमेश अच्छा धावक है।

नेहा की लिखावट सुंदर है।

गली में फलवाला आया है।

बच्चो! आपने देखा कि 'धावक' शब्द (धाव्+अक) से, 'लिखावट' शब्द (लिख+आवट) से और 'फलवाला' शब्द (फल+वाला) से जुड़कर बना है। मूलधातु धाव्, लिख तथा फल के बाद जो शब्दांश बाद में जुड़े हैं, (अक, आवट, वाला) ये ही प्रत्यय कहे जाते हैं। अत: हम कह सकते हैं कि–

जो शब्दांश मूल शब्द या धातु के अंत में जुड़कर नए शब्द का निर्माण करते हैं और मूल शब्द के अर्थ में परिवर्तन ला देते हैं, वे प्रत्यय कहे जाते हैं।

प्रत्यय के भेद

प्रत्यय मूलत: दो प्रकार के होते हैं– कृत् प्रत्यय तथा तद्धित प्रत्यय।

(क) कृत् प्रत्यय– जो प्रत्यय क्रिया धातुओं के अंत में जुड़कर नए शब्द का निर्माण करते हैं और उनके अर्थ में परिवर्तन ला देते हैं, उन्हें कृत् प्रत्यय कहते हैं; जैसे–

खेल (क्रिया) + औना (प्रत्यय) = खिलौना

झूल (क्रिया धातु) + आ (प्रत्यय) = झूला

कृत् प्रत्यय के भेद

इसके पाँच भेद होते हैं– 1. कर्तृवाचक कृत् प्रत्यय 2. कर्मवाचक कृत् प्रत्यय 3. करणवाचक कृत् प्रत्यय 4. भाववाचक कृत् प्रत्यय 5. क्रियावाचक कृत् प्रत्यय।

1. कर्तृवाचक कृत् प्रत्यय:

प्रत्यय	मूलधातु	प्रत्यय से निर्मित शब्द
अक	चल्, धाव्, पठ, गै	चालक, धावक, पाठक, गायक

अक्कड़	घूम, बूझ, भूल, पी	घुमक्कड़, बुझक्कड़, भुलक्कड़, पियक्कड़
आऊ	टिक, खा, पक, चल	टिकाऊ, खाऊ, पकाऊ, चलाऊ
एरा	बस, लूट, काम	बसेरा, लुटेरा, कमेरा
हार	पालना, तारना, रखना, खेना	पालनहार, तारनहार, रखनहार, खेवनहार
ऐया/वैया	खे, गा, रख	खिवैया, गवैया, रखैया

2. कर्मवाचक कृत् प्रत्यय

प्रत्यय	मूलधातु	प्रत्यय से निर्मित शब्द
ना	गा, खा, पाल, पी	गाना, खाना, पालना, पीना
नी	चल, ओढ़, बढ़	चलनी, ओढ़नी, बढ़नी
आ	झूल, ठेल, दान	झूला, ठेला, दाना
औना	बिछा, खेल, घूम	बिछौना, खिलौना, घुमौना
ऊ	झाड़, फाड़, आड़	झाड़ू, फाड़ू, आड़ू

3. करणवाचक कृत् प्रत्यय

प्रत्यय	मूलधातु	प्रत्यय से निर्मित शब्द
अन	बेल, झाड़, ढक, साल	बेलन, झाड़न, ढक्कन, सालन
आनी	मथ, पठान	मथानी, पठानी
आ	ठेल, झूल, घूम	ठेला, झूला, घूमा
ऊ	झाड़, चाल	झाड़ू, चालू
औटी	कस	कसौटी

द्रष्टव्य– कर्मवाचक और करणवाचक कृत् प्रत्यय कभी-कभी एक-से दिखाई देते हैं, किंतु उनका प्रायोगिक अंतर इस प्रकार समझिए–

खिलौना यहाँ रख दो। (कर्मवाचक)

बच्चा खिलौना से खेल रहा है। (करणवाचक)

4. भाववाचक कृत् प्रत्यय

प्रत्यय	मूलधातु (क्रिया)	प्रत्यय से निर्मित शब्द
आवा	छल, बुला, दिख, भूल, चढ़	छलावा, बुलावा, दिखावा, भुलावा, चढ़ावा
आई	लड़, लिख, चढ़, पढ़	लड़ाई, लिखाई, चढ़ाई, पढ़ाई
अंत	गढ़, भिड़	गढ़ंत, भिड़ंत
अन	चल, मिल, गम	चलन, मिलन, गमन
आन	उड़, थक, ढल	उड़ान, थकान, ढलान
आवट	लिख, मिल, दिख, सज	लिखावट, मिलावट, दिखावट, सजावट
आपा	पूज्	पुजापा

आस	पी, भड़	प्यास, भड़ास
आव	कस, बह, फैल	कसाव, बहाव, फैलाव
औती	काट, चुन	कटौती, चुनौती
ई	हँस, बोल, फँस	हँसी, बोली, फँसी
न	ले-दे, चल, गल	लेन-देन, चलन, गलन

5. क्रियावाचक कृत् प्रत्यय

प्रत्यय	मूलधातु (क्रिया)	प्रत्यय से निर्मित शब्द
कर	गा, सो, खा, पी	गाकर, सोकर, खाकर, पीकर
ता	बोल, हँस, बह, चल	बोलता, हँसता, बहता, चलता
या	रो, गा, खा, सो	रोया, गाया, खाया, सोया
आ	लिख, झूल, पढ़	लिखा, झूला, पढ़ा

(ख) तद्धित प्रत्यय– क्रिया से अलग, संज्ञा, सर्वनाम या विशेषण शब्दों के अंत में लगकर तद्धित प्रत्यय बनाए जाते हैं। ये हैं–

1. भाववाचक संज्ञाएँ बनाने वाले तद्धित प्रत्यय

प्रत्यय	मूल शब्द	प्रत्यय युक्त शब्द
ता	मधुर, कटु, मानव, सरल, लघु	मधुरता, कटुता, मानवता, सरलता, लघुता
पन	बच्चा, पागल, बाँझ, अपना	बचपन, पागलपन, बाँझपन, अपनापन
नी	चाँद, बालक, कूट	चाँदनी, बालकनी, कुटनी
आपा	बूढ़ा, मोटा, पूजा	बुढ़ापा, मोटापा, पुजापा
आस	मीठा, खट्टा	मिठास, खटास
आहट	चिकना, गरम, कड़वा	चिकनाहट, गरमाहट, कड़वाहट
आई	चतुर, अच्छा, बुरा, पंडित	चतुराई, अच्छाई, बुराई, पंडिताई
त्व	देव, पशु, मनुष्य	देवत्व, पशुत्व, मनुष्यत्व
ई	नरम, गरम, खुश	नरमी, गरमी, खुशी

2. विशेषण बनाने वाले तद्धित प्रत्यय

प्रत्यय	मूल शब्द	प्रत्यय युक्त शब्द
ईला	गर्व, चमक, रस, नशा	गर्वीला, चमकीला, रसीला, नशीला
आलु	झगड़ा, कृपा, दया, श्रद्धा	झगड़ालु, कृपालु, दयालु, श्रद्धालु
इत	प्रकाश, हर्ष, पुष्प, पल्लव	प्रकाशित, हर्षित, पुष्पित, पल्लवित
ईय	राष्ट्र, भारत, देश, विभाग	राष्ट्रीय, भारतीय, देशीय, विभागीय
ईन	रंग, कुल, नमक, ग्राम	रंगीन, कुलीन, नमकीन, ग्रामीण
आ	प्यार, मैल, प्यास, भूख	प्यारा, मैला, प्यासा, भूखा
इक	धर्म, दिन, मास, लोक	धार्मिक, दैनिक, मासिक, लौकिक
वान/वती	धन, बल	धनवान, धनवती, बलवान, बलवती
मान/मती	श्री, बुद्धि	श्रीमान, श्रीमती, बुद्धिमान, बुद्धिमती
ऊ	पेट, बाज़ार, कतवार	पेटू, बाज़ारू, कतवारू

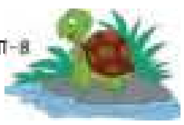

3. कर्तृवाचक तद्धित प्रत्यय

प्रत्यय	मूल शब्द	प्रत्यय युक्त शब्द
वाला	फल, सब्ज़ी, चाय, पान	फलवाला, सब्ज़ीवाला, चायवाला, पानवाला
एरा	साँप, मामा, चाचा	सपेरा, ममेरा, चचेरा
वान	गाड़ी, कोच, पहल, धन	गाड़ीवान, कोचवान, पहलवान, धनवान
आर	सोना, लोहा	सोनार, लोहार
कार	नाटक, कहानी, चित्र, कथा	नाटककार, कहानीकार, चित्रकार, कथाकार
इया	रसोई, दुख, मुख	रसोइया, दुखिया, मुखिया
हारा	चूड़ी, पानी, लकड़ी	चूड़िहारा, पनिहारा, लकड़हारा

एक साथ दो प्रत्ययों का प्रयोग

मूल शब्द		प्रत्यय		प्रत्यय		नवनिर्मित शब्द
महत्	+	त्व	+	पूर्ण	=	महत्वपूर्ण
कर्म	+	निष्ठ	+	आ	=	कर्मनिष्ठा
गुरु	+	त्व	+	पूर्ण	=	गुरुत्वपूर्ण
प्रांत	+	ईय	+	ता	=	प्रांतीयता
बच्चा	+	पन	+	आ	=	बचपना
भारत	+	ईय	+	ता	=	भारतीयता
विलास	+	इत	+	आ +पूर्ण	=	विलासितापूर्ण

उपसर्ग एवं प्रत्यय लगे शब्द

उपसर्ग		मूलशब्द		प्रत्यय		निर्मित शब्द
प्रा	+	देश	+	इक	=	प्रादेशिक
अभि	+	मान	+	ई	=	अभिमानी
अन	+	उदार	+	ता	=	अनुदारता
सु	+	लभ	+	ता	=	सुलभता
परि	+	पूर्ण	+	ता	=	परिपूर्णता
बे	+	चैन	+	ई	=	बेचैनी
नि	+	लंब	+	इत	=	निलंबित
निः	+	चिंत	+	ता	=	निश्चिंतता
निर्	+	दय	+	ता	=	निर्दयता

आइए, पुनरावृति करें

- प्रत्यय– मूल शब्द के बाद लगकर जो शब्दांश नया शब्द बनाते हैं और मूल शब्द के अर्थ में परिवर्तन ला देते हैं, वे प्रत्यय कहलाते हैं।
- प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं– कृत् प्रत्यय तथा तद्धित प्रत्यय।

अध्यापन संकेत शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को प्रत्यय शब्दों का प्रयोग करना सिखाएँ साथ–ही–साथ अभ्यास कराएँ।

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य

Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) प्रत्यय से आप क्या समझते हैं? परिभाषित कीजिए।

(ख) प्रत्यय के भेद बताइए।

लेखन कार्य

Writing Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) प्रत्यय किसे कहते हैं? उदाहरण देकर लिखकर बताइए।

(ख) प्रत्यय के कितने भेद होते हैं? किसी एक के बारे में बताइए।

(ग) कृत् प्रत्यय की सोदाहरण परिभाषा दीजिए।

(घ) तद्धित प्रत्यय किसे कहते हैं?

2. दिए गए प्रत्ययों से तीन-तीन नए शब्द बनाइए।

(क) अक्कड़ – ....

(ख) अक – ....

(ग) हार – ....

(घ) आ – ....

(ङ) ना – ....

(च) आवा – ....

3. शब्दों में से मूल शब्द और प्रत्यय अलग करके लिखिए।

ओढ़नी = ... + ...

घटिया = ... + ...

गवैया = ... + ...

सुंदरता = ... + ...

बचपन = ... + ...

अच्छाई = ... + ...

ससुराल = ... + ...

मथानी = ... + ...

लुटेरा = ... + ...

टिकाऊ = ... + ...

छलावा = ... + ...

चढ़ाई = ... + ...

बिछौना = ... + ...

मोटापा = ... + ...

4. दिए गए मूल शब्द और प्रत्यय को मिलाकर शब्द बनाइए।

गुरु+त्व+पूर्ण = ...

विलास+इत+आ+पूर्ण = ...

सु+लभ+ता = ...

निर्+दय+ता = ...

अन्+उदार+ता = ...

बच्चा+पन+आ = ...

बे+चैन+ई = ...

परि+पूर्ण+ता = ...

नि+लंब+इत = ...

5. **दिए गए शब्दों में प्रयुक्त मूलशब्द और प्रत्यय के सही विकल्प को चुनकर लिखिए।**

(क) नागरिकता–

☐ नगार+इक+ता ☐ नागर+इक+ता ☐ नगर+इक+ता ☐ नेगर+इक+ता

(ख) रंगीन–

☐ रँग+ईन ☐ रंग+ईन ☐ रंग+इन ☐ रँगी+न

(ग) विभागीय–

☐ विभा+गीय ☐ वि+भागीय ☐ विभाग+ईय ☐ वि+भाग+ईय

(घ) सज्जनता–

☐ सत्+जनता ☐ सत्+जन+ता ☐ सत्+जनता ☐ सत+जनता

6. **दिए गए वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति कोष्ठक में दिए गए शब्द में प्रत्यय लगाकर कीजिए।**

(क) ससुरालियों ने तो हमारे घर को .... बना लिया। (बस)

(ख) आज हमारे घर .... जी आए हुए हैं। (शास्त्र)

(ग) लॉकडाउन में लोगों का .... बढ़ गया है। (मोटा)

(घ) बच्चा .... हाथ में लिए है। (खेल)

(ङ) हमारे मुहल्ले में .... आया है। (साँप)

सोचें-विचारें

Critical Thinking

7. **'असामाजिक' 'स्वावलंबी' 'स्वल्पता' उक्त शब्दों में उपसर्ग तथा प्रत्यय की संख्या बताकर सोच-समझकर परिभाषित कीजिए।**

खेल-खेल में

Brain Storming Activity

8. **दी गई वर्ग-पहेली में से प्रत्यय युक्त शब्द छाँटकर लिखिए।**

वि	क	म	ग	सा	प	ब	से	रा	पा	ठ	क
भा	ड़	धु	र	ति	रि	झ	चि	र	अ	अ	ब
गी	वा	र	मा	ल	पू	ग	क	सो	भि	प	द
य	ह	ता	ह	का	र्ण	ड़ा	ना	इ	मा	मा	च
ध	ट	खु	ट	पू	ता	लू	हट	या	नी	नि	ल
न	दि	श	खि	लौ	ना	पी	ने	वा	ला	त	नी
वा	खा	हा	ओ	ढ़	नी	बु	ला	वा	म	मो	टी
न	वा	ल	ह	प	प्रा	प्रा	शि	क	बु	ढ़ा	पा

....

....

....

....

....

....

प्रेरणादायक मूल्य

शब्दों के शुरू में उपसर्गों को जोड़ने से नए शब्दों का निर्माण होता है, तथा इससे भाषा का विकास होता है। इसी प्रकार हमारे द्वारा भी नई-नई चीज़ों को जोड़ने से एक अच्छे जीवन का निर्माण होता है।

अध्याय 17

शब्द-भंडार
(Word Vocabulary)

पढ़िए और समझिए

बच्चो! आप जानते हैं कि जब तक हमारे पास शब्दों का सही भंडार नहीं होता है, तब तक हम बोलने से हिचकते हैं और लिखने में भी अटकना पड़ता है। इसलिए शब्दों का अच्छा-सा भंडार होना चाहिए।

आइए, अलग-अलग प्रकार के शब्दों के बारे में जानते हैं–

1. तत्सम-तद्भव शब्द:

जो शब्द संस्कृत भाषा से हैं, वे ज्यों-के-त्यों हिंदी में भी प्रयुक्त किए जाते हैं, वे तत्सम शब्द कहलाते हैं, वहीं इन तत्सम शब्दों का अपभ्रंश (बिगड़ा स्वरूप) तद्भव शब्द कहलाता है।

आइए, तत्सम-तद्भव शब्दों के कुछ शब्द जानें–

तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव
अग्नि	आग	अंगुष्ठ	अँगूठा	पत्र	चिट्ठी
जल	पानी	जिह्वा	जीभ	आश्विन	क्वार
अक्षि	आँख	अश्रु	आँसू	पिपासा	प्यास
कर्ण	कान	नकुल	नेवला	मयूर	मोर
हस्त	हाथ	नारिकेल	केला	मृत्तिका	मिट्टी
दंत	दाँत	चटका	चिड़िया	वर्तिका	बाती/बत्ती
मस्तक	माथा	शशक	खरगोश	स्वर्ण	सोना
ओष्ठ	ओंठ	प्रस्तर	पत्थर	तृण	तिनका
शर्करा	शक्कर	भल्लूक	भालू	परिधान	पहनावा
पर्यंक	पलंग	अश्व	घोड़ा	आम्र	आम
सुखासन	सोफा	तरु	पेड़	श्वास	साँस
शुक	तोता	शुष्क	सूखा	श्रावण	सावन
गर्दभ	गधा	हस्ती	हाथी	मक्षिका	मक्खी
कंटक	काँटा	स्वप्न	सपना	शुक	तोता
अंगुलि	उँगली	रूक्ष	रूखा	धेनु	गाय
उदर	पेट	उष्ट्र	ऊँट	पंथ	रास्ता
कटि	कमर	उलूक	उल्लू	द्रव्य	धन
घृत	घी	भगिनी	बहन	श्वान	कुत्ता
ओदनम	भात	वरयात्रा	बारात	रजत	चाँदी
अंगुष्ठिका	अँगूठी	तड़ाग	तालाब	वस्त्र	कपड़ा

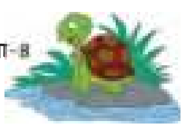

2. पर्यायवाची शब्द:

किसी शब्द के लिए समान अर्थ देने वाले सभी शब्द पर्यायवाची शब्द कहलाते हैं।

आइए, कुछ पर्यायवाची शब्दों को जानें–

शब्द	पर्यायवाची शब्द
अतिथि	मेहमान, पाहुन, अभ्यागत
रात	रजनी, यामिनी, निशा, रात्रि
सरस्वती	शारदा, वाग्देवी, वीणावादिनी
कमल	पंकज, सरोरुह, अरबिंद
राजा	नृप, भूपति, नरेश, प्रजापति
नदी	सरिता, सलिला, नद, तटिनी
किरण	रश्मि, अंशु, कर
पहाड़	पर्वत, गिरि, नग, भूधर
उन्नति	प्रगति, उत्कर्ष
पावन	पवित्र, पाक, निर्मल
पृथ्वी	धरा, वसुधा, वसुंधरा, धरित्री
चंद्रमा	चाँद, शशि, चंद्र, राकेश, शशांक
सुबह	सवेरा, भोर, सूर्योदय, प्रात:
मुख	वदन, आनन, मुँह, चेहरा
यमुना	कालिंदी, कृष्णा, सूर्यसुता
प्रभा	कांति, चमक, द्युति
लक्ष्मी	चंचला, श्री, धनदेवी
अंधकार	तिमिर, तम, अँधेरा
सुंदर	मनोहर, अभिराम, रमणीक
वृक्ष	तरु, पादप, विटप, पेड़
मछली	झष, मीन, मत्स्य, जलपरी
पंडित	ज्ञानी, आचार्य, गुरु, पुरोहित
पुत्र	बेटा, सुत, आत्मज
पुरुष	जन, नर, आदमी
गणेश	लंबोदर, गजानन, गणपति
हाथी	हस्ती, गज, मतंग
बिजली	चंचला, दामिनी, चपला

शब्द	पर्यायवाची शब्द
अहंकार	घमंड, दर्प, अभिमान
दिन	दिवा, दिवस, वासर
सूर्य	दिवाकर, प्रभाकर, दिनकर, भानु
स्वर्ण	कंचन, हेम, सोना, कनक
बादल	बारिद, जलद, नीरद, अंबुद
समुद्र	सागर, जलधि, रत्नाकर
अनुचर	दास, सेवक, भृत्य, परिचारक
पत्थर	पाषाण, प्रस्तर, शिला
हिरन	मृग, सारंग, कुरंग
स्वर्ग	वैकुंठ, परलोक, सुरलोक, अमरलोक
संसार	दुनिया, विश्व, जग, इहलोक
खून	रक्त, रुधिर
बंदर	वानर, मर्कट, कपि, शाखामृग
शरीर	काया, तन, गात, वपु
गंगा	सुरसरि, भागीरथी, त्रिपथगा, निर्मला
सुगंध	महक, गंध, सुवास, खुशबू
बुद्धि	प्रज्ञा, मेधा, अक्ल
विष्णु	लक्ष्मीपति, जनार्दन, नारायण
पूर्वज	पूर्व पुरुष, पुरखे, कुल पुरुष
चिड़िया	पक्षी, खग, विहग, पखेरू
घर	आवास, गृह, गेह, निकेतन
प्रणाम	नमस्ते, अभिवादन, नमस्कार
स्त्री	महिला, वामा, वनिता
थोड़ा	अल्प, न्यून, कम
आम	रसाल, अमिय फल, आम्र
साँप	सर्प, भुजंग, काल, विषधर
वर्षा	बारिश, बरसात, रिमझिम

3. विलोम शब्द :

किसी शब्द के उल्टे अर्थ देने वाले शब्द विलोम शब्द कहलाते हैं।

कुछ विलोम शब्दों की सूची नीचे दी जा रही है –

शब्द		विलोम शब्द	शब्द		विलोम शब्द
अच्छा	×	बुरा	जय	×	पराजय
हानि	×	लाभ	हार	×	जीत
सुंदर	×	कुरूप	कृतज्ञ	×	कृतघ्न
आगमन	×	प्रस्थान	अपराधी	×	निरपराधी
अथ	×	इति	अक्षम	×	सक्षम
अपव्यय	×	मितव्यय	कनिष्ठ	×	ज्येष्ठ
सरल	×	कठिन	प्राकृतिक	×	नैसर्गिक
सात्विक	×	तामसिक	आमिष	×	निरामिष
सगुण	×	निर्गुण	यश	×	अपयश
बंधन	×	मोक्ष	मुख्य	×	गौण
तप्त	×	शीतल	अपेक्षा	×	उपेक्षा
आसक्ति	×	अनासक्ति	साकार	×	निराकार
साधार	×	निराधार	क्षुद्र	×	विराट
प्रलय	×	सृष्टि	उत्तेजित	×	शांत
खेद	×	प्रसन्नता	निंदा	×	स्तुति
अनुराग	×	विराग	उत्थान	×	पतन
घोषित	×	अघोषित	सार्थक	×	निरर्थक
ह्रस्व	×	दीर्घ	हर्ष	×	विषाद
सर्वज्ञ	×	अल्पज्ञ	आर्द्र	×	शुष्क
सज्जन	×	दुर्जन	कुमार्ग	×	सुमार्ग
सबल	×	निर्बल	सुदिन	×	कुदिन
सफल	×	असफल	जीवन	×	मरण
सदेह	×	विदेह	राजा	×	रंक
संयोग	×	वियोग	श्रोता	×	वक्ता
संक्षेप	×	विस्तार	द्रुत	×	मंथर
सुपाच्य	×	कुपाच्य	सत्कार	×	तिरस्कार
अज्ञ	×	विज्ञ	सामान्य	×	असामान्य

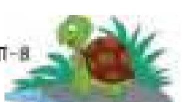

शब्द		विलोम शब्द	शब्द		विलोम शब्द
आदि	×	अंत	शीतल	×	गर्म
क्रय	×	विक्रय	चल	×	अचल
अयोग्य	×	योग्य	जड़	×	चेतन
उग्र	×	सौम्य	सहिष्णु	×	असहिष्णु
कल्पित	×	यथार्थ	उन्नति	×	अवनति
हास	×	रुदन	बंधन	×	मोक्ष
तामसिक	×	सात्विक	चंचल	×	स्थिर
साहस	×	दुस्साहस	ह्रास	×	वृद्धि

4. वाक्यांशों के लिए एक (वाक्यांशबोधक) शब्दः

अनेक शब्दों के स्थान पर एक शब्द का प्रयोग करना वाक्यांशबोधक शब्द कहलाता है।

आइए, कुछ वाक्यांशबोधक शब्दों के बारे में जानें–

वाक्यांश	एक शब्द	वाक्यांश	एक शब्द
जिस पर विश्वास किया जा सके	विश्वसनीय	जिसके बारे में संदेह हो	संदिग्ध
सबकुछ जानने वाला	सर्वज्ञ	जानने की इच्छा रखने वाला	जिज्ञासु
कम जानने वाला	अल्पज्ञ	मृत्यु की इच्छा रखने वाला	मुमुक्षु/मुमूर्षा
समुद्र में लगने वाली आग	बड़वानल	निधन की वार्षिक तिथि	पुण्यतिथि
जंगल में लगने वाली आग	दावानल	जिसे पाना कठिन हो	दुष्कर
बिना रोक-टोक वाला	अबाध	वर्षा न होना	अनावृष्टि
जिसे जीता न जा सके	अजेय	जहाँ जाना कठिन हो	दुर्गम
सौ वर्षों का समूह	शताब्दी	कम वर्षा होना	अल्पवृष्टि
वर्ष में एक बार होने वाला	वार्षिक	विज्ञान से संबंध रखने वाला	वैज्ञानिक
जिसके समान दूसरा न हो	अद्वितीय	जिसका कोई शत्रु न हो	अजातशत्रु
हस्तलिखित पुस्तक	पांडुलिपि	भूगोल से संबंध रखने वाला	भौगोलिक
जल में उत्पन्न होने वाला	जलज	नेतृत्व करने वाला	नेता
आकाश में गमन करने वाला	नभचर	जिसे पाना आसान हो	सुलभ/सुगम
जल में रहने वाला	जलचर	सदा साथ रहने वाला	शाश्वत
विषय विशेष का ज्ञाता	विशेषज्ञ	नष्ट होने वाली चीज़	नश्वर
आत्मा/ईश्वर से संबंध रखने वाला	आध्यात्मिक	प्रशंसा के योग्य कार्य	प्रशंसनीय
बुरा आचरण करने वाला	दुराचारी	अतिथि का सत्कार करना	आतिथ्य
अच्छे चाल-चलन वाला	सच्चरित्र	रचना करने वाला	रचयिता

वाक्यांश	एक शब्द	वाक्यांश	एक शब्द
ईश्वर पर विश्वास न करने वाला	नास्तिक	जिसमें कोई संदेह न हो	निस्संदेह
ईश्वर में विश्वास करने वाला	आस्तिक	मधुर भाषा बोलने वाला	मृदुभाषी
आगे बढ़ने की भावना	स्पर्धा	जिसमें सहनशक्ति हो	सहिष्णु
बहुत अधिक बोलने वाला	वाचाल	खबरे भेजने वाला	संवाददाता
जो पूर्व में किसी पद पर रहा हो	भूतपूर्व	दूर की बात सोचने वाला	दूरदर्शी
जो बिना वेतन के कार्य करे	अवैतनिक	जिसका कोई स्वामी (नाथ) न हो	अनाथ
जो कल्पना से परे हो	कल्पनातीत	जो कर्म कार्य में लगा रहता हो	कर्मठ
अवसर के अनुसार बदलने वाला	अवसरवादी	छिपाने की चीज़ें	गोपनीय
जिस पुरुष की पत्नी मर गई हो	विधुर	जो दूसरों का उपकार न माने	कृतघ्न
जिस स्त्री का पति मर गया हो	विधवा	जिसका दमन न किया जा सके	अदम्य
जिस स्त्री का पति जिंदा हो	सधवा	जो व्यक्ति काम न करे	अकर्मण्य
जिसका कोई आधार न हो	निराधार	शरण में आया व्यक्ति	शरणागत
रात में घूमने वाला व्यक्ति	निशाचर	जिसमें कोई ममता न हो	निर्मम
जिसे किसी प्रकार के दंड का भय न हो	उद्दंड	सबके साथ समान व्यवहार करने वाला	समदर्शी

5. समोच्चरित भिन्नार्थक शब्दः

ऐसे शब्द जो वर्तनी और उच्चारण में सूक्ष्म अंतर के कारण लगभग समान उच्चारित किए जाते हैं, वे समोच्चरित भिन्नार्थक शब्द कहलाते हैं।

कुछ ऐसे शब्दों की सूची नीचे दी जा रही है –

शब्द		अर्थ	शब्द		अर्थ
अंक	–	गोद	अगम	–	जहाँ पहुँच सकें
अंग	–	शरीर के भाग	आगम	–	प्राप्ति
अनिल	–	अग्नि	मातृ	–	माता
अनल	–	वायु	मात्र	–	केवल
भवन	–	घर	पुरुष	–	आदमी
भुवन	–	संसार	परुष	–	कठोर
मेल	–	एकता, मेलजोल	चरम	–	पराकाष्ठा
मैल	–	गंदगी, मलिनता	चर्म	–	चमड़ा
हँस	–	हँसना	बदन	–	शरीर
हंस	–	एक पक्षी	वदन	–	मुख
तरणी	–	नाव	शर	–	बाण
तरणि	–	सूर्य	सर	–	तालाब

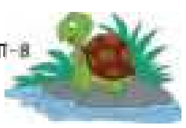

शब्द		अर्थ	शब्द		अर्थ
जरा	–	बुढ़ापा	समान	–	बराबर
ज़रा	–	थोड़ा–सा	सामान	–	वस्तु
सजा	–	सजावट	वसन	–	वस्त्र
सज़ा	–	दंड	व्यसन	–	नशा
अन्य	–	दूसरा	पानी	–	जल
अन्न	–	अनाज	पाणि	–	हाथ
अवधि	–	समय सीमा	मूल	–	जड़
अवधी	–	एक बोली	मूल्य	–	कीमत
आदि	–	शुरू	फन	–	साँप का फन
आदी	–	अभ्यस्त	फ़न	–	हुनर, कला
लक्ष्य	–	उद्देश्य	विद्या	–	शिक्षा
लक्ष	–	लाख की संख्या	विधा	–	भेद, प्रकार
इतर	–	अन्य, दूसरा	द्वीप	–	टापू
इत्र	–	सुगंधित पदार्थ	दीप	–	दीपक
धरा	–	पृथ्वी	जलद	–	बादल
धारा	–	जल धारा	जलज	–	कमल
नारी	–	स्त्री	अस्त्र	–	एक हथियार
नाड़ी	–	नस	अस्त	–	डूबना
परिणाम	–	फल, नतीज़ा	तरंग	–	लहर
परिमाण	–	मात्रा	तुरंग	–	घोड़ा
प्रसाद	–	कृपा	नीर	–	पानी
प्रासाद	–	महल	नीड़	–	घोंसला
चालक	–	चलाने वाला	प्रकार	–	भेद
चालाक	–	चतुर	प्राकर	–	खाई

6. अनेकार्थक शब्द:

ऐसे शब्द जिनसे एक से अधिक अर्थ निकलते हैं, उन्हें अनेकार्थक शब्द कहते हैं।

अनेकार्थक शब्दों के कुछ उदाहरण नीचे दिए जा रहे हैं–

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
अंग	भाग, शरीर का अंग	श्यामा	कोयल, यमुना
गति	हालत, चाल	बल	सेना, शक्ति
हस्ती	हैसियत, हाथी	प्रसाद	नैवेद्य, अनुकंपा
हार	पराजय, गले का हार	मुद्रा	अँगूठी, आकृति, धन
उत्तर	जवाब, एक दिशा	गुरु	श्रेष्ठ, अध्यापक
तीर	बाण, किनारा	अमृत	पानी, दूध

अध्यापन संकेत शिक्षक/शिक्षिका कक्षा में बच्चों को शब्द–भंडार में सम्मिलित सभी शब्द–समूहों का पूर्ण रूपेण अभ्यास करवाएँ।

शब्द	अर्थ
कनक	सोना, धतूरा
रस	आनंद, स्वाद
जड़	मूर्ख, अचेतन, मूल
जीवन	पानी, ज़िंदगी, घी
कुल	वंश, संपूर्ण
चालू	चालाक, जारी रहना
गाढ़ा	घना, श्रेष्ठ, घनिष्ठ
क्षुद्र	नीच, थोड़ा
पाठ	सबक, सीख
जाल	धोखा, बड़ा जाल
आब	इज्ज़त, पानी, चमक
मूक	गूँगा, मौन
नाग	साँप, क्रूर मनुष्य
अक्षर	शिव, वर्ण, ब्रह्मा, मोक्ष
वास	कपड़ा, सुगंध, महक, रहने का स्थान
व्योम	जल, आकाश, बादल
वर	श्रेष्ठ, दूल्हा, चुनाव, दान
बाजि	घोड़ा, पक्षी, बाण
दल	सेना, समूह, राजनीतिक दल, तुलसी दल
कर्ण	कान, कुंती का पुत्र, पतवार

शब्द	अर्थ
कल	मशीन, पुर्जा, पिछला-अगला दिन
पूर्व	पूरब दिशा, पिछला
अंतरंग	घनिष्ठ, गुप्त
सार	निष्कर्ष, रस
हल	समाधान, खेती का एक यंत्र
भानु	सूर्य, राजा
फल	परिणाम, फल विशेष
द्विज	पक्षी, ब्राह्मण
काल	समय, मृत्यु
अंकुश	नियंत्रण, हाथी पर नियंत्रण करने का यंत्र
मत	कोट, राय, विचार
अर्थ	धन, अभिप्राय
घट	शरीर, घड़ा, हृदय
सारंग	मोर, सूर्य, हिरण, मेघ
वर्ण	अक्षर, रंग, पोशाक, जाति
वार	दिन, आक्रमण, प्रहार
पत्र	चिट्ठी, पत्ता, शंख
चीर	वस्त्र, चीरना, रेखा
बाल	केश, फसल की बालें, बालक
पतंग	सूर्य, पक्षी, नौका, टिड्डी, सरगम

आइए, पुनरावृति करें

- **शब्द-भंडार**- अनेक प्रकार के शब्दों का भंडारण करना।
- **शब्द-भंडार**
  - तत्सम-तद्भव शब्द (संस्कृत के मूल शब्द तत्सम, अपभ्रंश-तद्भव)
  - विलोम शब्द (किसी शब्द का उल्टा अर्थ बताने वाले शब्द)
  - पर्यायवाची शब्द (एक शब्द के अनेक अर्थ वाले शब्द)
  - वाक्यांशबोधक (वाक्यांश के स्थान पर एक शब्द लिखना)
  - समोच्चरित भिन्नार्थक शब्द (लगभग समान उच्चारित किए जाने वाले शब्द)
  - अनेकार्थक शब्द (एक शब्द के एकाधिक अर्थ बताने वाले शब्द)

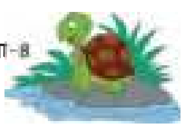

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य

Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) अनेकार्थक शब्दों से आप क्या समझते हैं?

(ख) शब्द-भंडार किसे कहते हैं?

(ग) वाक्यांश-बोधक शब्द से क्या तात्पर्य है?

लेखन कार्य

Writing Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) अनेकार्थक शब्द किसे कहते हैं?

(ख) श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द किसे कहते हैं? उदाहरण भी दीजिए।

(ग) वाक्यांशबोधक शब्द किसे कहते हैं? उदाहरण देकर समझाइए।

(घ) तत्सम-तद्भव शब्द किसे कहते हैं?

2. दिए गए शब्दों के अर्थ लिखिए।

अमूल –	....	समान –	....
अमूल्य –	....	सामान –	....
अपकार –	....	बदन –	....
उपकार –	....	वदन –	....
ज़रा –	....	लक्ष –	....
जरा –	....	लक्ष्य –	....
फन –	....	आदि –	....
फ़न –	....	आदी –	....

3. दिए गए वाक्यांशों के लिए एक शब्द लिखिए।

(क) सब कुछ जानने वाले को .... कहते हैं।

(ख) परिश्रम के बदले मिला धन .... कहलाता है।

(ग) जिसकी उपमा न दी जा सके, वह .... होता है।

(घ) जहाँ जाया न जा सके, वह .... होता है।

(ङ) जिस पर विश्वास किया जा सके, उसे .... कहते हैं।

(च) विज्ञान से संबंध रखने वाला .... कहलाता है।

(छ) कम खर्च करने वाला .... कहा जाता है।

(ज) सब कुछ जानने वाला .... कहलाता है।

4. दिए गए शब्दों के विलोम शब्द लिखिए।

राजा	–	....	दुर्जन	–	....
अयोग्य	–	....	उत्थान	–	....
अल्पायु	–	....	कृतज्ञ	–	....
उपकार	–	....	घोषित	–	....

5. दिए गए शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए।

गंगा	–	....	....	पर्वत	–	....	....
नदी	–	....	....	कमल	–	....	....
वृक्ष	–	....	....	आकाश	–	....	....
अतिथि	–	....	....	पृथ्वी	–	....	....
हिरन	–	....	....	सूर्य	–	....	....

6. दिए गए तद्भव शब्दों के तत्सम शब्द लिखिए।

तद्भव शब्द		तत्सम शब्द	तद्भव शब्द		तत्सम शब्द
आग	–	....	पानी	–	....
पत्थर	–	....	पलंग	–	....
उल्लू	–	....	ऊँट	–	....
घोड़ा	–	....	ओठ	–	....

7. दिए गए शब्दों के दो-दो अर्थ लिखिए।

गुरु	–	....	....	कनक	–	....	....
काल	–	....	....	उत्तर	–	....	....
पूर्व	–	....	....	अर्थ	–	....	....
मुद्रा	–	....	....	अंग	–	....	....
हल	–	....	....	हार	–	....	....

8. शब्द-भंडार के अंतर्गत विभिन्न शब्दों का समूह आता है, यदि श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द नहीं होते तो क्या अनेकार्थक शब्दों के द्वारा उनकी पूर्ति हो सकती है? सोच-समझकर बताइए।

खेल-खेल में

Brain Storming Activity

9. बच्चों से कक्षा में समूह बनवाकर उनसे प्रत्येक प्रकार के शब्दों की शब्दाक्षरी खिलवाएँ।
10. किसी दैनिक समाचार-पत्र से कुछ शब्द छाँटकर उनके प्रकार लिखवाएँ।

प्रेरणादायक मूल्य

भाषा को प्रभावशाली बनाने के लिए अनेक शब्दों के लिए एक शब्द का प्रयोग किया जाता है, जिसके कारण भाषा की सुंदरता में निखार आता है, जीने का अंदाज भी यही है, ज्यादा की बजाय कम में गुजारा कर लिया जाए।

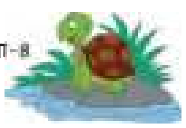

मुहावरे तथा लोकोक्तियाँ
(Idioms & Proverbs)

पढ़िए और समझिए

बच्चो! आप जानते हैं कि मुहावरों से भाषा बहुत सुंदर बनती है, किंतु मुहावरे का शाब्दिक अर्थ नहीं लिया जाता है, उसका लाक्षणिक या प्रतीकात्मक अर्थ लिया जाता है। इससे भाषा सुंदर हो जाती है तथा लावण्य आ जाता है। अतः हम यह भी कह सकते हैं कि–

ऐसे वाक्यांश जो अपने सामान्य अर्थ के स्थान पर अपना विशेष अर्थ प्रकट करते हैं, उन्हें मुहावरा कहते हैं।

आइए, कुछ मुहावरों को उनके अर्थ एवं वाक्य-प्रयोग सहित देखें–

1. **अगर-मगर करना** = आनाकानी करना।
   रमेश ने सुशील से जब अपने पैसे माँगे, तो वह अगर-मगर करने लगा।
2. **अंधों में काना राजा** = अनपढ़ों के बीच थोड़ा पढ़ा-लिखा व्यक्ति।
   रंजन अपने गाँव में थोड़ी अंग्रेज़ी जानता है, इसलिए वही अंधों में काना राजा है।
3. **कलेजा फटना** = बहुत कष्ट होना।
   पिता की मृत्यु होने पर मयंक की रुलाई देखकर लोगों का कलेजा फट गया।
4. **इधर-उधर की हाँकना** = गप्पे लड़ाना।
   बनवारी की न पूछो, वह दिन भर लोगों से इधर-उधर की हाँकता रहता है।
5. **काठ का उल्लू** = एकदम मूर्ख।
   सुलेखा तो बिल्कुल ही काठ की उल्लू है।
6. **आँखें चुराना** = बचकर निकलना।
   अनेक बच्चे डाँट से बचने के लिए अपनी अध्यापिका से आँखें चुराते रहते हैं।
7. **आँखें फेर लेना** = प्यार खत्म होना।
   उमा के पति ने आजकल उससे आँखें फेर ली हैं।
8. **अपने पैरों पर खड़े होना** = आत्मनिर्भर होना।
   पिता के सेवानिवृत्त होने से पूर्व ही मनोहर अपने पैरों पर खड़ा हो गया है, अब पिता को सुकून मिला है।
9. **उँगली उठाना** = आरोप लगाना।
   दूसरों पर उँगली उठाने से पूर्व अपने गिरेबान में अवश्य झाँक लेना चाहिए।

10. **आटे-दाल का भाव ज्ञात होना** = संघर्ष करना।

पिता ने पुत्र से कहा, अभी खूब मजे कर लो, जब जिम्मेदारी आएगी, तभी आटे-दाल का भाव ज्ञात होगा।

11. **कान खाना** = बहुत शोर मचाना।

आजकल शादी-ब्याह में ऊँची आवाज़ में डी॰जे॰ बजाने से कान खाए जाते हैं।

12. **माथे पर बल पड़ना** = चिंतातुर होना।

किसी बात से पिता जी के माथे पर बल पड़ गया है।

13. **भवें तनना** = क्रोध आना।

सरला की तो बात-बात पर भवें तनती रहती हैं। भला उससे बात कैसे की जाए?

14. **दाँत खट्टे करना** = हरा देना।

हमारे जाँबाजों ने दुश्मनों के दाँत खट्टे कर दिए।

15. **अँगूठा दिखाना** = मना करना।

विमलेश ने जब कमलेश से अपनी साड़ी माँगी, तो उसने अँगूठा दिखा दिया।

16. **ओखली में सिर देना** = जानबूझकर विपत्ति में पड़ना।

रामप्रवेश की आदत ही ओखली में सिर देने की हो गई है, वह सबसे उलझता रहता है।

17. **ऊँट के मुँह में जीरा** = ज्यादा खाने वाले को बहुत कम देना।

पहलवानों को केवल एक कप दूध पिलाना तो उनके लिए ऊँट के मुँह में जीरा के बराबर है।

18. **कलम तोड़ना** = बहुत ही श्रेष्ठ लिखना।

सुप्रिया का लेख पढ़कर अध्यापिका ने कहा कि उसने तो कलम तोड़ दिया है।

19. **दिन फिरना** = अच्छे दिन आना।

सुगंधा के पति की नौकरी लगने से उसके दिन फिर गए हैं।

20. **पहाड़ टूटना** = घोर विपत्ति आना।

रंजन की पढ़ाई अभी पूरी नहीं हुई है कि अचानक उसके पिता जी का स्वर्गवास होने से उस पर विपत्तियों का पहाड़ टूट पड़ा।

21. **बंदर घुड़की** = केवल धमकी देना।

बहुत से नियोक्ता बंदर घुड़की देकर अपना काम निकलवाते हैं।

22. **टोपी उछालना** = अपमानित करना।

भरी सभा में एक किशोर ने नेता जी की सबके सामने टोपी उछालकर रख दी।

23. **घाव पर नमक छिड़कना** = कष्ट को और बढ़ाना।

रहीम की नौकरी चली गई और मकान मालिक ने घर से निकालकर उसके घावों पर नमक छिड़क दिया।

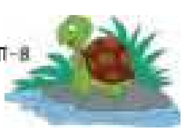

24. **कीचड़ उछालना** = बदनाम करना।

आजकल नेता लोग एक-दूसरे पर खूब कीचड़ उछाल रहे हैं।

25. **ज़मीन पर पैर न रखना** = घमंड करना।

जबसे नरेश विदेश घूमने गया है, तब से उसके पाँव ज़मीन पर नहीं पड़ते हैं।

26. **भीगी बिल्ली बनना** = डर कर रहना।

निकुंज अपने पिता जी के सामने हमेशा भीगी बिल्ली बना रहता है।

27. **फूला न समाना** = बहुत खुश होना।

जब से रंजना डॉक्टर बनी है, तब से उसका परिवार फूला न समा रहा है।

28. **मुट्ठी गरम करना** = रिश्वत देना।

सरकार चाहे जितना भी ढिंढोरा पीट ले, बिना मुट्ठी गरम किए अभी भी कोई सरकारी कार्य नहीं हो पा रहा है।

29. **सिरमाथे पर बिठाना** = अत्यधिक सम्मान देना।

ग्रामीण लोग अभी भी मेहमानों को सिरमाथे पर बिठाते हैं।

30. **पोल खोलना** = रहस्य प्रकट करना।

मनीष ने सबके सामने नरेंद्र की पोल खोलकर रख दी।

31. **पानी-पानी होना** = शर्मसार होना।

कक्षा में नकल करता हुआ पकड़ा जाने पर नितिन सबके सामने पानी-पानी हो गया।

32. **चूड़ियाँ पहनना** = कायर होना।

निहत्थे व शांतिपूर्ण आंदोलन करने पर किसानों के ऊपर जाड़े में पानी की बौछार करवाने से सरकार को चूड़ियाँ पहन लेनी चाहिए।

33. **दाँत काटी रोटी** = गाढ़ी मित्रता।

अलगू चौधरी और जुम्मन शेख में दाँत काटी रोटी वाली दोस्ती थी।

34. **गले का ढोल होना** = जबरदस्ती साथ लगे रहना।

नीतीश कुमार तो भाजपा के गले का ढोल हैं, पद पाने के लिए लटक रहे हैं।

35. **बाल की खाल निकालना** = कमियाँ ढूँढ़ना।

कुछ लोग मामला सुलझाने के बजाय बाल की खाल निकालते रहते हैं।

36. **लेने के देने पड़ना** = लाभ होते-होते हानि होना।

रंजन को सब्ज़ियों के व्यवसाय में लेने के देने पड़ गए।

37. **उल्टी गंगा बहाना** = विपरीत कार्य करना।

महेश की बात पर विचार मत करना, वह तो हमेशा से उल्टी गंगा बहाता रहता है।

38. **कमर कसना** = तैयारी करना।

पिता जी ने कहा, "परीक्षाएँ नज़दीक हैं, अभी से तुम्हें कमर कस लेनी चाहिए।"

39. **खयाली पुलाव पकाना** = कोरी कल्पना।

बेकार लोग केवल खयाली पुलाव ही पकाते रहते हैं।

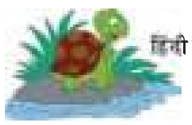

लोकोक्तियाँ

लोकोक्तियाँ लोक में प्रचलित उक्तियाँ या कहावतें होती हैं, यह अपने दीर्घकालिक अनुभवों पर आधारित होती हैं। हम यह भी कह सकते हैं कि—

हमारे वर्षों के अनुभवों के सार को लोकोक्ति या कहावत कहते हैं।

मुहावरे तथा लोकोक्तियों में अंतर

मुहावरे	लोकोक्तियाँ
1. मुहावरे वाक्य का हिस्सा बन जाते हैं।	1. लोकोक्तियाँ वाक्य के अंत में पुष्टि स्वरूप लगती हैं।
2. मुहावरों के अंत में प्रायः 'ना' लगता है।	2. लोकोक्ति में ऐसा नहीं है।
3. मुहावरे प्रायः शारीरिक अंगों के नाम पर होते हैं।	3. लोकोक्तियाँ लंबे समय के अनुभवों पर आधारित होती हैं।

कुछ लोकोक्तियाँ एवं उनके अर्थ और वाक्य-प्रयोग यहाँ दिए जा रहे हैं—

1. **एक पंथ दो काज** = एक कार्य से दो लाभ।
   सरकारी कार्य से हरिद्वार जाना है, वहाँ जाकर गंगा स्नान भी कर लूँगा। इससे एक पंथ दो कार्य हो जाएगा।
2. **जल में रहकर मगर से बैर** = शक्तिशाली व्यक्ति से शत्रुता लेना ठीक नहीं।
   नेता जी ने कहा, "यदि इस शहर में रहना है, तो वोट हमें ही देना होगा, जल में रहकर मगर से बैर करना ठीक नहीं होगा।"
3. **नौ नकद न तेरह उधार** = नकद का लेन-देन अच्छा होता है।
   हमारे घर के पास का बनिया उधार सामान नहीं देता है और कहता है कि नौ नकद न तेरह उधार।
4. **मुँह में राम बगल में छुरी** = कहना कुछ और, करना कुछ और।
   अरे! सरोज की बात पर ध्यान मत देना, उसकी नीयत साफ़ नहीं रहती है। वह तो मुँह में राम और बगल में छुरी रखता है।
5. **हाथ कंगन को आरसी क्या** = प्रत्यक्ष को प्रमाण की ज़रूरत नहीं।
   यह बच्चा कक्षा का सबसे होनहार छात्र है। हाथ कंगन को आरसी क्या, आप स्वयं पूछकर देख लीजिए।
6. **सीधी उँगली से घी नहीं निकलता** = कई कार्य सरलता से नहीं होते।
   किसानों ने कहा कि अब सरकार से सीधी उँगली से घी नहीं निकलने वाला है।
7. **कहाँ राजा भोज, कहाँ गंगू तेली** = दो असमान व्यक्तियों की तुलना।
   डॉ॰ कलाम की तुलना किसी बहुरूपिए व्यक्ति से करना तो कहाँ राजा भोज कहाँ गंगू तेली वाली बात होगी।
8. **जिसकी लाठी उसकी भैंस** = शक्तिशाली की ही जीत होती है।
   आजकल तो सत्तापक्ष का ही बोलबाला है। ठीक ही है— जिसकी लाठी उसकी भैंस।
9. **काठ की हाँडी एक बार ही चढ़ती है** = धोखा एक बार ही खाया जाता है।
   राजेंद्र हमेशा ठगी की फिराक में लगा रहता है, लेकिन उसे शायद यह बात पता नहीं है कि काठ की हाँडी एक बार ही चढ़ती है, बार-बार नहीं।

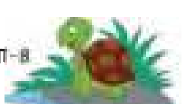

10. **आसपास बरसे, दिल्ली पड़ी तरसे** = जिसे ज़रूरत, उसे न मिलना।
सबको घर मिल गए, किंतु एक गरीब को न मिला। ठीक ही है– आस-पास बरसे, दिल्ली पड़ी तरसे।

11. **चोर-चोर मौसेरे भाई** = दुष्ट लोगों का मेल।
अरे! दिनेश और सुरेश की बातों में मत आना। वे तो चोर-चोर मौसेरे भाई हैं।

12. **घर की मुरगी दाल बराबर** = घर के व्यक्ति को महत्व न देना।
यदि कोई पड़ोसी अच्छी राय भी देता है, तो भी उसे घर की मुरगी दाल बराबर ही समझा जाता है।

13. **बड़ी मछली छोटी मछली को खाती है** = सबल निर्बल को सताता है।
आपको धैर्य से कार्यक्षेत्र में डटे रहना है, क्योंकि यहाँ तो बड़ी मछली छोटी मछली को खाती है।

14. **बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद** = अज्ञानी क्या जाने ज्ञान की बातें।
अरे! लखन को क्यों वेद की बातें बता रहे हो, उसके लिए तो बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद वाली कहावत चरितार्थ होती है।

15. **हथेली पर सरसों उगाना** = असंभव कार्य करना।
बदमाश व्यक्ति से उसके अच्छे चरित्र की उम्मीद करना तो हथेली पर सरसों उगाने के समान है।

16. **सहज पके सो मीठा होय** = धीरे-धीरे कार्य करने से सफलता मिलती है।
चंदा तुझे घबराने की ज़रूरत नहीं है, बस नित्य पढ़ती रहो, कहीं-न-कहीं चयन हो जाएगा क्योंकि सहज पके सो मीठा होय।

17. **पानी मथने से घी नहीं निकलता** = बेकार के कार्य में समय गवाँना।
अरे! नए विषय को लेकर प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी करना उचित नहीं है। पानी मथने से घी नहीं निकलेगा।

18. **नेकी और पूछ-पूछ** = अच्छे कार्य के लिए पूछने की आवश्यकता नहीं होती।
पुत्र ने कहा, "पापा जी! मैं घेवर ले आया हूँ, क्या आप खाएँगे?" "अरे वाह! जल्दी ले आओ, नेकी और पूछ-पूछ।"

19. **घर में नहीं हैं दानें, अम्मा चली भुनाने** = केवल दिखावा करना।
राजेश लोगों से करोड़ों की संपत्ति होने की बातें करता है, जबकि सच्चाई यह है कि घर में नहीं हैं दानें, अम्मा चली भुनाने।

20. **तलवार का खेत हरा नहीं होता** = अत्याचार का फल भी ठीक नहीं होता।
सरकार द्वारा किसानों पर जुल्म ढहाने से शीघ्र ही उसका खात्मा समझिए, क्योंकि तलवार का खेत हरा नहीं होता।

21. **चमड़ी जाए पर दमड़ी न जाए** = बहुत बड़ा कंजूस।
हमारे यहाँ के सेठ से किसी भी तरह के दान-धर्म की उम्मीद लगाना व्यर्थ है, क्योंकि उसकी तो चमड़ी जाए पर दमड़ी न जाए।

22. **दान की बछिया के दाँत नहीं गिने जाते** = मुफ़्त वस्तु की कीमत का आकलन नहीं होता।
यज्ञ में जिसने जो भी दिया, सब ठीक है, क्योंकि दान की बछिया के दाँत नहीं देखे जाते।

अध्यापन संकेत शिक्षक/शिक्षिका कक्षा में बच्चों को मुहावरे तथा लोकोक्तियों को प्रायोगिक तौर पर समझाएँ तथा उनका वाक्यों में प्रयोग करवाएँ।

आइए, पुनरावृत्ति करें

- मुहावरों का सामान्य अर्थ छोड़कर लाक्षणिक अर्थ लिया जाता है।
- लोकोक्तियाँ लंबे समय के अनुभवों से युक्त होती हैं।
- मुहावरे और लोकोक्तियों में अंतर होता है।

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य

Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) मुहावरों से आप क्या समझते हैं? बताइए।

(ख) लोकोक्तियाँ किसे कहते हैं? बताइए।

लेखन कार्य

Writing Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) मुहावरे किसे कहते हैं?

(ख) कहावतें किसे कहते हैं? उदाहरण देकर समझाइए।

(ग) मुहावरों तथा लोकोक्तियों में क्या अंतर होता है?

2. दिए गए मुहावरों/लोकोक्तियों के सही अर्थों से मिलान कीजिए।

(क) नाम बड़े और दर्शन छोटे	(i) मुसीबत भरा जोखिम उठाना
(ख) घड़ों पानी पड़ना	(ii) बात फैलाना
(ग) ओखली में सिर देना	(iii) जी-तोड़ कोशिश
(घ) इधर की उधर करना	(iv) पुरानी बातें याद दिलाना
(ङ) भगीरथ प्रयत्न	(v) गरीब किंतु गुणी व्यक्ति
(च) गड़े मुर्दे उखाड़ना	(vi) नाम बड़ा किंतु काम खराब
(छ) गुदड़ी का लाल	(vii) शर्मिंदा होना

3. दिए गए मुहावरों/लोकोक्तियों के सही अर्थ को चुनिए।

(क) **साँप के बिल में हाथ डालना–**

☐ (*i*) दूसरों के घर में ताकाझाकी करना ☐ (*ii*) जानबूझकर खतरे में पड़ना

☐ (*iii*) दूसरों के काम में दखल देना ☐ (*iv*) साँप के बिल में उँगली करना

(ख) **खिसियानी बिल्ली खंभा नोचे–**

☐ (*i*) कुछ भी न कर सकना ☐ (*ii*) अपनी कमी पर क्रोधित होना

☐ (*iii*) दूसरों पर क्रोधित होना ☐ (*iv*) अपनी कमज़ोरी पर खीझकर दूसरों पर गुस्सा निकालना

(ग) **चाँदी का जूता मारना–**

☐ (*i*) कठोर वचन कहना ☐ (*ii*) अपमानित होना

☐ (*iii*) पैसे से कार्य करवाना ☐ (*iv*) घमंड में बात करना

(घ) **खयाली पुलाव पकाना–**

- [ ] (*i*) पुलाव पकाना
- [ ] (*ii*) कोरी कल्पनाएँ करना
- [ ] (*iii*) खयालों में पुलाव पकाकर खाना
- [ ] (*iv*) पुलाव पकाने की विधि जानना

सोचें-विचारें

Critical Thinking

4. मुहावरे की भाँति लोकोक्तियों से भाषा की शक्ति और सौंदर्यता बढ़ती है, कभी-कभी मुहावरे तथा लोकोक्तियों को भ्रमवश समानार्थी समझ लिया जाता है, क्या यह सही है? सोच-समझकर बताइए।

खेल-खेल में

Brain Storming Activity

5. चित्र देखकर और पढ़कर मुहावरा लिखिए।

(क) 9 + 2 = 11 : ....

(ख) एक सौ : ....

(ग) 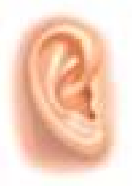 का कच्चा होना। : ....

(घ) 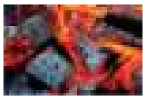 पर रखना : ....

(ङ) पर लोटना : ....

(च) काठ का होना : ....

प्रेरणादायक मूल्य

जिस प्रकार मुहावरे तथा लोकोक्तियाँ कलात्मक होती हैं। ठीक उसी प्रकार हमें भी लोगों के बीच में घुल-मिलकर रहने से अपने जीवन को सुचारू बनाना चाहिए।

वाच्य
(Voice)

पढ़िए और समझिए

दिए गए चित्र देखिए और उसके नीचे लिखे वाक्य पढ़िए–

अरविंद गुब्बारे खरीदता है।

आरती द्वारा साड़ी खरीदी जाती है।

गुड़िया से पढ़ा नहीं जाता।

बच्चो! ऊपर के वाक्यों में क्रियाएँ– 'खरीदता है', 'खरीदी जाती है' तथा 'पढ़ा नहीं जाता', इनकी भिन्नता वाच्य के कारण होती है। वाच्य के प्रभाव के कारण क्रियाएँ कर्ता, कर्म या भाव के अनुसार होती हैं। अतएव हम कह सकते हैं कि–

क्रिया के जिस रूप से यह पता चलता है कि क्रिया कर्ता, कर्म या भाव के अनुसार हो रही है या हुई है, उसे वाच्य कहते हैं।

वाच्य के भेद–

प्रायः अधिकांश पुस्तकों में वाच्य के तीन भेद माने गए हैं– 1. कर्तृवाच्य 2. कर्मवाच्य 3. भाववाच्य।

1. **कर्तृवाच्य** – ऐसे वाक्य जिसकी क्रिया कर्ता के अनुसार होती है, उसे कर्तृवाच्य कहते हैं; जैसे–

कुत्ता भौंक रहा है।

माता जी भोजन पका रही हैं।

रंजना साड़ी पहन रही है।

बच्चा इधर-उधर खेलता है।

उत्सव पुस्तक पढ़ रहा है।

उपर्युक्त वाक्यों में आई क्रियाएँ– 'भौंक रहा है', 'पका रही हैं', 'पहन रही है', 'खेलता है' तथा 'पढ़ रहा है' अपने-अपने कर्ता– कुत्ता, माता जी, रंजना, बच्चा तथा उत्सव के अनुसार हो रही हैं। सभी क्रियाएँ कर्ता के लिंग, वचन व कारक के अनुसार संचालित हैं। क्रियाओं का फल प्रत्यक्षत: कर्ता पर पड़ रहा है।

2. **कर्मवाच्य :** ऐसे वाक्य जिनकी क्रियाएँ कर्म के अनुसार होती हैं अथवा क्रियाओं का फल कर्ता पर न पड़कर केवल कर्म पर पड़ता है, उन्हें कर्मवाच्य कहते हैं; जैसे–

दरज़ी से कपड़े सिले जाते हैं। (क्या सिले जाते हैं? कपड़े)
नौकर द्वारा सब्ज़ियाँ खरीदी जाती हैं। (क्या खरीदी जाती हैं? सब्ज़ियाँ)
मेहमानों द्वारा पकौड़े खाए जाते हैं। (क्या खाए जाते हैं? पकौड़े)
नन्हें से पाठशाला जाया जाता है। (कहाँ जाया जाता है? पाठशाला)

यहाँ ऊपर के उदाहरणों में कपड़े, सब्ज़ियाँ, पकौड़े तथा पाठशाला शब्द कर्म हैं। इनसे संबंधित वाक्यों की क्रियाएँ इनके कर्मों के अनुसार संपन्न हो रही हैं। इनमें प्रयुक्त क्रियाएँ कर्म के लिंग, वचन के अनुसार हो रही हैं। ये सब क्रियाएँ कर्मवाच्य की हैं।

3. **भाववाच्य :** जिस वाक्य की क्रिया कर्ता या कर्म के अनुसार न होकर उसके भाव के अनुसार होती है, उसे भाववाच्य कहते हैं; जैसे–

मदन से हँसा जाता है।
वैष्णवी से नाचा जाता है।
चंचल से पढ़ा नहीं जाता।
मुन्ने से सोया नहीं जाता।

वाच्य परिवर्तन–

वाच्य का परिवर्तन भी किया जाता है। यह परिवर्तन निम्नलिखित तरह से किया जाता है–

1. कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य में 2. कर्तृवाच्य से भाववाच्य में 3. कर्मवाच्य से कर्तृवाच्य में।

1. **कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य में परिवर्तन :** कर्तृवाच्य की क्रिया को कर्मवाच्य में बदलते समय उसके लिंग, वचन और कर्म के अनुसार बदल दिया जाता है और कर्ता के साथ 'से' अथवा 'द्वारा' जोड़ दिया जाता है। इसके अतिरिक्त 'काल' में कोई परिवर्तन नहीं किया जाता है; जैसे–

कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
रचना साड़ी खरीदती है।	रचना से साड़ी खरीदी जाती है।
बच्चे ने दूध पी लिया।	बच्चे द्वारा दूध पीया गया।
अमित साइकिल चलाता है।	अमित से साइकिल चलाई जाती है।
मनोज कहानी सुनता है।	मनोज द्वारा कहानी सुनी जाती है।
नंदन पतंग उड़ाता है।	नंदन से पतंग उड़ाई जाती है।

2. **कर्तृवाच्य से भाववाच्य में परिवर्तन :** कर्तृवाच्य से भाववाच्य में परिवर्तन करने से कर्ता के साथ 'से' या 'के द्वारा' जोड़ा जाता है। क्रिया पुल्लिंग, अन्य पुरुष एवं एकवचन में रहती है; जैसे–

कर्तृवाच्य	भाववाच्य
मैं अब चल नहीं सकता।	मुझसे अब चला नहीं जाता।
अभिनव खेल रहा है।	अभिनव से खेला जाता है।
श्रेया गा नहीं सकती।	श्रेया से गाया नहीं जाता।
महिलाएँ नृत्य कर रही हैं।	महिलाओं से नृत्य किया जाता है।
दादा जी उठ नहीं सकते।	दादा जी से उठा नहीं जाता।

3. **कर्मवाच्य से कर्तृवाच्य में परिवर्तन :** कर्मवाच्य से कर्तृवाच्य में परिवर्तन करते समय कर्ता के साथ लगे परसर्ग 'से' या 'के द्वारा' हटा दिया जाता है। इसके अतिरिक्त सामान्य भूतकाल की क्रिया मुख्य हो जाती है; जैसे–

कर्मवाच्य	कर्तृवाच्य
तितलियों से आकाश में उड़ा जाता है।	तितलियाँ आकाश में उड़ती हैं।
बिंदू के द्वारा साड़ी पहनी गई।	बिंदू ने साड़ी पहनी।
चंचला से दौड़ लगाई गई।	चंचला ने दौड़ लगाई।
अनिरुद्ध के द्वारा पत्र लिखा जाता है।	अनिरुद्ध पत्र लिखता है।
बच्चों द्वारा गुब्बारे खरीदे जाते हैं।	बच्चे गुब्बारे खरीद रहे हैं।

आइए, पुनरावृति करें

- **वाच्य**– क्रिया के जिस रूप से पता चले कि क्रिया का प्रभाव वाक्य के कर्ता, कर्म या भाव में से किसके अनुसार पड़ता है।
- **वाच्य के भेद**

कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य	भाववाच्य
मोनू खेलता है।	मोनू के द्वारा फुटबाल खेला जाता है।	मोनू से खेला जाता है।

- कर्तृवाच्य– इसमें कर्ता ही मुख्य होता है।
- कर्मवाच्य– इसमें कर्म ही मुख्य होता है। इसमें क्रिया सकर्मक होती है।
- भाववाच्य– इसमें भाव ही मुख्य होता है। इसमें प्राय: क्रिया अकर्मक होती है।

अध्यापन संकेत शिक्षक/शिक्षिका छात्रों को वाच्य के विभिन्न रूपों को समझाएँ तथा उन्हें उदाहरणों के द्वारा पहचान कर उनमें अंतर समझाएँ।

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य

Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) वाच्य के भेद बताइए।

(ख) 'राधा नृत्य कर रही है।' वाक्य में कर्तृवाच्य बताइए।

लेखन कार्य

Writing Skills

1. **दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**

    (क) वाच्य किसे कहते हैं?

    (ख) कर्मवाच्य की परिभाषा और उदाहरण दीजिए।

    (ग) भाववाच्य की परिभाषा दीजिए।

    (घ) कर्तृवाच्य किसे कहते हैं?

2. **दिए गए वाक्यों को पढ़िए और उनके आगे वाच्य-भेद लिखिए।**

    (क) ललिता अध्यापन का कार्य करती है। ....

    (ख) शकुंतला से अब चला नहीं जाता। ....

    (ग) पुलकित के द्वारा गृहकार्य किया जाता है। ....

    (घ) उस बच्चे से दौड़ा नहीं जाता। ....

    (ङ) रश्मि आईसक्रीम खा रही है। ....

3. **दिए गए वाक्यों को निर्देशानुसार बदलकर लिखिए।**

    (क) रंजना से खाना खाया जाता है। (कर्तृवाच्य में)

    ....

    (ख) बच्चे से अब सोया नहीं जाता। (कर्तृवाच्य में)

    ....

    (ग) नंदन पाठशाला जाता है। (कर्मवाच्य में)

    ....

    (घ) विश्वनाथ पत्र लिख रहा है। (कर्मवाच्य में)

    ....

    (ङ) मानसी हँसती है। (भाववाच्य में)

    ....

    (च) मधुप नहाता है। (भाववाच्य में)

    ....

4. **सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए।**

(क) 'पंडित जी चंदन घिसते हैं'। वाक्य में वाच्य है–

☐ कर्तृवाच्य ☐ कर्मवाच्य ☐ भाववाच्य ☐ कोई नहीं

(ख) 'साँप लाठी से मारा जाता है'। वाक्य में वाच्य है–

☐ कर्मवाच्य ☐ कर्तृवाच्य ☐ भाववाच्य ☐ कोई नहीं

(ग) 'मुझसे अब दर्द सहा नहीं जाता'। वाक्य में वाच्य है–

☐ कर्तृवाच्य ☐ भाववाच्य ☐ कर्मवाच्य ☐ कोई नहीं

सोचें-विचारें

Critical Thinking

5. **क्रिया के किस प्रायोगिक आधार पर वाच्य निर्धारित किए जाते हैं। सोचकर बताइए।**

खेल-खेल में

Brain Storming Activity

6. **आप प्रतिदिन क्या-क्या कार्य करते हैं। उन कार्यों की सूची वाक्य में लिखकर बताएँ और उसका अन्य वाच्यों में परितर्वन करें; जैसे-**

कार्य	कर्मवाच्य	भाववाच्य
मैं प्रतिदिन स्नान करता हूँ।	मुझसे प्रतिदिन स्नान किया जाता है।	....

प्रेरणादायक मूल्य

मनुष्य को अपने कर्तव्यों का पालन कर्म और भाव के अनुसार करना चाहिए।

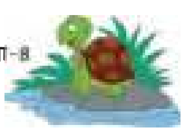

अध्याय 20

पद-परिचय
(Parsing)

पढ़िए और समझिए

बच्चो! आप जानते हैं कि जब तक कोई भी शब्द किसी वाक्य में नहीं प्रयुक्त होता है, तब तक वह स्वतंत्र होता है। जैसे– गाय, गुलाब, रत्ना आदि। परंतु जब ये ही शब्द किसी वाक्य में प्रयुक्त किए जाते हैं, तो वे व्याकरणिक नियमों से बँधकर यथास्थान प्रयुक्त किए जाते हैं, तो ये पद बन जाते हैं; जैसे–

गाय		(शब्द)	गाय घास चर रही है।	(पद)
गुलाब		(शब्द)	गुलाब खुशबूदार फूल होता है।	(पद)
रत्ना		(शब्द)	रत्ना रस्सी कूद रही है।	(पद)

शब्द और पद में मुख्य अंतर यही है कि शब्द वह होता है, जो स्वतंत्र होता है एवं वाक्य में प्रयुक्त नहीं होता। पद वह होता है, जो व्याकरणिक नियमों से बँधकर वाक्य में यथास्थान प्रयुक्त किया जाता है।

उपर्युक्त पदों का व्याकरणिक परिचय देना ही पद-परिचय कहलाता है। अतएव हम यह भी कह सकते हैं कि–

वाक्य में प्रयुक्त प्रत्येक शब्द का व्याकरण के अनुसार पूर्ण जानकारी या परिचय देना ही व्याकरणिक-परिचय या पद-परिचय कहा जाता है।

पद परिचय के निम्नलिखित भेद होते हैं–

1. संज्ञा पद-परिचय
2. सर्वनाम पद-परिचय
3. विशेषण पद-परिचय
4. क्रिया पद-परिचय तथा
5. क्रिया-विशेषण पद-परिचय।

1. संज्ञा पद-परिचय : संज्ञा का पद-परिचय देते समय संज्ञा का भेद, लिंग, वचन, कारक एवं क्रिया से संबंध दर्शाया जाता है; जैसे– गंगा नदी हिमालय से निकलती है।

गंगा– व्यक्तिवाचक संज्ञा, कर्ता कारक, स्त्रीलिंग, एकवचन, निकलने की क्रिया का कर्ता।

नदी– जातिवाचक संज्ञा, कर्ता कारक, स्त्रीलिंग, एकवचन।

हिमालय– व्यक्तिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिंग, अपादान कारक, एकवचन।

अध्यापन संकेत शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को पद-परिचय के विभिन्न स्वरूपों से अवगत कराएँ तथा उनको वाक्य निर्माण द्वारा अभ्यास कराएँ।

2. **सर्वनाम पद-परिचय :** इसमें सर्वनाम के भेद, पुरुष, लिंग, वचन, कारक तथा क्रिया के साथ संबंध दर्शाया जाता है; जैसे– यह घर मेरा है।

यह– निश्चयवाचक सर्वनाम, एकवचन, पुल्लिग, कर्ता कारक, 'है' क्रिया का कर्ता।

मेरा– पुरुषवाचक सर्वनाम, उत्तम पुरुष, एकवचन, पुल्लिग, संबंध कारक।

3. **क्रिया पद-परिचय :** क्रिया का पद-परिचय देते समय उसके भेद, काल, वाच्य, लिंग, वचन, कारक एवं क्रिया का अन्य शब्दों से संबंध बताया जाता है; जैसे– पिता जी कार चला रहे हैं।

चला रहे हैं– सकर्मक क्रिया, वर्तमान काल, कर्तृवाच्य, कर्ता कारक - पिता जी, पुल्लिग, एकवचन, कर्म कारक - कार।

4. **विशेषण पद-परिचय :** विशेषण शब्दों का पद-परिचय देते समय इन बातों का ध्यान अवश्य रखना चाहिए–

भेद– गुणवाचक, संख्यावाचक, परिमाणवाचक, संकेतवाचक।

वचन– एकवचन, बहुवचन।

लिंग– पुल्लिग, स्त्रीलिंग।

अवस्था– मूलावस्था, उत्तरावस्था, उत्तमावस्था।

विशेष्य– जिस शब्द की विशेषता बताई जाती है; जैसे– सुयश बहुत परिश्रमी छात्र है।

परिश्रमी– गुणवाचक विशेषण, एकवचन, पुल्लिग, विशेष्य - सुयश।

5. **क्रिया-विशेषण का पद-परिचय :** क्रिया-विशेषण शब्दों का पद-परिचय देते समय केवल दो बातों का ध्यान रखना चाहिए। वे हैं– उसके भेद तथा उस क्रिया का उल्लेख करना जिसकी वह विशेषता बताता है; जैसे– कछुआ धीरे-धीरे चलता है।

धीरे-धीरे– रीतिवाचक क्रिया-विशेषण, 'चलता है' क्रिया की विशेषता बता रहा है।

आइए, पुनरावृति करें

- पद-परिचय के अंतर्गत शब्दों का व्याकरणिक परिचय दिया जाता है।
- पद-परिचय के अंतर्गत संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया एवं क्रिया-विशेषण का परिचय दिया जाता है।
- पद-परिचय देने के लिए पूरे व्याकरण का ज्ञान होना आवश्यक होता है।

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य

Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) पद किसे कहते हैं? बताइए। (ख) पद-परिचय से आप क्या समझते हैं?

लेखन कार्य

Writing Skills

1. **दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**

(क) पद-परिचय किसे कहते हैं?

(ख) संज्ञा का पद-परिचय देने के लिए किन-किन बातों का ध्यान देना चाहिए?

(ग) विशेषण का पद-परिचय देते समय किन बातों पर विचार करना चाहिए?

(घ) सर्वनाम का पद-परिचय देते समय किन बातों पर ध्यान देना चाहिए?

2. दिए गए वाक्यों में रंगीन शब्दों का पद-परिचय दीजिए।

(क) पिता जी लखनऊ गए हैं।

पिता जी – ....

लखनऊ – ....

(ख) बबिता जी खूबसूरत हैं।

खूबसूरत – ....

बबिता जी – ....

(ग) खरगोश बहुत तेज़ दौड़ता है।

तेज़ – ....

(घ) आज मुझे दिल्ली जाना है।

मुझे – ....

(ङ) दिनेश प्रतिदिन एक गिलास दूध पीता है।

प्रतिदिन – ....

3. दिए गए शब्दों को उनके पद-परिचय के प्रकारों से रेखा खींचकर मिलाइए।

(क) संज्ञा पद	(i) अच्छा, ईमानदार
(ख) सर्वनाम पद	(ii) अचानक, ओह!
(ग) क्रिया पद	(iii) आना, पकड़ना
(घ) विशेषण पद	(iv) मैं, तुम
(ङ) क्रिया-विशेषण पद	(v) पहाड़, गंगा

4. दिए गए वाक्यों के रंगीन शब्दों का सही पद-परिचय चुनिए।

(क) बच्चा सो गया।

(i) सकर्मक क्रिया, सामान्य भूतकाल, पुल्लिंग, बहुवचन, कर्तृवाच्य, कर्म – बच्चा।

(ii) अकर्मक क्रिया, सामान्य वर्तमान काल, स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्मवाच्य, कर्म – बच्चा।

(iii) अकर्मक क्रिया, सामान्य भूतकाल, पुल्लिंग, एकवचन, कर्तृवाच्य, कर्म – बच्चा।

(iv) सकर्मक क्रिया, हेतुहेतुमद भूतकाल, पुल्लिंग, एकवचन, कर्तृवाच्य, कर्म – बच्चा।

(ख) डॉ. कलाम भारत के वैज्ञानिक एवं राष्ट्रपति थे।

(i) व्यक्तिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, बहुवचन, कर्म कारक, 'थे' क्रिया का कर्ता।

(ii) व्यक्तिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, कर्ता कारक, 'थे' क्रिया का कर्ता।

(iii) जातिवाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्म कारक, 'थे' क्रिया का कर्ता।

(iv) भाववाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, कर्ता कारक, 'थे' क्रिया का कर्ता।

(ग) जुलूस में हज़ारों लोग शामिल थे।

(i) अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण, एकवचन, स्त्रीलिंग।

(ii) अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण, उभयलिंगी, बहुवचन, विशेष्य – जुलूस।

(iii) निश्चित संख्यावाचक विशेषण, पुल्लिंग, एकवचन, विशेष्य – जुलूस।

(iv) निश्चित संख्यावाचक, स्त्रीलिंग, एकवचन, विशेष्य – जुलूस।

(घ) वे आज ही आएँगे।

(i) पुरुषवाचक सर्वनाम, मध्यम पुरुष, स्त्रीलिंग, बहुवचन, कर्ता कारक, 'आएँगे' क्रिया का कर्ता।

(ii) पुरुषवाचक सर्वनाम, उत्तम पुरुष, पुल्लिंग, बहुवचन, कर्ता कारक, 'आएँगे' क्रिया का कर्ता।

(iii) पुरुषवाचक सर्वनाम, अन्य पुरुष, पुल्लिंग, बहुवचन, कर्ता कारक, 'आएँगे' क्रिया का कर्ता।

(iv) पुरुषवाचक सर्वनाम, अन्य पुरुष, स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्ता कारक, 'आएँगे' क्रिया का कर्ता।

सोचें-विचारें

Critical Thinking

5. शब्दों के सार्थक समूह को वाक्य कहा जाता है? क्या शब्दों के बारे में बताने के लिए पद-परिचय देना आवश्यक है, सोच-समझकर बताइए।

खेल-खेल में

Brain Storming Activity

6. किसी भी पाठ्यपुस्तक/अखबार/पत्रिका/कहानी की पुस्तक में से किसी वाक्य को चुनकर उसके सभी पदों का परिचय अपनी कॉपी में लिखिए।

7. कक्षा के छात्रों को पाँच समूहों में बाँटकर उनके नाम पाँच भेदों के अनुसार रखकर उनसे एक-एक वाक्य उसी प्रकार के बनवाइए।

प्रेरणादायक मूल्य

जिस प्रकार पद-परिचय देकर वाक्य के बारे में बताना आवश्यक होता है।, ठीक उसी प्रकार व्यावसायिक जीवन में व्यावसायिक कौशलों से परिचय कराना आवश्यक होता है।

पदबंध तथा वाक्य-विचार
(Phrases and Sentence)

अध्याय 21

पढ़िए और समझिए

पदबंध (Phrase)

दिए गए चित्रों के नाम पढ़िए और ध्यान दीजिए-

अलमारी में कपड़े रख दो।

लकड़ी की नई अलमारी में कपड़े रख दो।

ऊपर के पहले वाक्य में 'अलमारी' वाक्य में एक पद है। पद वे होते हैं, जो शब्द वाक्य में प्रयुक्त होकर पूरे वाक्य का निर्माण करते हैं।

नीचे के वाक्य में 'लकड़ी की नई' पद समूह 'अलमारी' से जुड़कर एक व्याकरणिक इकाई का निर्माण कर रहा है। अत: हम कह सकते हैं कि–

वाक्य के उस भाग को जिसमें एक से अधिक पद परस्पर मिलकर एक व्याकरणिक इकाई का कार्य करते हुए विशिष्ट अर्थ तो देते हैं, किंतु पूरा अर्थ नहीं देते, वे वाक्यांश पदबंध कहलाते हैं।

पदबंध के प्रकार

पदबंध मुख्यत: पाँच प्रकार के होते हैं–

1. संज्ञा पदबंध 2. सर्वनाम पदबंध 3. विशेषण पदबंध 4. क्रिया पदबंध 5. क्रिया-विशेषण पदबंध।

1. **संज्ञा पदबंध–** जब भी कोई पद समूह वाक्य में संज्ञा का काम करता है, वह संज्ञा पदबंध कहलाता है; जैसे–

जंग में लड़ने वाला सिपाही युद्ध में डटा रहा।

दिल्ली में रहने वाले शीतला प्रसाद का पुत्र नौकरी पा गया।

मेज़ पर रखी पुस्तक मुझे दे दो।

2. **सर्वनाम पदबंध–** जब कोई पद समूह किसी वाक्य में सर्वनाम का काम करता है, तो उसे सर्वनाम पदबंध कहते हैं; जैसे–

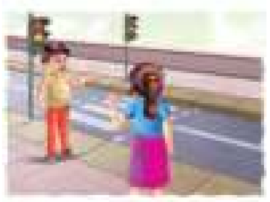

बिना बात किए तुम क्यों चले गए?

सड़क पर खड़ा मैं तुम्हारा इंतजार करता रहा।

परेशानियों से हार न मानने वाले आप निराश कैसे हो गए?

3. **विशेषण पदबंध–** जब कोई पद समूह किसी संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता का बोध कराता है, तो उसे विशेषण पदबंध कहते हैं; जैसे–

कूदफाँद करने वाला बालक आज नहीं आया।

अधिक पढ़ने वाले छात्र अवश्य सफल होते हैं।

लाल रंग वाली कार मुझे पसंद है।

4. **क्रिया पदबंध–** ऐसा पद समूह जो वाक्य में क्रिया का कार्य करता है, उसे क्रिया पदबंध कहते हैं; जैसे–

रामू बाज़ार चला गया।

वह पढ़ते-पढ़ते सो गया।

निशा रमा को साड़ी पहना रही है।

5. **क्रिया-विशेषण (अव्यय) पदबंध–** ऐसा वाक्यांश या पद समूह जो किसी वाक्य में क्रिया-विशेषण का कार्य करता है, वह क्रिया-विशेषण या अव्यय पदबंध कहलाता है; जैसे–

खरगोश तेज़ दौड़ते-दौड़ते थककर सो गया।

नंदिता बात-बात पर रोने लगती है।

उसने रात-रातभर जागकर पढ़ाई की।

वाक्य-विचार (Syntax)

दिए गए चित्र देखकर उनके नीचे लिखे वाक्य पढ़िए–

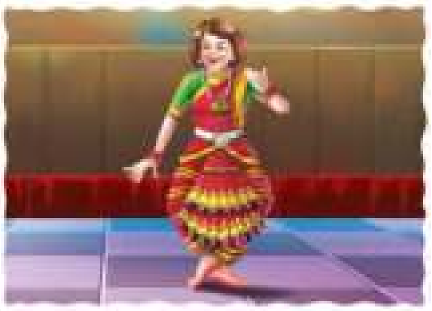

सोना नृत्य कर रही है।

सरकस में शेर करतब दिखा रहे थे।

हास्य कवियों ने खूब हँसाया।

ऊपर लिखे ये तीन वाक्य हैं। प्रत्येक वाक्य कई शब्दों से मिलकर बनता है। वाक्य में प्रयुक्त होने वाले सभी शब्द पद कहलाते हैं। वाक्य के बारे में हम कह सकते हैं कि–

भावों और विचारों को प्रकट करने वाले सार्थक व व्यवस्थित शब्द-समूह को वाक्य कहते हैं।

वाक्य के अंग

वाक्य के दो अंग होते हैं– (क) उद्देश्य (ख) विधेय

(क) उद्देश्य– वाक्य में जिसके विषय में बताया या कहा जाता है, उसे उद्देश्य कहते हैं; जैसे–

माँ ने भोजन बनाया।

पिता जी कार चला रहे हैं।

नंदन गेंद खेल रहा है।

उपर्युक्त वाक्यों में रेखांकित शब्दों– माँ ने, पिता जी, नंदन के बारे में क्रमशः भोजन बनाने की, कार चलाने की एवं गेंद खेलने की बात कही गई है। इसलिए माँ, पिता जी तथा नंदन वाक्य में उद्देश्य के रूप में हैं।

(ख) विधेय– किसी वाक्य में उद्देश्य के बारे में जो भी बातें कही जाती हैं, उसे विधेय कहा जाता है; जैसे–

रेशमा ने नई साड़ी खरीदी।

बच्चा दूध पीकर सो गया।

कुत्ता रोटी खा रहा है।

यहाँ 'नई साड़ी खरीदी', 'दूध पीकर सो गया' तथा 'रोटी खा रहा है।' क्रमशः 'रेशमा', 'बच्चा' तथा 'कुत्ता' के बारे में कही गई बातें हैं। अतः ये बातें विधेय कही जाती हैं।

वाक्य के भेद

वाक्य के भेद प्रायः दो आधारों पर निश्चित किए गए हैं; वे हैं–

(क) अर्थ के आधार पर (ख) रचना के आधार पर

(क) अर्थ के आधार पर वाक्य भेद– अर्थ के आधार पर वाक्य के आठ भेद होते हैं–

1. विधानवाचक	2. निषेधवाचक	3. आज्ञावाचक	4. विस्मयवाचक
5. संदेहवाचक	6. इच्छावाचक	7. संकेतवाचक	8. प्रश्नवाचक

1. **विधानवाचक वाक्य–** ऐसा वाक्य जिसमें किसी कार्य या किसी बात के होने की बात कही जाती है, वहाँ विधानवाचक वाक्य होता है; जैसे–

मैं खाना खाऊँगा।

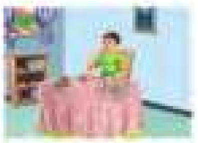

नेता जी ने भाषण दिया।

पिता जी दुबई जाएँगे।

2. **निषेधवाचक वाक्य–** ऐसे वाक्य जिनसे किसी कार्य के न होने (निषेध) की जानकारी मिलती या बोध होता है, उन्हें निषेधवाचक वाक्य कहते हैं; जैसे–

आज मामा जी नहीं आएँगे।

मैं आज दफ़्तर नहीं जाऊँगा।

विद्यालय में आज मैच नहीं खेला गया।

3. **आज्ञावाचक वाक्य–** ऐसे वाक्य जिनसे कोई आज्ञा, निवेदन, अनुमति आदि की जानकारी अथवा बोध होता है, वे आज्ञावाचक वाक्य कहे जाते हैं; जैसे–

कृपया यहाँ भीड़ मत इकट्ठी कीजिए।

मेरे पास मत बैठो, जाकर कुछ काम करो।

आप कल आ जाइएगा।

4. **विस्मयवाचक वाक्य–** ऐसे वाक्य जिनसे हर्ष, घृणा, शोक, भय आदि भाव प्रकट हो रहे हों, उसे विस्मयवाचक वाक्य कहते हैं; जैसे–

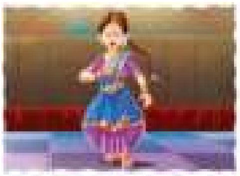

वाह! कितना सुंदर नृत्य किया।

छि:! इससे भी गंदा काम क्या होगा?

बाप रे बाप! घोर अनर्थ हो गया।

5. **संदेहवाचक वाक्य–** ऐसे वाक्य जिनसे किसी कार्य के होने या नहीं होने की स्पष्ट जानकारी न मिलकर केवल संभावना की जाती है, उसे संदेहवाचक वाक्य कहते हैं; जैसे–

शायद आज पिता जी विदेश से आएँ।

संभवत: आज वर्षा होगी।

लगता है, किसान सरकार की बात नहीं मानेंगे।

6. **इच्छावाचक वाक्य–** ऐसे वाक्य जिनसे इच्छा या कामना प्रकट करने के भाव की जानकारी मिलती है, उसे इच्छावाचक वाक्य कहा जाता है; जैसे–

ईश्वर आपका कल्याण करें।

काश! मैं भी प्रधानमंत्री बन जाता।

7. **संकेतवाचक वाक्य–** ऐसे वाक्य जिनसे वक्ता द्वारा संकेत प्रकट किया जाता है, उसे संकेतवाचक वाक्य कहते हैं; जैसे–

यदि वर्षा हागी, तो फसलें हरी हो जाएँगी।

राघव आएगा, तो कुछ-न-कुछ ज़रूर करेगा।

यदि सरकार मानेगी, तो किसान आंदोलन नहीं करेंगे।

8. **प्रश्नवाचक वाक्य–** जिन वाक्यों से प्रश्न पूछने का भाव प्रकट होता है, उसे प्रश्नवाचक वाक्य कहते हैं; जैसे–

आप कहाँ से आए हैं?

यहाँ कौन बैठा है?

अभी तक किसने खाना नहीं खाया है?

(ख) रचना के आधार पर वाक्य भेद–

रचना के आधार पर वाक्य के तीन भेद होते हैं– 1. सरल वाक्य 2. संयुक्त वाक्य 3. मिश्र या मिश्रित वाक्य।

1. **सरल वाक्य–** ऐसे वाक्य जिनमें क्रिया एक ही हो, चाहे कर्ता अनेक हों, तो वहाँ पर सरल वाक्य होता है; जैसे–

सुरेखा को पुरस्कार मिला।

राम, सीता और लक्ष्मण वन चले गए।

नीलिमा ने अपना जन्मदिन मनाया।

2. **संयुक्त वाक्य–** जिस वाक्य में उपवाक्य समान स्तर के होते हैं और, तथा, इसलिए और, किंतु से जुड़े होते हैं, उन्हें संयुक्त वाक्य कहते हैं; जैसे–

राम तो घर आ गया, किंतु नरेश नहीं आया।

तुम गीत गाते रहो और मैं तबला बजाता हूँ।

मेरी परीक्षा होनी है, इसलिए मैं पढ़ाई कर रहा हूँ।

3. **मिश्र या मिश्रित वाक्य–** ऐसे वाक्य जिनमें एक प्रधान उपवाक्य और दूसरा आश्रित उपवाक्य होता है, उसे मिश्र या मिश्रित वाक्य कहते हैं; जैसे–

जो सामने बैठा है, वह मेरा बेटा है।

यदि वर्षा होगी, तो ज़मीन गीली होगी।

आइए, पुनरावृति करें

- वाक्य के वे अंग जिसमें एक से अधिक पद परस्पर मिलकर एक व्याकरणिक इकाई का कार्य करते हुए विशिष्ट अर्थ देते हैं, किंतु पूरा अर्थ नहीं बताते, वे वाक्यांश पदबंध कहलाते हैं।
- पदबंध पाँच प्रकार के होते हैं– 1. संज्ञा पदबंध 2. सर्वनाम पदबंध 3. विशेषण पदबंध 4. क्रिया पदबंध 5. क्रिया-विशेषण पदबंध
- **वाक्य के अंग**
  - उद्देश्य (कर्ता)
  - विधेय (क्रिया का सूमह)
- **वाक्य के भेद**
  - **अर्थ के आधार पर**
    1. विधानवाचक
    2. निषेधवाचक
    3. आज्ञावाचक
    4. विस्मयवाचक
    5. संदेहवाचक
    6. इच्छावाचक
    7. संकेतवाचक
    8. प्रश्नवाचक
  - **रचना के आधार पर**
    1. सरल वाक्य
    2. संयुक्त वाक्य
    3. मिश्र या मिश्रित वाक्य

अध्यापन संकेत शिक्षक/शिक्षिका कक्षा में बच्चों को पदबंध तथा वाक्य-विचार को उसके प्रमुख प्रकारों से अंतर्संबंधित करते हुए समझाएँ ताकि बच्चे पाठ से अपना जुड़ाव महसूस कर सकें।

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य

Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) संज्ञा पदबंध किसे कहते हैं?

(ख) संयुक्त वाक्य से क्या तात्पर्य है?

लेखन कार्य

Writing Skills

1. **दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**

   (क) पदबंध और पद में क्या अंतर है?

   (ख) वाक्य किसे कहते हैं? उदाहरण देकर समझाइए।

   (ग) वाक्य के कितने अंग होते हैं?

   (घ) मिश्र या मिश्रित वाक्य के बारे में बताइए।

2. **दिए गए वाक्यों में रंगीन भागों के पदबंध का नाम लिखिए।**

   (क) झूठ बोलने वाले तुम कबसे सत्यवादी हो गए? ....

   (ख) बाँस की बनी बाँसुरी तो श्याम बजाते थे। ....

   (ग) बच्चा रोते-रोते सो गया। ....

   (घ) मनीषा अपने मायके जा रही है। ....

   (ङ) श्याम के बगीचे में खुशबूदार फूल लगे हैं। ....

   (च) नानी जी का घर शहर से काफी दूर है। ....

   (छ) वो गुस्सा करने वाली रंजना क्या बीमार है? ....

3. **अर्थ के आधार पर दिए गए वाक्यों के भेद लिखिए।**

   (क) कल मैं मथुरा जाऊँगा। ....

   (ख) आज अशुतोष नहीं आएगा। ....

   (ग) चलिए, थोड़ा बाहर घूम आएँ। ....

   (घ) यदि गाड़ी की सर्विस कराते, तो रास्ते में खड़ी नहीं होती। ....

   (ङ) वाह! कितना बढ़िया मौसम है। ....

   (च) बादल घिरे हैं, शायद आज वर्षा होगी। ....

   (छ) जाओ, एक कप चाय ले आओ। ....

4. **दिए गए वाक्यों में उद्देश्य छाँटकर लिखिए और विधेय के नीचे रेखा खींचिए।**

   (क) सुशील बड़ा होनहार लड़का है। ....

   (ख) किसान आंदोलन कर रहे हैं। ....

   (ग) अलका ने सुंदर भजन सुनाया। ....

   (घ) सरिता ने भोजन किया और पढ़ने लगी। ....

   (ङ) कल्कि प्रतिदिन पढ़ती है। ....

   (च) पिता जी कल मुंबई जाएँगे। ....

(छ) नरेंद्र बस से घर आया। ....

(ज) मिसेज शर्मा अच्छा पढ़ाती हैं। ....

(झ) नालंदा विश्वविद्यालय बिहार में था। ....

(ञ) नाव दूर चली गई है। ....

5. रचना के आधार पर वाक्यों के सही प्रकार चुनिए।

(क) जहाँ तक हमारी बात है, मैं अपना कार्य स्वयं कर लूँगा।

☐ (i) सरल वाक्य ☐ (ii) मिश्र वाक्य ☐ (iii) संयुक्त वाक्य

(ख) संजय ने पढ़ाई की और पास हो गया।

☐ (i) मिश्र वाक्य ☐ (ii) सरल वाक्य ☐ (iii) संयुक्त वाक्य

(ग) यह वही घड़ी है, जो तुमने मुझे उपहार में दी थी।

☐ (i) संयुक्त वाक्य ☐ (ii) सरल वाक्य ☐ (iii) मिश्र वाक्य

(घ) किसान दिल्ली के पास आंदोलन कर रहे हैं।

☐ (i) सरल वाक्य ☐ (ii) संयुक्त वाक्य ☐ (iii) मिश्र वाक्य

(ङ) रोहन कार चला रहा है और वह गाना भी सुन रहा है।

☐ (i) मिश्र वाक्य ☐ (ii) सरल वाक्य ☐ (iii) संयुक्त वाक्य

सोचें-विचारें

Critical Thinking

6. दिन-रात मेहनत करने वाला वह परीक्षा में प्रथम आया है। वाक्य में विशेषण और सर्वनाम पदबंध दोनो हैं। कैसे? सोचकर बताइए।

खेल-खेल में

Brain Storming Activity

7. कक्षाध्यापिका/कक्षाध्यापक जी कक्षा में छात्रों के तीन समूह बनवाकर एक-एक समूह से सरल, संयुक्त तथा मिश्र वाक्य बुलवाएँ।

प्रेरणादायक मूल्य

वाक्य को आधार बनाते हुए मनुष्य को सदैव अपने व्यक्तित्व और व्यवहार में सरल, स्पष्ट और रचनात्मकतापूर्ण वाक्यों का प्रयोग करना चाहिए।

अध्याय 22

विराम-चिह्न
(Punctuation Marks)

पढ़िए और समझिए

दिए गए वाक्यों को पढ़कर समझिए–

बच्चो! आप जानते हैं कि 'विराम' चिह्न का अर्थ 'रुकना' होता है। हम बोलते समय थोड़ी-थोड़ी देर या कुछ क्षण तक रुकते हैं, फिर बोलते हैं। कारण है कि सामने वाला व्यक्ति आपकी बातों को समझ सके। यही कार्य लेखन में भी किया जाता है, ताकि पाठकगण सही अर्थों के साथ पढ़-समझ सकें।

अत: हम यह भी कह सकते हैं कि–

भाषा के लिखित रूप में स्थान विशेष पर रुकने के लिए संकेत करने वाले चिह्नों को विराम-चिह्न कहते हैं।

प्रमुख विराम चिह्न हैं–

	विराम-चिह्न का नाम	विराम चिह्न	विराम-चिह्न लगे वाक्य
1.	पूर्ण विराम	।	मैं घर जाता हूँ।
2.	अर्ध विराम	;	गाड़ी आ गई; चलो चढ़ते हैं।
3.	अल्प विराम	,	सरला, विमला, रेखा और नेहा गीत गा रही हैं।
4.	प्रश्न-सूचक चिह्न	?	क्या, राकेश आ गया?
5.	विस्मयसूचक चिह्न	!	अरे! यह क्या हो गया है?
6.	उद्धरण चिह्न	'–', "–"	तुलसीदास जी ने 'रामायण' लिखी। माँ ने कहा, "जल्दी से नाश्ता कर लो, बस आने वाली है।"
7.	विवरण चिह्न	:, :–	संज्ञा तीन प्रकार की होती है: निम्नलिखित बातें ध्यान देने योग्य हैं:–
8.	योजक-चिह्न	-	हमें अपने माता-पिता की बात माननी चाहिए।
9.	निर्देशक चिह्न	–	मैकू– मैं हल नहीं जोतना चाहता।
10.	कोष्ठक चिह्न	( ), [ ]	राम अच्छा भाषण देता (कुशल वक्ता) है।
11.	त्रुटिपूरक चिह्न	^	मैं कल ^(कोलकाता) गया था।
12.	लाघव चिह्न	०	डॉ० रमन एक भारतीय वैज्ञानिक थे।

1. **पूर्णविराम चिह्न (।)** : यह चिह्न प्रश्नवाचक चिह्न वाले वाक्य के अलावा सभी वाक्यों के अंत में लगाया जाता है; जैसे–

नरेश पुस्तक पढ़ रहा है।
कमला रस्सी कूद रही है।
चंचल साइकिल चला रहा है।

2. **अर्ध विराम-चिह्न (;)** : यह विराम-चिह्न वहाँ लगता है, जहाँ पूर्ण विराम से थोड़ी कम देर तक रुकना होता है। इसमें दो अलग-अलग बातें कही जाती हैं; जैसे–

रमेश आई. ए. एस. बना; मित्रों ने खुशियाँ मनाई।
पिता जी कार्यालय चले गए; शाम को आएँगे।
नैन ने सुंदर नृत्य किया; पुरस्कार मिल सकता है।

3. **अल्प विराम-चिह्न (,)** : इस चिह्न का प्रयोग वहाँ लगाया जाता है, जहाँ अर्ध विराम से कुछ देर कम तक रुकना होता है; जैसे–

राधा, मोहन मेला देखने गए।
गीता, सीता, नेहा आपस में सहेलियाँ हैं।

4. **प्रश्नवाचक विराम-चिह्न (?)** : यह चिह्न प्रश्न पूछने के लिए वाक्य के अंत में लगाया जाता है। इस चिह्न को लगाने के बाद पूर्ण विराम चिह्न नहीं लगाया जाता; जैसे–

क्या तुम उत्तीर्ण हो गए?
मनोज और नेहा की शादी कब है?
क्या बिन्नी स्कूल गई?

5. **विस्मयसूचक चिह्न (!)** : यह चिह्न हर्ष, घृणा, विस्मय आदि व्यक्त करने के लिए लगाया जाता है; जैसे–

आहा! मैच देखकर मज़ा आ गया।
वाह! वाह! क्या खूब पात्र का किरदार निभाया।
अरे राम! यह क्या हो गया।

6. **उद्धरण चिह्न ('–', "–")** : यह चिह्न किसी के हू-ब-हू कथन को व्यक्त करने, किसी के उपनाम आदि को व्यक्त करने के लिए प्रयोग किया जाता है; जैसे–

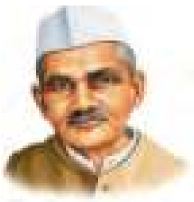

शास्त्री जी ने कहा था, "जय जवान जय किसान"।
तुलसीदास जी को 'गोस्वामी' भी कहा जाता है।
'रामायण' एक महाकाव्य है।

7. **विवरण चिह्न (: , :–)** : यह चिह्न वाक्यांश में निर्देश आदि देने के लिए एवं उसमें अपने विवरण प्रस्तुत करने के लिए किया जाता है; जैसे–

इस पुस्तक की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं:–
विश्व के सात आश्चर्य ये हैं:

अध्यापन संकेत
शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को विराम-चिह्न के विभिन्न रूपों के बारे में बताएँ तथा उनका वाक्यों में प्रयोग करना सिखाएँ ताकि बच्चे त्रुटिरहित वाक्य लिख सकें।

8. **योजक चिह्न (-) :** इस चिह्न का प्रयोग सामासिक पदों के बीच तुलनावाची शब्दों– सा, सी, से आदि के साथ लगाया जाता है; जैसे–

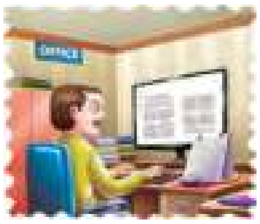

दिन-रात मेहनत करने से ही सफलता मिलती है।

नीलांजना का मुँह चाँद-सा सुंदर है।

भीष्म-सा पुत्र होना दुर्लभ है।

9. **निर्देशक चिह्न (–) :** इस चिह्न का प्रयोग किसी पात्र की बात को उसी के शब्दों में रखने के लिए नाटकों में किया जाता है; जैसे–

शकुंतला – हे प्राणनाथ! आप भूल तो नहीं जाएँगे?

दुष्यंत – नहीं, प्राणप्रिये! ऐसा करना असंभव है।

10. **कोष्ठक चिह्न ( ) [ ] :** कोष्ठक चिह्नों का प्रयोग वाक्य के बीच कठिन शब्दों को समझाने, उपभेद करने के लिए किया जाता है; जैसे–

हमें अपने मतों (वोटों) का प्रयोग अवश्य करना चाहिए।

पत्र के दो प्रकार हैं– (क) अनौपचारिक (ख) औपचारिक

11. **त्रुटिपूरक या हंसपद चिह्न (‸) :** इस चिह्न का प्रयोग वाक्य में उचित स्थान पर छूटे अंश को जोड़ने के लिए प्रयुक्त किया जाता है; जैसे–

श्री राम ‸(वन) चले गए।

आज मेरी ‸(कलम) घर पर छूट गई।

मैंने अपना ‸(गृहकार्य) पूरा कर लिया है।

12. **लाघव चिह्न (॰) :** इस चिह्न का प्रयोग शब्दों को संक्षिप्त रूप में लिखने के लिए किया जाता है; जैसे–

प्रोफेसर (प्रो॰) दास विज्ञान विषय के मर्मज्ञ हैं।

डॉक्टर (डॉ॰) त्रेहन प्रसिद्ध हृदयरोग सर्जन हैं।

भारतीय जनता पार्टी (भा॰ज॰पा॰)

आइए, पुनरावृति करें

- **'विराम'** शब्द का अर्थ– रुकना होता है।
- विराम न लगाने से वाक्य का अर्थ कुछ और समझ लिया जाता है।
- विराम बारह प्रकार के होते हैं–

विराम-चिह्न

- पूर्ण विराम (।)
- अर्ध विराम (;)
- अल्प विराम (,)
- प्रश्नवाचक चिह्न (?)
- विस्मयसूचक चिह्न (!)
- योजक चिह्न (-)
- उद्धरण चिह्न (‘-’)(“-”)
- कोष्ठक चिह्न ()
- लाघव चिह्न (॰)
- हंसपद या त्रुटिपूरक चिह्न (‸)
- निर्देशक चिह्न (–)
- विवरण चिह्न :, :–

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य

Speaking Skills

दिए गए वाक्यों के उत्तर बताइए।

(क) विराम-चिह्न किसे कहते हैं? बताइए।

(ख) विराम-चिह्न के प्रकार बताइए।

(ग) पूर्ण विराम चिह्न को परिभाषित कीजिए।

लेखन कार्य

Writing Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(क) विराम-चिह्न किसे कहते हैं?

(ख) त्रुटिपूरक चिह्न किसे कहते हैं?

(ग) निर्देशक और योजक चिह्न में क्या अंतर होता है?

2. दिए गए चिह्नों से उनके नाम तक रेखा खींचकर मिलाइए।

कोष्ठक चिह्न	;	लाघव चिह्न
	।	
त्रुटिपूरक चिह्न	!	प्रश्नवाचक चिह्न
	“_”	
	^	
अर्ध विराम चिह्म	०	उद्धरण चिह्न
पूर्ण विराम चिह्न	( )	विस्मयसूचक चिह्न
	?	

3. दिए गए वाक्यों में उचित विराम-चिह्न लगाकर दोबारा लिखिए।

(क) नंदन मनोहर रंजना कविता और सुरेश ने नाटक में भाग लिया

....

(ख) वाह क्या बात है मुझे तुम्हारी जीत पर भरोसा था

....

(ग) तुलसीदास को गोस्वामी भी कहा जाता है वे राम के भक्त थे

....

(घ) अध्यापिका ने कहा चलो आज कुछ खेल खेलते हैं

....

4. दिए गए शब्दों में लाघव चिह्न लगाइए।

(क) केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड

(ख) राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद

(ग) कृपया पन्ना उलटिए

(घ) भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र

(ङ) काशी हिंदू विश्वविद्यालय

5. दिए गए अनुच्छेद में यथोचित विराम-चिह्न लगाइए।

मैंने जब रजनी को देखा तो अवाक रह गया उसके व्यक्तित्व में अत्यधिक बदलाव आ गया था वह एक चंचल लड़की अब काफी गंभीर लगने लगी थी उसका अल्हड़पना अब गायब होकर एक जिम्मेदारी का भाव चेहरे पर दिखने लगा था वह आई पैर छुई और एक सहज मुस्कान बिखेर कर कहा ताऊजी मैं आई. ए. एस. बन गई मैं तो खुशी के मारे बल्लियों उछल पड़ा

सोचें-विचारें

Critical Thinking

6. किसी वाक्य में विराम-चिह्नों का प्रयोग वाक्य में रुकने के लिए किया जाता है, तो जरा सोचिए। अल्प-विराम चिह्न तथा अर्ध-विराम चिह्न एक दूसरे से किस प्रकार भिन्न हैं?

खेल-खेल में

Brain Storming Activity

7. अपनी पाठ्य-पुस्तक में से विराम-चिह्नों को ढूँढ़कर उनकी सूची बनाइए।

8. अध्यापिका/अध्यापक कक्षा में कुछ विराम-चिह्न श्यामपट्ट पर लिखकर उनका वाक्य में प्रयोग करवाएँ।

प्रेरणादायक मूल्य

हम किसी वाक्य में विराम-चिह्नों का प्रयोग रुकने के लिए करते हैं। वैसे ही हमें आचरण को बेहतर बनाने के लिए उसमें थोड़ा ठहराव देना आवश्यक है।

अलंकार
(Figure of Speech)

पढ़िए और समझिए

बच्चो! 'अलंकार' शब्द का अर्थ है– 'आभूषण' या 'गहना'। जिस प्रकार से कोई भी व्यक्ति अलंकार या गहना पहनने से सुंदर लगने लगता है, उसी प्रकार से अलंकारों के प्रयोग से काव्य या उसकी भाषा सुंदर हो जाती है। पढ़ने-सुनने में अच्छा लगता है। हमें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि जहाँ मुहावरों से वाक्य या गद्य की शोभा बढ़ती है, वहीं काव्य (पद्य) में अलंकारों के प्रयोग से काव्य की सुंदरता में चार चाँद लग जाते हैं; जैसे–

तीन बेर खाती थीं, तीन बेर खाती हैं।

इसके लिए बेर शब्द के दो-दो अर्थ हैं। जैसे– जो रानियाँ तीन बेर (बार) भोजन करती थीं, अब राज्य छिन जाने के कारण केवल तीन बेर (एक फल) यानी अब केवल तीन बेर के फल खाकर जीवन यापन कर रही हैं। ऐसी सुंदरता अलंकार के प्रयोग से आई है।

अलंकार के भेद–

अलंकार के दो भेद होते हैं– 1. शब्दालंकार 2. अर्थालंकार।

1. **शब्दालंकार :** ऐसे अलंकार जहाँ शब्दों में चमत्कार उत्पन्न होता है, वे शब्दालंकार कहलाते हैं; जैसे–

तनिक हिलतीं तैरतीं ताल में तरुणियाँ

यहाँ शब्दों में 'त' वर्ण की आवृत्ति होने से शब्दों में चमत्कार उत्पन्न हुआ है।

शब्दालंकार के भेद– शब्दालंकार के भी तीन भेद होते हैं–

(क) अनुप्रास अलंकार (ख) यमक अलंकार (ग) श्लेष अलंकार।

(क) अनुप्रास अलंकार : काव्य की पंक्तियों में जहाँ समान वर्णों या समान ध्वनियों की अनेक बार आवृत्ति होती है, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है; जैसे–

(i) तरनि तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाए। ('त' वर्ण की आवृत्ति)

(ii) चारु चंद्र की चंचल किरणें खेल रही थीं जल-थल में। ('च' एवं 'ल' वर्णों की आवृत्ति)

(iii) मधुर-मधुर मुस्कान मनोहर मनुज वेश का उजियारा। ('म' वर्ण की आवृत्ति)

(ख) यमक अलंकार : जब काव्य में किसी शब्द का एकाधिक बार प्रयोग हो और वह विविध अर्थों में प्रयोग किया गया हो, तो वहाँ यमक अलंकार होता है; जैसे–

(i) माला फेरत युग भया फिरा न मन का फेर।
कर का मनका डारि दे, मन का मनका फेर।।

यहाँ 'मनका' शब्द का चार बार प्रयोग किया गया है। इनके अलग-अलग अर्थ हैं- मन (आत्मा का), माला का दाना।

(ii) काली घटा का घमंड घटा।

यहाँ 'घटा' शब्द दो बार आया है और उनके अर्थ हैं- घटाएँ तथा घटना या कम होना।

(iii) कनक कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाय।

या खाए बौराय नर, वा पाए बौराय।।

यहाँ 'कनक' शब्द का दो बार प्रयोग किया गया है। एक का अर्थ सोना (स्वर्ण) है, तो दूसरे का धतूरा।

(ग) श्लेष अलंकार : पद्य या काव्य में जब किसी ऐसे शब्द का प्रयोग किया गया हो, जिसके एक से अधिक अर्थ निकलते हैं, वहाँ श्लेष अलंकार का प्रयोग होता है; जैसे–

(i) रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।

पानी गए न ऊबरै, मोती, मानुष, चून।।

यहाँ 'पानी' शब्द के तीन अर्थ हैं- चमक, प्रतिष्ठा तथा आटे के लिए जल।

(ii) जो रहीम गति दीप की, कुल कपूत की सोय।

बारे उजियारो करै, बढ़े अँधेरो होय ।।

यहाँ 'बारे' तथा 'बढ़े' के दो-दो अर्थ हैं-

बारे : जलना, बारे : जन्म लेना।

बढ़े : बुझना, बढ़े : बड़ा होना।

2. अर्थालंकार : जिन आलंकारिक शब्दों से काव्य के अर्थ में सौंदर्य उत्पन्न होता है, उसे अर्थालंकार कहते हैं; जैसे–

मैया मैं तो चंद्र-खिलौना लैहों।

यहाँ 'चंद्र-खिलौना' का अर्थ चंद्र रूपी खिलौना से है, इससे अर्थ में चमत्कार उत्पन्न हो गया है।

अर्थालंकार के भेद- अर्थालंकार के निम्नलिखित भेद हैं–

(क) उपमा (ख) रूपक (ग) उत्प्रेक्षा (घ) अतिश्योक्ति (ङ) मानवीकरण (च) पुनरुक्ति प्रकाश।

(क) उपमा अलंकार : इस अलंकार में दो असमान व्यक्तियों अथवा वस्तुओं में तुलना करते हुए समानता दिखलाई जाती है, वहाँ उपमा अलंकार होता है। इसके लिए सी, सा, सम, सरिस आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता है; जैसे–

(i) मो सम नारि न तुम सम पुरुषा।

(ii) देखिए फूल-सी बच्ची।

(iii) पीपर पात सरिस मन डोला।

(iv) मखमल के झूल पड़े हाथी-सा टीला।

(ख) रूपक अलंकार : ऐसे अलंकार जहाँ गुणों की समानता दर्शाने के लिए दो वस्तुओं को अभिन्न मान लिया जाता है अथवा 'उपमेय' में 'उपमान' का आरोप कर दिया जाता है, वहाँ रूपक अलंकार होता है; जैसे–

(i) चरण कमल बंदौ हरिराई।

(ii) तुलसी मन मंदिर में बिहरैं।

(iii) आए महंत वसंत।

(ग) उत्प्रेक्षा अलंकार : ऐसे अलंकार जहाँ उपमेय में उपमान की संभावना प्रकट की जाती है, वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है। इसके लिए मनु, मानो, जनु, जानो, जनहु, मनहु आदि वाचक शब्दों का प्रयोग किया जाता है; जैसे–

(i) सोहत ओढ़े पीत पट, स्याम सलोने गात।
मनहु नीलमनि सैल पर, आतप पर्‌यो प्रभात।।

(ii) उस काल मानो क्रोध के तन काँपने उसका लगा।
मानो हवा के ज़ोर से सोता हुआ सागर जगा।

(घ) अतिश्योक्ति अलंकार : जिस अलंकार में किसी की बातों को बहुत बढ़ा-चढ़ाकर बताया जाता है, उसे अतिश्योक्ति अलंकार कहते हैं। किंतु ऐसा केवल काव्य में ही होता है; जैसे–

(i) हनुमान की पूँछ में, लगन न पाई आग।
लंका सिगरी जल गई, गए निसाचर भाग।।

(ii) आगे नदिया परी अपार, घोड़ा कैसे उतरे पार।
राणा ने सोचा इस पार, तब तक चेतक था उस पार।।

(ङ) मानवीकरण अलंकार : ऐसे अलंकार जिसमें जड़ पदार्थ मनुष्यों की तरह बोलते तथा व्यवहार करते दिखलाई पड़ते हैं, वहाँ मानवीकरण अलंकार होता है; जैसे–

माटी कहे कुम्हार से, तू क्या रौंदे मोय।
एक दिन ऐसा आएगा, मैं रौंदूँगी तोय।।

(च) पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार : इस अलंकार में एक ही शब्द का दो बार प्रयोग किया जाता है। दूसरा शब्द पहले वाले शब्द में वृद्धि कर देता है; जैसे–

मैं भी उस पर बैठ कन्हैया बनता धीरे-धीरे
सूरज है जग का बुझा-बुझा।

अध्यापन संकेत शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को अलंकार को अनोखे अंदाज में प्रस्तुत करके उदाहरणस्वरूप अलंकार के विभिन्न रूपों को समझाएँ।

आइए, पुनरावृति करें

- अलंकारों के प्रयोग से काव्य के सौंदर्य में वृद्धि हो जाती है।
- अलंकार के दो भेद होते हैं– शब्दालंकार और अर्थालंकार।

अलंकार

- शब्दालंकार (शब्द में सौंदर्य)
  - अनुप्रास (वर्णों की आवृत्ति)
  - यमक (शब्दों के कई अर्थ)
  - श्लेष (एक शब्द के अनेक अर्थ)
- अर्थालंकार (अर्थ में सौंदर्य)
  - उपमा (समानता दिखाना)
  - रूपक (उपमेय में उपमान का आरोपण)
  - उत्प्रेक्षा (उपमेय में उपमान की संभावना)
  - मानवीकरण (निर्जीव चीज़ों का सजीव के समान व्यवहार)
  - अतिशयोक्ति (बहुत बढ़ा-चढ़ाकर कहना)
  - पुनरुक्ति प्रकाश (एक ही शब्द का दो बार प्रयोग)

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य

Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) शब्दालंकार को परिभाषित कीजिए।

(ख) अलंकार से आप क्या समझते हैं?

(ग) अलंकार के भेद बताइए।

लेखन कार्य

Writing Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) अलंकार किसे कहते हैं?

(ख) शब्दालंकार की परिभाषा सोदाहरण दीजिए।

(ग) मानवीकरण अलंकार को परिभाषित कीजिए।

(घ) अतिशयोक्ति अलंकार के बारे में स्पष्टीकरण दीजिए।

2. दी गई पंक्तियों के सामने उनमें प्रयुक्त अलंकार का नाम लिखिए।

(क) रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरै, मोती, मानुष, चून।। ....

(ख) चारु चंद्र की चंचल किरणें खेल रही हैं जल-थल में। ....

(ग) सुबरन को ढूँढ़त फिरत, कवि, व्यभिचारी, चोर। ....

(घ) मेघ आए बड़े बन ठन सँवर के। ....

(ङ) पायो जी मैंने राम रतन धन पायो। ....

3. दी गई पंक्तियों में कौन-सा अलंकार है? सही पर निशान लगाइए।

(क) कालिंदी कूल कदंब के डारन।

☐ यमक ☐ श्लेष ☐ उत्प्रेक्षा ☐ अनुप्रास

(ख) को घटि ये वृषभानुजा, वे हलधर के वीर।

☐ उपमा ☐ श्लेष ☐ यमक ☐ रूपक

(ग) ऐल फैल खैल भैल खलक में गैल-गैल।

☐ मानवीकरण ☐ अन्योक्ति ☐ अनुप्रास ☐ यमक

(घ) लाली मेरे लाल की जित देखूँ तित लाल।

☐ रूपक ☐ उत्प्रेक्षा ☐ अन्योक्ति ☐ अनुप्रास

सोचें-विचारें

Critical Thinking

4. 'मुदित महीपति मंदिर आए। सेवक सचिव सुमंत बुलाए।।'

उपर्युक्त पंक्ति को परिभाषित करते हुए अलंकार की पहचान करके सोच-समझकर लिखिए।

खेल-खेल में

Brain Storming Activity

5. छात्रों से आलंकारिक पंक्तियों की अंताक्षरी करवाकर उनमें प्रयुक्त अलंकारों के नाम बच्चों से पूछिए–

प्रेरणादायक मूल्य

जैसे अलंकार के द्वारा काव्य में सौंदर्य और चमत्कार उत्पन्न होता है, वैसे ही हमें भी अपने प्रत्येक कार्य को अद्भुत अंदाज से करना चाहिए ताकि जीवन में सुंदरता और आकर्षकता उत्पन्न हो।

अध्याय 24

सार-लेखन
(Precis Writing)

पढ़िए और समझिए

बच्चो! सार-लेखन भी एक विधा है। किसी गद्य खंड के मुख्य भावों को या मूल बातों को बिना छोड़े ही संक्षेप में लगभग एक-तिहाई भाग में लिखना सार-लेखन कहलाता है।

वास्तव में किसी अपेक्षाकृत बड़े अनुच्छेद को संक्षिप्त में लिखना ही सार-लेखन कहा जाता है।

सार-लेखन के समय ध्यान रखने योग्य बातें निम्नलिखित हैं–

- पहले अनुच्छेद को एकाधिक बार पढ़कर उसकी मुख्य बातें समझ लें या पेंसिल से निशान लगा लें।
- सार-लेखन हमेशा अपने शब्दों में लिखना चाहिए।
- अनावश्यक बातों, उद्धरणों, मुहावरों आदि को छोड़कर मुख्य बातें लिखनी चाहिए।
- मूल अनुच्छेद का लगभग एक-तिहाई भाग ही सार-लेखन लिखना चाहिए।
- सार-लेखन में अपनी ओर से कुछ नई बातें नहीं जोड़नी चाहिए।

सार-लेखन के कुछ उदाहरण–

1. आजकल कोरोना के बढ़ते प्रकोप ने एक बार फिर सबको हिलाकर रख दिया है। ऐसा लगता है कि सुरसा राक्षसी अपनी जीभ लपलपाकर समय-समय पर लीलने का प्रयास कर रही है। समूचा विश्व काँप गया है। चाहे वह विकसित देश हो या विकासशील। कोई भी अछूता नहीं रह पाया है। दुनिया ने अपनी अलग तरह की जीवन-शैली अपना ली है। सबने योगाभ्यास, आयुर्वेदिक चीज़ों का सेवन, घर का बना खाना, सामाजिक दूरी, हाथ जोड़कर प्रणाम करना, गर्म खाना और गर्म पानी पीना जैसी दिनचर्या अपना ली है। हमारे वैदिक ऋषियों ने जीवन जीने का यही मूलमंत्र माना है। ये सभी कार्य हमें प्राकृतिक जीवन की ओर ले जाते हैं, यही हमारी सामाजिक संस्कृति है। इसे ही हम भारतीय जीवन-पद्धति कह सकते हैं। वर्तमान की जीवन-शैली ने धनी-निर्धन सबको समान रूप से कष्ट पहुँचाया है। इस महामारी की चपेट में सभी आए हैं। इसके लिए फिर यह निश्चित किया गया कि केवल बचाव ही इसका उपाय है। सरकारों ने हाथ खड़े किए, लोगों ने सहायता के लिए हाथ आगे बढ़ाया, यही सच्ची मानवता देखने को मिली।

सार: कोरोना की महामारी से सब डर गए हैं। इसने धनी-निर्धन, शहरी-ग्रामीण, सबको समान रूप से अपनी चपेट में लिया है। इससे लोगों ने जीवन जीने की नई शैली अपनाई। प्राकृतिक जीवन पर बल दिया एवं साधारण भोजन किया। यही भारतीय संस्कृति है।

अध्यापन संकेत शिक्षक/शिक्षिका कक्षा में बच्चों के रचनात्मक विकास हेतु सार लेखन को उचित मार्गदर्शन के द्वारा समझाएँ।

2. जीवन बहुत ही अनमोल है। यह हमारे वर्षों की तपस्या एवं अच्छे कर्मों को करने के बाद मिलता है। इसे ऐसे ही बरबाद कर देना उचित नहीं है। तुलसीदास जी ने भी कहा है– 'बड़े भाग मानुष तन पावा'। मनुष्य जीवन बार-बार नहीं मिलता है। ईश्वर ने हमें यह जीवन कुछ करने के लिए दिया है। इसी जीवन में हमें लोगों के लिए कुछ करना होता है, जीवन का मर्म समझना और बताना होता है। जीवन को बचाए रखना भी हमारी जिम्मेदारी है। इसे स्वस्थ रखने के लिए हमें योग-आसन-प्राणायाम आदि करना होता है। शरीर को स्वस्थ रखना होता है। शरीर के स्वस्थ रहने पर ही हम अपने सारे कार्य सुचारू रूप से कर सकेंगे, जीवन का यही मूलाधार है।

सारः जीवन अमूल्य है। यह हमारे अच्छे कर्मों के बाद मिला है। इसे संरक्षित करके जीवन में कुछ कार्य करना चाहिए। इसके लिए योग-ध्यान-प्राणायाम करके इसे अच्छा बनाने का प्रयास करना चाहिए।

3. हमारे देश को त्योहारों का देश कहा जाता है। विविधता में एकता ही हमारी संस्कृति है। यही हमारी पहचान है। हमारे देश में अनेक प्रांत हैं, अलग-अलग खान-पान हैं, अलग-अलग वेश-भूषाएँ हैं एवं अलग-अलग मतावलंबी हैं। लेकिन सब लोग सभी त्योहार मिलकर मनाते हैं। यही भारतीय संस्कृति की विशेषता है। सबको यहाँ अपने त्योहार, पर्व, धर्म मानने की समान स्वतंत्रता है। पूरे विश्व में यह एक अद्भुत मिसाल दी जाती है। त्योहार मनाने से शरीर एवं मन में नई ऊर्जा का संचार होता है। हम खुशियाँ मनाते हैं। नए-नए पकवान तथा व्यंजन बनाते हैं, लोगों से मिलते-जुलते हैं। इससे आपसी सद्भाव बढ़ता है। लोग एक-दूसरे के नज़दीक आते हैं। उनके सुख-दुख में भाग लेते हैं। इससे आपसी वैमनस्य धीरे-धीरे समाप्त होता जाता है। यही हमारी विश्व में पहचान बनी है। यही हमारी धार्मिक संस्कृति है।

सारः भारत को त्योहारों का देश कहते हैं। त्योहार मनाने से स्फूर्ति एवं आपसी सद्भाव बना रहता है। हमारे यहाँ की गंगा-यमुनी संस्कृति ही हमारी विशेषता है। अनेकता में एकता ही हमारी पहचान है। त्योहार मिल-जुलकर मनाने से हम एक-दूसरे के निकट आते हैं।

अभ्यास कार्य

लेखन कार्य
Writing Skills

1. **सार-लेखन किसे कहते हैं?**

....

....

2. **दिए गए गद्यांशों का लगभग एक-तिहाई शब्दों में सार लिखिए।**

(क) भारतीय स्वाधीनता संग्राम में हज़ारों नारियों ने सुभाष चंद्र बोस के साथ कंधे-से-कंधा मिलाकर सहयोग किया। उन्होंने तुलादान के द्वारा अपने गहने दे दिए। हमारे वीरों का साथ दिया, अनेक यातनाएँ सही और देश की आज़ादी की अलख जगाए रखी। यही हमारे देश की विशेषता है। हमारे यहाँ मैत्रेयी, गार्गी, अपाला, सीता आदि अनेकानेक महिलाओं का अग्रणी स्थान रहा है। उन्होंने अपने ज्ञान-कर्म से सबको अपना लोहा मनवाया है। आज महिलाएँ हवाई जहाज़ उड़ा रही हैं, फाइटर जहाज़ उड़ा रही हैं, कंपनियों की सीओ बनकर कंपनियाँ चला रही हैं, अध्यापन, नेतृत्व सहित अनेकानेक क्षेत्रों में अपना और समाज का विकास कर रही हैं। इसलिए महिलाएँ प्रत्येक क्षेत्र में अपना परचम लहरा रही हैं।

सार : ....

(ख) आज राजनीति का स्तर निम्न होता चला जा रहा है। नेताओं की भाषा पर कोई नियंत्रण नहीं रह गया है। वहीं जब से सोशल मीडिया सक्रिय हुआ है, तब से लोगों ने भी मन की भड़ास निकालने में कोई कमी नहीं छोड़ी है। इसमें यह कहा जाता है कि पहले लोगों को छूट मिली, अब इस पर बैन लगने शुरू हो गए हैं। वास्तव में स्तर की गिरावट की शुरुआत नेताओं की ज़ुबान फिसलने से शुरू हुई। पुनः उनके अनुयायियों की फिसली और आज स्थिति यह है कि पूरे समाज की ज़ुबान फिसल गई है। इसे रोकना होगा। पर सबसे बड़ी समस्या यह है कि यह सीख दे कौन? दिमाग में ज़हर, ज़ुबान में ज़हर, समाज में ज़हर – आखिर ज़हर का खात्मा कैसे हो?

सार : ....

(ग) अनुशासन एक आवश्यक अंग है, जो हर किसी के लिए आवश्यक है। इससे ही विश्व की व्यवस्था बनती है। अनुशासन के दो रूप हैं– आत्मिक अनुशासन तथा बाह्य अनुशासन। आत्मिक अनुशासन से संबंध स्वयं विवेकपूर्वक अपने को अनुशासित करके जीवन जीना। बाह्य अनुशासन शासन द्वारा अनुपालन करवाया जाता है। बाह्य अनुशासन की बनिस्बत आंतरिक अनुशासन उत्तम होता है, क्योंकि यदि हम आंतरिक अनुशासन का अच्छी तरह से अनुपालन करें, तो बाह्य अनुशासन की अनुपालना स्वयमेव हो जाएगी। हमारे अच्छे कृत्यों से समाज में अनेकानेक कुरीतियाँ स्वतः ही समाप्त हो जाएँगी।

सार : ....

(घ) आजकल विज्ञापनों का बाज़ार काफ़ी गर्म है। आपको हर चीज़ के लिए विज्ञापन मिल जाएँगे। मसलन, होटल ढूँढ़ना है, किराया जानना है, दवाइयाँ मँगवानी हैं, विवाह ढूँढ़ना है, कहाँ किस रैंकिंग के आधार पर किस कॉलेज में दाखिला लेना है, साबुन, तेल, घी, अगरबत्ती, राशन, पुस्तकें, प्रकाशन, अस्पताल, नेताओं द्वारा उपलब्धियाँ गिनाते विज्ञापन, रसोई एवं घर संबंधी अनेक चीज़ों के विज्ञापन, कपड़े – शायद ही कोई ऐसी वस्तु हो या क्षेत्र हो, जिसका विज्ञापन न किया जाता हो। वास्तव में, विज्ञापन के दोनों ही पक्षों पर ध्यान देना चाहिए – सकारात्मक तथा नकारात्मक। सकारात्मक में चीज़ों या उत्पादों की जानकारी, उनसे होने वाले लाभ एवं नकारात्मक में, अनावश्यक रूप से बिना ज़रूरत की चीज़ें खरीदने के लिए मन भटकाते रहते हैं।

सार : ....

प्रेरणादायक मूल्य

प्रत्येक व्यक्ति को सारपूर्ण बातें करनी चाहिए ताकि सामने वाले व्यक्ति को आपकी बातें अच्छी तरह समझ में आ जाए और वह एक उचित निष्कर्ष तक पहुँचें।

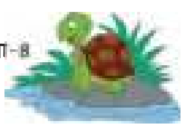

स्वमूल्यांकन पत्र-1

समयः 1 घंटा

नाम : .... **कक्षा :** .... **अनुक्रमांक :** ....

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) भाषा किसे कहते हैं?

(ख) स्वर की परिभाषा देकर इसके भेद बताइए।

(ग) संधि की परिभाषा देकर इसके भेदों के नाम लिखिए।

(घ) उत्पत्ति के आधार पर शब्द कितने प्रकार के होते हैं?

(ङ) उपसर्ग और प्रत्यय में क्या अंतर होता है?

2. (क) दिए गए वाक्यों में से संज्ञा पदों को रेखांकित कीजिए।

(i) हमारे खेतों में हरियाली है।

(ii) यह राकेश का घर है।

(iii) जयचंदों से देश भरा पड़ा है।

(ख) दिए गए शब्दों से भाववाचक संज्ञा शब्द बनाइए।

लड़का	–	....	कड़वा	–	....
पढ़ना	–	....	सर्व	–	....
आलसी	–	....	नेता	–	....

3. (क) दिए गए शब्दों के पुल्लिग अथवा स्त्रीलिंग रूप लिखिए।

थाली	–	....	बुद्धिमान	–	....
चौधराइन	–	....	पुत्रवान	–	....
स्वामिनी	–	....	बनिया	–	....

(ख) दिए गए शब्दों के एकवचन या बहुवचन रूप लिखिए।

पाठक	–	....	कहानियाँ	–	....
पक्षीवृंद	–	....	लेखिका	–	....
धेनु	–	....	नेता	–	....

4. दिए गए वाक्यों में उचित परसर्ग (कारक चिह्न) लगाकर पूरा कीजिए।

(क) यह कहानी हमारी दादी जी .... सुनाई है।

(ख) दशरथ .... श्रवण कुमार .... तीर मारा।

(ग) सरिता .... फ्रॉक बहुत सुंदर है।

(घ) तोते जमीन .... बैठे हैं।

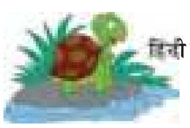

5. सही सर्वनाम शब्दों से उनके नाम तक रेखा खींचिए।

(कोई, बुरा)	उत्तम पुरुष	(यह, वह)
	प्रश्नवाचक	
(जैसा, वैसा)	निजवाचक	(खुद, स्वत:)
	निश्चयवाचक	
मैं, मैंने, हम)	संबंधवाचक	(किसने, किसे)
	अनिश्चयवाचक	

6. दिए गए शब्दों में से सही विशेषण शब्द चुनिए।

(क) **सम्मान–**

☐ ससम्मान ☐ सम्मानित ☐ समानित ☐ सम्मानीय

(ख) **बुद्‌धि–**

☐ बुद्‌धि ☐ बुद्‌धिमती ☐ बुद्‌धिमान ☐ ख एवं ग

(ग) **गर्व–**

☐ गर्वान्वित ☐ गर्वन्वित ☐ गर्वीला ☐ गर्व–गर्व

7. दिए गए वाक्यों में कर्म के आधार पर क्रिया-भेद लिखिए।

(क) छात्रगण परीक्षा दे रहे हैं। ....

(ख) सुलक्षणा जाह्नवी को कलम देती है। ....

(ग) कुत्ता भौंकता है। ....

(घ) अध्यापिका पढ़ाती हैं। ....

8. निर्देशानुसार वाक्यों के कालों को बदलकर दोबारा लिखिए।

(क) मतदान पड़ रहा है। (पूर्ण भूतकाल में)

(ख) मेले में गहने बिकने लगे। (पूर्ण वर्तमान काल में)

(ग) मालिन माला गूँथ रही है। (सामान्य भविष्यत् काल में)

(घ) नौकरानी झाड़ू लगाती है। (पूर्ण भूतकाल में)

9. दी गई भाषाओं के साथ उनकी लिपि लिखिए।

जापानी –	....	संस्कृत –	....
पंजाबी –	....	अंग्रेज़ी –	....
उर्दू –	....	डच –	....

स्वमूल्यांकन पत्र-2

समयः 1 घंटा

नाम : .... **कक्षा :** .... **अनुक्रमांक :** ....

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) वाच्य किसे कहते हैं?

(ख) संबंधबोधक की सोदाहरण परिभाषा दीजिए।

(ग) पदबंध को परिभाषित कीजिए।

(घ) वाक्य के कितने अंग होते हैं?

(ङ) मुहावरे तथा लोकोक्तियों में अंतर स्पष्ट कीजिए।

2. दी गई पंक्तियों में उनके अलंकार के नाम पर सही निशान लगाइए।

(क) लाली मेरे लाल की जित देखूँ तित लाल

☐ अतिश्योक्ति ☐ अन्योक्ति ☐ अनुप्रास ☐ मानवीकरण

(ख) माटी कहे कुम्हार से तू क्यों रौंदे मोय।

☐ अतिश्योक्ति ☐ उपमा ☐ उत्प्रेक्षा ☐ मानवीकरण

(ग) मैया मैं तो चंद्र खिलौना लैंहो।

☐ रूपक ☐ उत्प्रेक्षा ☐ यमक ☐ श्लेष

3. (क) दिए गए शब्दों के तत्सम शब्द लिखिए।

ओठ	–	....	ऊँट	–	....
नारियल	–	....	पत्थर	–	....
आग	–	....	आँख	–	....

(ख) दिए गए शब्दों के दो-दो अर्थ लिखिए।

हल	–	....	....	उत्तर	–	....	....
आम	–	....	....	जल	–	....	....
पत्र	–	....	....	फल	–	....	....

4. दिए गए वाक्यांशों के लिए एक-एक शब्द लिखिए।

(क) जंगल में लगने वाली आग – ....

(ख) जिसके समान दूसरा न हो – ....

(ग) सब कुछ जानने वाला – ....

(घ) जिस पर विश्वास किया जा सके – ....

(ङ) अतिथि का सत्कार करना – ....

5. दिए गए वाक्यों में विराम-चिह्न लगाकर दोबारा लिखिए।

(क) तुलसीदास जी को गोस्वामी भी कहा जाता है

(ख) अध्यापिका ने कहा अपनी हिंदी की पाठ्यपुस्तक खोलो

(ग) अरे देखो देखो सामने बहुत लोग इकट्ठे हैं

(घ) मधुर मनोहर सरिता और नेहा समूहगान (कोरस) गा रही हैं

6. आप और आपके शिक्षक के बीच होने वाले संवाद को लिखिए।

आप – ....

शिक्षक – ....

आप – ....

शिक्षक – ....

आप – ....

शिक्षक – ....

7. दिए गए गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों का सही उत्तर दीजिए।

कोरोना से बचने के लिए लोग तरह-तरह के उपाय कर रहे हैं। प्रायः देखा गया है कि आयुर्वेदिक चीज़ों का सेवन तथा योग-प्राणायाम इसमें अत्यधिक कारगर साबित हो रहे हैं। इसमें घृतकुमारी, तुलसी, गिलोय, हल्दी, काली मिर्च, दालचीनी, गोखरू आदि का काढ़ा शहद डालकर चीनी रहित पीने से इम्यून सिस्टम या रोग-प्रतिरोधक शक्ति में वृद्धि देखी गई है। इससे कोई दुष्प्रभाव भी नहीं पड़ता है। साथ ही यदि योग और प्राणायाम किया जाए तो सोने पर सुहागा। आयुर्वेदिक पद्धति को अपनाकर ही हमारे ऋषि-मुनियों ने सैकड़ों वर्ष जीवन जिया है। साफ़ एवं शुद्ध भोजन करना, योगासन एवं प्राणायाम करना, लोक सेवा करना हमारी परंपरा रही है।

(क) काढ़ा पीने से क्या होता है?

(i) नुकसान (ii) फायदा

(iii) रोग-प्रतिरोधक क्षमता का घटना (iv) रोग-प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि

(ख) आयुर्वेदिक चीज़ों का–

(i) दुष्प्रभाव पड़ता है (ii) दुष्प्रभाव नहीं पड़ता है

(iii) कोई लाभ नहीं है (iv) इनमें से कुछ भी नहीं

(ग) हमारी परंपरा में क्या नहीं है?

(i) अतिथि सेवा (ii) योगासन एवं प्राणायाम करना

(iii) शुद्ध भोजन (iv) बाहर का भोजन कम-से-कम करना

(घ) गद्यांश का उचित शीर्षक क्या है?

(i) हमारा व्यवहार (ii) हमारा स्वास्थ्य

(iii) हमारा घर (iv) आयुर्वेद की उपयोगिता